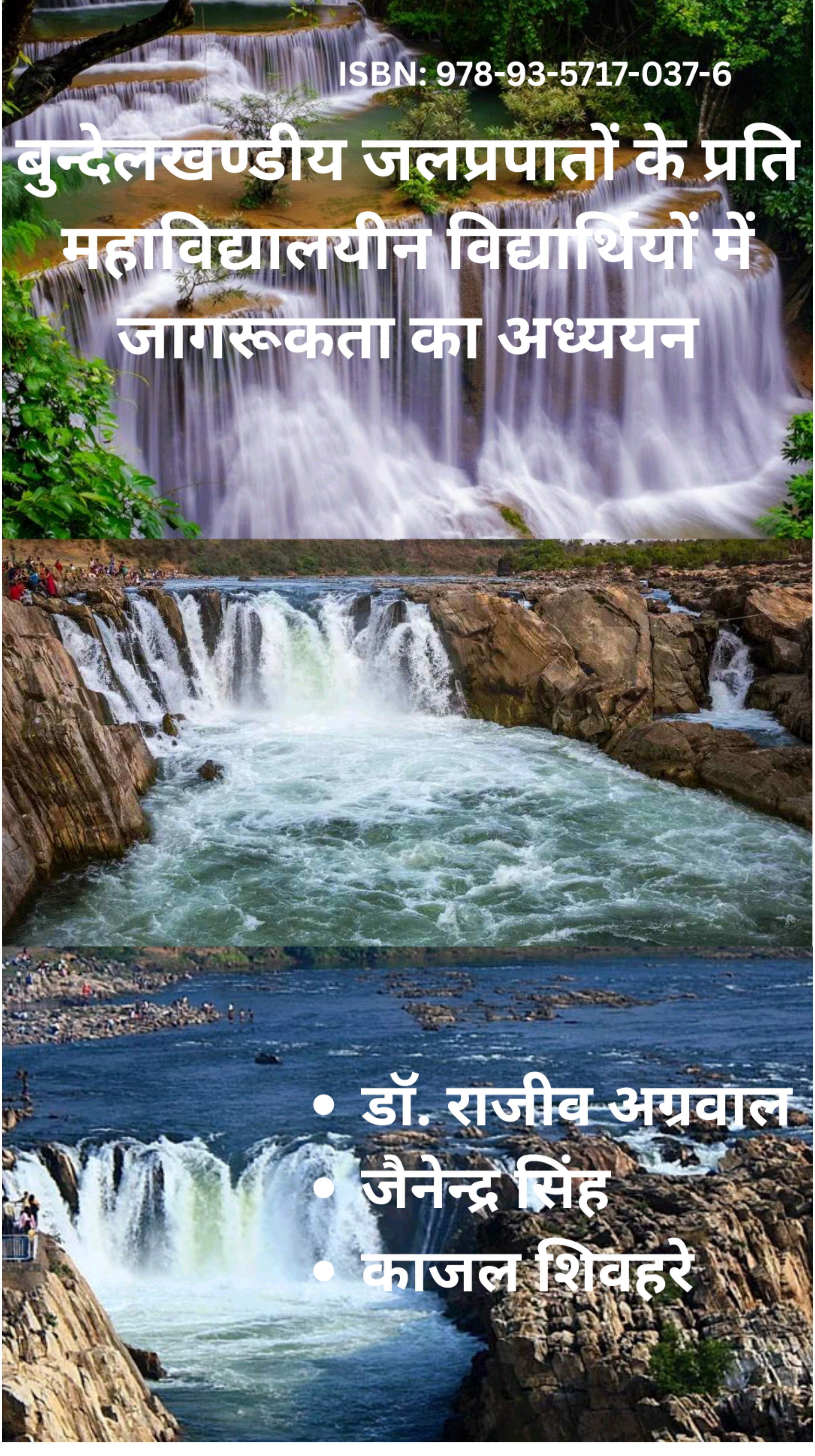


ISBN: 978-93-5717-037-6

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

- डॉ. राजीव अग्रवाल
- जैनेन्द्र सिंह
- काजल शिवहरे

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल
डीन-शिक्षा संकाय
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी

जैनेन्द्र सिंह
B.Sc., M.Ed.

काजल शिवहरे
B.El.Ed.

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल
जैनेन्द्र सिंह
काजल शिवहरे

E-Book
संस्करण: मार्च 2026
मूल्य:- रु.99

ISBN: 978-93-5717-037-6

प्रकाशक:

काजल शिवहरे
ब्रह्म नगर अतर्रा
बांदा- 210201 (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल- 756382676
Email- kajalshivhare27@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा माना जाएगा। वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतों और लिखे गये साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाये रखते हैं।

यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधारा तो हम अपनी भौगोलिक विरासतों को खो देंगे। अतः आवश्यकता है कि हम सभी अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक हों। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुँच चुकी भौगोलिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाये तथा भविष्य के लिये इन्हें संरक्षित किया जाये। यह तभी सम्भव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन है। इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है

प्रथम अध्याय में उच्च शिक्षा की समस्याएँ, अध्ययन के उद्देश्य, चर, परिकल्पनाएँ, शोध परिसीमांकन एवं अध्ययन के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में जागरूकता एवं बुन्देलखण्ड से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय मे बुन्देलखण्ड के तीन जलप्रपातों शबरी जलप्रपात, राघव जलप्रपात तथा बृहस्पति कुण्ड का सचित्र वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि, शोध अभिकल्प, लक्षित प्रतिवर्ष, जनपद एवं संस्थाओं का चयन, शोध उपकरण, परीक्षण का प्रशासन, फलांकन एवं सांख्यिकीय प्रविधियों का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पञ्चम अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं अध्ययन की सीमाएं प्रस्तुत की गयी है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक: 19/03/2026

स्थान : अतर्रा (बांदा)

डॉ राजीव अग्रवाल
जैनेन्द्र सिंह
काजल शिवहरे

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	तालिका सूची	पृष्ठ संख्या

चतुर्थ

पञ्चम

अध्याय	तालिका सूची	पृष्ठ संख्या

अध्याय तालिका सूची पृष्ठ संख्या

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

तृतीय

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

अध्याय	चित्र सूची	पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

1.2 भारत में शिक्षा के स्तर

1.3 भारत में उच्च शिक्षा का विकास

1.4 उच्च शिक्षा की समस्याएँ

1.5 समस्या का प्रादुर्भाव

1.6 समस्या कथन

1.7 अध्ययन का औचित्य

1.8 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.9 अध्ययन के उद्देश्य

1.10 अध्ययन के चर

1.11 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1.12 अध्ययन का परिसीमांकन

1.13 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

इक्कीसवीं शताब्दी के आधुनिक भूमण्डलीय युग में किसी भी राष्ट्र के लिये उसके भौतिक एवं मानव संसाधनों का अत्यन्त महत्व है। वस्तुत: किसी राष्ट्र के भौतिक एवं मानव संसाधन ही उसे अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा करने के लिये सक्षम बनाते हैं। भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित एवं प्रकृतिजन्य होने के कारण आज के युग में मानव संसाधनों के विकास पर अधिक जोर दिया जाने लगा है। निःसन्देह किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने में समर्थ हों। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लांघा है वरन् अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती हैं तथा इन शक्तियों के प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है। यदि इन शक्तियों को प्रस्फुटित होने के पर्याप्त अवसर नहीं प्राप्त होते हैं, तो मानव का विकास अधूरा रह जाता है तथा वह अपनी अन्तर्निहित परन्तु अप्रस्फुटित योग्यताओं का लाभ उठाने से वञ्चित रह जाता है। निःसन्देह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावी विधा है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान, बोध व कौशल में वृद्धि की जाती है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा की यह प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्युपर्यन्त किसी न किसी रूप में एक सतत प्रक्रिया के

रूप में सदैव चलती रहती है। प्रारम्भ में बालक अपने माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्यों तथा पड़ोसियों आदि से अनौपचारिक ढंग से शिक्षा प्राप्त करता है। 5–6 वर्ष की आयु होने पर बालक की शिक्षा व्यवस्था औपचारिक शिक्षण संस्थाओं में सुनियोजित ढंग से प्रारम्भ हो जाती है। विद्यालय में दी जाने वाली औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ बालक परिवार, समाज, धर्म, जनसंचार, खेलकूद आदि अनेक औपचारिकेत्तर माध्यमों से भी कुछ न कुछ सीखता रहता है। औपचारिक शिक्षा की समाप्ति के उपरान्त भी सीखने-सिखाने का क्रम किसी न किसी रूप में अनवरत चलता रहता है।

1.2 भारत में शिक्षा के स्तर

भारत में औपचारिक शिक्षा सर्वाधिक प्रचलित है एवं अधिकांश शिक्षार्थी इसी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। वर्तमान में भारत में औपचारिक शिक्षा के तीन स्तर हैं—

- **प्राथमिक शिक्षा**
- **माध्यमिक शिक्षा**
- **उच्च शिक्षा**

1.2.1 प्राथमिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है। प्राथमिक शब्द का सामान्य अर्थ है 'प्रारम्भिक'। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य मुख्य तथा आधारभूत शिक्षा से है। प्रारम्भिक स्तर पर सम्पन्न होने के कारण प्राथमिक शिक्षा, सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। इसे मुख्य शिक्षा इसलिये कहते हैं क्योंकि यह आगे की शिक्षा की नींव होती है। यदि नींव मजबूत होती है तो बच्चों की आगे की शिक्षा सुचारु रूप से चलती है।

प्राथमिक शिक्षा साधारणतया: 10–14 वर्ष तक की आयु पूरी होने तक चलती है। प्राथमिक शिक्षा को तीन भागों में विभाजित किया गया है—

(i) पूर्व प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 1 से पूर्व यथा (नर्सरी एवं प्ले ग्रुप)

(ii) प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 1 से 5

(iii) उच्च प्राथमिक शिक्षा: कक्षा 6 से 8

1.2.2 माध्यमिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के दूसरे स्तर को माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है। माध्यमिक शब्द का अर्थ—मध्य की, माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। माध्यमिक शिक्षा ऐसी शिक्षा है जो किशोर बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये दिशा प्रदान करती है। माध्यमिक शिक्षा ही उच्च शिक्षा का आधार है।

भारत में कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा कहते हैं जो प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त 16–18 वर्ष की आयु तक चलती है।

1.2.3 उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा का अर्थ है—सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष तथा सूक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों, लिबरल आर्ट कॉलेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है जो प्राय: ऐच्छिक होता है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परास्नातक तथा व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं। भारत में उच्च शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 12 के उपरान्त दी जाने वाली शिक्षा से है। यह शिक्षा महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर दी जाती है।

1.3 भारत में उच्च शिक्षा का विकास

उच्च शिक्षा के विकास से तात्पर्य समय-समय पर इसमें होने वाली मात्रात्मक प्रगति एवं गुणात्मक उन्नयन से है। भारतीय शिक्षा के इतिहास का अध्ययन तीन कालों के अन्तर्गत किया जाता है—प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल। अध्ययन की दृष्टि से आधुनिक काल को भी प्रायः 2 उपकालों में विभाजित किया जाता है—ब्रिटिश शासन काल और स्वातन्त्र्योत्तर काल।

1.3.1 प्राचीन काल में उच्च शिक्षा का विकास

वैदिक काल में उच्च शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल में होती थी। 8 से 12 वर्ष की आयु पर बच्चों का गुरुकुल में प्रवेश होता था। गुरुकुल में प्रवेश के समय बच्चों का **उपनयन संस्कार** होता था, जिसके बाद उनकी शिक्षा प्रारम्भ होती थी। वैदिक कालीन उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—सामान्य और विशिष्ट। इस काल में उच्च स्तर पर संस्कृत भाषा, व्याकरण, धर्म एवं नीति शास्त्र की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती थी। इसके अतिरिक्त उन्हें नित्य व्यायाम, गुरुकुल की व्यवस्था और गुरु सेवा करनी होती थी। इसे सामान्य शिक्षा की संज्ञा दी जाती थी। प्रारम्भिक वैदिक काल में वैदिक साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों, कर्मकाण्ड, ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्विज्ञान, सैनिक शिक्षा, कृषि, पशुपालन, कला-कौशल, राजनीतिशास्त्र, भूगर्भशास्त्र और प्राणीशास्त्र की शिक्षा ऐच्छिक थी। उत्तर वैदिक काल में उच्च शिक्षा की इस पाठ्यचर्या में अनेक अन्य विषय सम्मिलित किये गये जैसे—इतिहास, पुराण, नक्षत्र विद्या, न्यायशास्त्र, अर्थशास्त्र, देव विद्या, ब्रह्म विद्या और भूत विद्या। इसे विशेष शिक्षा की संज्ञा दी जा सकती है। इस काल में तीर्थ स्थान धर्म प्रचार के केन्द्र होने के साथ-साथ उच्च शिक्षा के केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। बड़े-बड़े नगरों में तक्षशिला, पाटलिपुत्र, मिथिला, कन्नौज, कल्याणी, प्रयाग, काशी, अयोध्या, उज्जैन, नासिक, कर्नाटक और कांची उस समय के मुख्य उच्च शिक्षा के केन्द्र थे।

बौद्ध काल में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा होती थी और योग्य छात्रों को उच्च शिक्षा में प्रवेश दिया जाता था। यह शिक्षा सामान्यतः 12 वर्ष की आयु पर शुरू होती थी और 20–25 वर्ष की आयु तक चलती थी। इस अवधि में छात्रों को सर्वप्रथम व्याकरण, धर्म,

ज्योतिष, आयुर्विज्ञान और दर्शन का सामान्य ज्ञान कराया जाता था और उसके बाद विशिष्ट शिक्षा शुरू की जाती थी। विशिष्ट शिक्षा की पाठ्यचर्या में पाली, प्राकृत और संस्कृत भाषा एवं इन भाषाओं के व्याकरण व साहित्य, खगोलशास्त्र, नक्षत्रशास्त्र, न्यायशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, कला (चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत), कौशल (कताई, बुनाई रंगाई आदि), व्यवसाय (कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य आदि), भवन निर्माण विज्ञान, आयुर्विज्ञान, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, वैदिक धर्म, ईश्वर शास्त्र, तर्क, दर्शन और ज्योतिष इन सभी विषयों एवं क्रियाओं को स्थान दिया गया था। बौद्ध काल में तक्षशिला, नालन्दा, वल्लभी और विक्रमशिला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के विश्वविख्यात केन्द्र थे।

1.3.2 मध्यकाल में उच्च शिक्षा का विकास

मध्यकाल में मुसलमान शासकों के शासनकाल में एक नयी शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ, जिसे मुस्लिम शिक्षा प्रणाली कहते हैं। मध्यकाल में उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी। इस शिक्षा प्रणाली में उच्च स्तर की शिक्षा का पाठ्यक्रम अधिक विस्तृत था। इस स्तर की पाठ्यचर्या को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—लौकिक और धार्मिक। लौकिक पाठ्यचर्या में अरबी तथा फारसी भाषाएँ एवं उनके साहित्य, अंकगणित, ज्यामिति, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, नीति शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, इस्लामी कानून, यूनानी चिकित्सा और विभिन्न कला-कौशलों एवं व्यवसायों की शिक्षा को स्थान दिया गया था। धार्मिक पाठ्यचर्या में कुरान शरीफ, इस्लामी साहित्य, इस्लामी इतिहास, सूफी साहित्य और शरीयत को स्थान दिया गया था। मध्यकाल में दिल्ली, आगरा, फिरोजाबाद, बदायूँ, फतेहपुर सीकरी, जौनपुर, बीदर एवं मालवा आदि नगरों में उच्च शिक्षा के प्रमुख केन्द्रों का विकास हुआ।

1.3.3 आधुनिक काल में उच्च शिक्षा का विकास

अध्ययन की दृष्टि से आधुनिक काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है—

(i) ब्रिटिश कालीन शासन में उच्च शिक्षा का विकास

(ii) स्वातन्त्र्योत्तर काल में उच्च शिक्षा का विकास

1.3.3.1 ब्रिटिश कालीन शासन में उच्च शिक्षा का विकास

ब्रिटिश काल में ईसाई मिशनरियों ने सर्वप्रथम शिक्षा के विकास का प्रयत्न किया परन्तु उनके द्वारा ईसाई धर्म की शिक्षा पर अधिक बल दिया गया। बाद में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अपने व्यापारिक और शासन दोनों क्षेत्रों में कनिष्ठ पदों पर कार्य करने के लिये अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयों की आवश्यकता हुई, जिस कारण उन्होंने अपनी शिक्षा नीति में परिवर्तन किया और उच्च शिक्षा की संस्थाएँ खोलना शुरू की। कम्पनी ने 1781 में कलकत्ता मदरसा, 1791 में बनारस संस्कृत कॉलेज, 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। 1854 में आये वुड के घोषणा पत्र में घोषणा की गयी कि भारत में लन्दन विश्वविद्यालय के आदर्श पर कोलकाता और मुम्बई में विश्वविद्यालय स्थापित किये जायेंगे और इसके बाद आवश्यकतानुसार मद्रास और अन्य स्थानों पर भी विश्वविद्यालय स्थापित किये जायेंगे। इन विश्वविद्यालयों में सीनेट का गठन किया जायेगा और योग्य एवं अनुभवी कुलपति एवं प्राध्यापक नियुक्त किये जायेंगे। इन विश्वविद्यालयों में प्राच्य एवं पाश्चात्य भाषा एवं साहित्य, विधि तथा इन्जीनियरिंग की उच्च शिक्षा की विशेष व्यवस्था की जायेगी। साथ ही महाविद्यालयों को इनसे सम्बद्ध किया जायेगा। ये विश्वविद्यालय अपने क्षेत्र के महाविद्यालयों को सम्बद्धता प्रदान करेंगे, उन पर नियन्त्रण रखेंगे, उनके छात्रों की परीक्षा लेंगे और उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रदान करेंगे।

1857 की क्रान्ति के बाद भारत का शासन सीधे ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ गया और शिक्षा सम्बन्धी सारे निर्णय ब्रिटिश सरकार द्वारा लिये जाने लगे। 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) का गठन हुआ। इस आयोग ने सरकार को उच्च शिक्षा का भार भारतीय जनता पर ही छोड़ने का सुझाव दिया। आयोग ने राजकीय महाविद्यालय केवल उन्हीं स्थानों पर खोले जाने का सुझाव दिया जहाँ जनता इन्हें खोलने में असमर्थ हो और जहाँ इनकी माँग हो। आयोग ने उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या को व्यापक बनाने का भी सुझाव दिया जिससे छात्र अपनी रूचि के विषयों का चुनाव कर सकें। 1904 में लॉर्ड कर्जन ने शिक्षा नीति की घोषणा की। उन्होंने उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में नये विश्वविद्यालयों को खोलने तथा उनके स्तर को ऊँचा उठाने का सुझाव दिया। इसी समय राष्ट्रीय नेताओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू किया एवं शिक्षा के क्षेत्र में कई संस्थाओं की स्थापना की जिसमें दयानन्द सरस्वती द्वारा 'दयानन्द वैदिक कॉलेज' एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा

शान्तिनिकेतन में 'ब्रह्मचर्य आश्रम' (जिसे आज 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' के रूप में जाना जाता है) उल्लेखनीय है। 1944 में ब्रिटिश सरकार ने पहली बार एक दीर्घकालीन (40 वर्ष) शिक्षा योजना तैयार की। इसे सार्जेण्ट योजना 1944 के नाम से जाना जाता है। इस आयोग ने उच्च शिक्षा में बड़ा परिवर्तन किया और इण्टरमीडिएट की कक्षाएँ विश्वविद्यालयों से हटा करके माध्यमिक शिक्षा से जोड़ दी और स्नातक के पाठ्यक्रम को तीन वर्षीय कर दिया। निर्धन छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की गयी तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गयी।

1.3.3.2 स्वातन्त्र्योत्तर काल में उच्च शिक्षा का विकास

15 अगस्त, 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ। हमने अपने राष्ट्र के पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में कुछ अपने ढंग से सोचना शुरू किया। हर क्षेत्र में परिवर्तन और सुधार की प्रक्रिया आरम्भ हुई, शिक्षा के क्षेत्र में भी। सबसे पहले हमारा ध्यान गया तत्कालीन उच्च शिक्षा पर। उस समय यह सैद्धान्तिक अधिक और व्यावहारिक कम थी। इसका स्तर भी अन्य देशों की तुलना में नीचा था। अतः भारत में उच्च शिक्षा के विकास हेतु भारत सरकार ने 4 नवम्बर, 1948 को डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की नियुक्ति की। यह स्वतन्त्र भारत का सबसे पहला शिक्षा आयोग था। इस आयोग ने उच्च शिक्षा के विकास हेतु विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किये। आयोग के सुझावों का स्वीकार करते हुए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य किये गये—

- सरकार ने 1973 में विश्वविद्यालय अनुदान समिति को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में बदल दिया और 1956 में एक कानून द्वारा इसे स्वतन्त्र संस्था का दर्जा प्रदान किया। यह आयोग देश की उच्च शिक्षा की व्यवस्था, उसके स्तर को बनाये रखने, उच्च शिक्षा में समन्वय स्थापित करने और सरकार को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभा रहा है।
- सरकार ने 1954 में केन्द्र में 'ग्रामीण उच्च शिक्षा समिति' की स्थापना की और इसे ग्रामीण शिक्षा का उत्तरदायित्व सौंपा।

- इस आयोग के सुझाव पर देश में क्षेत्र विशेष की आवश्यकतानुसार विश्वविद्यालयों की स्थापना में तेजी आयी।
- इस आयोग के सुझाव पर कृषि, वाणिज्य, चिकित्सा, विधि, शिक्षक-प्रशिक्षण और इन्जीनियरिंग के स्वतन्त्र महाविद्यालयों की स्थापना हुई।
- कुछ विश्वविद्यालयों में 3 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम शुरू किये गये, अब तो ये प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में लागू हो गये हैं।
- कुछ विषयों में उच्च शिक्षा की व्यवस्था प्रादेशिक भाषाओं में शुरू की गयी। साथ ही पारिभाषिक शब्दकोशों का निर्माण कार्य तेजी से शुरू हुआ।
- विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में 1948 में राष्ट्रीय कैडेट कोर और 1969 में राष्ट्रीय सेवा योजना की शुरुआत की गयी।
- छात्र कल्याण योजना चालू हुई—विश्वविद्यालयों में छात्र कल्याण सलाहकार बोर्ड की स्थापना हुई, छात्र और शिक्षकों की नियुक्ति हुई, विद्यालयों और महाविद्यालयों में उचित मूल्यों पर मध्यान्ह भोजन एवं जलपान की व्यवस्था हुई और छात्रावासों का निर्माण किया गया।

इस आयोग के सुझावों के द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कुछ सुधार तो हुआ परन्तु वह सब हाथ नहीं लगा जिसे हम प्राप्त करना चाहते थे। अतः शिक्षा के पुनर्गठन पर सोचने के लिये भारत सरकार ने 14 जुलाई, 1964 को डॉ० दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का गठन किया।

इस आयोग ने सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के क्षेत्र में सुझाव प्रस्तुत किये परन्तु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत सुझावों का प्रभाव यह हुआ कि उच्च शिक्षा में डिग्री कोर्स को 3 वर्ष कर दिया गया। उच्च शिक्षा और व्यावसायिक, तकनीकी एवं प्रबन्ध शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ उनके उन्नयन के लिये ठोस कदम उठाये गये। साथ ही शिक्षक-शिक्षा में सुधार होने शुरू हुए और प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रमों को व्यापक बनाया गया। इस आयोग ने शैक्षिक अवसरों की समानता के लिये जो सुझाव दिये उनका अनुपालन भी शुरू हुआ। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने भारतीय शिक्षा के समस्त पहलुओं पर विस्तार से विचार किया और उनके सम्बन्ध में ठोस सुझाव दिये।

1.4 उच्च शिक्षा की समस्याएँ

भारत में उच्च शिक्षा की समस्याओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

- उच्च शिक्षा में **व्यावहारिकता का अभाव** उच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- वैसे तो हमारे देश में उच्च शिक्षा के बहुत संस्थान हैं किन्तु ऐसे संस्थानों की कमी है जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। अतः **शिक्षा की गुणवत्ता में कमी होना** उच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- वर्तमान समय में हमारे देश में उच्च शिक्षा के संस्थान **राजनीतिक केन्द्र** बनते हुए दिखायी पड़ते हैं जो उच्च शिक्षा के लिये एक प्रमुख समस्या है।
- हमारे देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बहुत अधिक संख्या में लोग बेरोजगार घूम रहे हैं। अतः **रोजगार देने में सफल न हो पाना** उच्च शिक्षा की एक प्रमुख समस्या है।
- देश के अधिकतर उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के पद लम्बे समय तक रिक्त रहते हैं। अतः **शिक्षकों की कमी** उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी समस्या है।
- **क्षेत्रीय भौगोलिक धरोहरों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित न किया जाना:** भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली आजादी के 75 वर्षों के पश्चात भी मैकाले द्वारा निर्मित नीतियों से ग्रस्त है। मैकाले ने अपने विवरण पत्र से अंग्रेजी द्वारा पाश्चात्य सभ्यता को इस देश पर थोपने का प्रयास किया, जिससे हम अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को तिरस्कृत दृष्टि से देखें और हमारे अन्दर हीन भावना व्याप्त हो। मैकाले ने भारतीय संस्कृति और धर्म की महानता व सहिष्णुता का अपमान किया।

आज की भारतीय शिक्षा की नींव मैकाले के विवरण पत्र (1835) के प्रभाव में पड़ी तथा भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल और महाविद्यालय खुलने शुरू हो गये। यह शिक्षा प्रणाली हमारे देश की मूल प्रणाली बन गयी। आज भी हमारी शिक्षा इसी माध्यम पर आधारित है। मैकाले की नीति का भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के विकास पर भी बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति को प्राथमिकता देने वाली नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में लागू हो गयी है परन्तु अभी भी इसका पूर्णरूपेण क्रियान्वयन होना शेष है। अभी भी शिक्षा के किसी भी स्तर में क्षेत्रीय भौगोलिक धरोहरों का समावेश किया जाना शेष है।

1.5 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसन्धान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू रूप से संचालन में कोई बाधा है तथा उस बाधा को दूर किया जा सकता है। वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को अविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है।

किसी भी राष्ट्र की भौगोलिक समृद्धि उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होती है। देश भौगोलिक रूप से जितना समृद्ध होगा, वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा माना जायेगा। भारत में कई ऐसे भौगोलिक स्थल हैं जो विश्व स्तर पर हमारे देश का गौरव बढ़ाते हैं किन्तु समय के साथ मनमाने ढंग से बिना परवाह किये हमने इन धरोहरों को नुकसान पहुँचाया है।

यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधारा तो हम अपनी भौगोलिक विरासतों को खो देंगे। अतः आवश्यकता है कि हम सभी अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक हों। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुँच चुकी भौगोलिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाये तथा भविष्य के लिये इन्हें संरक्षित किया जाये। यह तभी सम्भव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया। इस समस्या के अध्ययन से सिर्फ विद्यार्थियों को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को लाभ होगा।

1.6 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है—

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन।

1.7 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के विषय में विचार कर लेना चाहिए। शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है। इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण किया जाता है। शोध की निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण को क्रमबद्ध रूप से एवं सोद्देश्य सुनियोजित किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा रहा है। ये जलप्रपात हमारी भौगोलिक एवं प्राकृतिक विरासत हैं। हमारी भौगोलिक विरासतें हमें हमारे अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बताती हैं। इन जलप्रपातों को देखने के लिये दूर-दूर से पर्यटक यहाँ पर आते हैं। वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ी को इन भौगोलिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है। इन स्थलों की दर्शनीयता तथा प्राकृतिक सौन्दर्य व्यक्ति को बार-बार इन स्थलों पर आने के लिये प्रेरित करता है। लोगों के मन में घाटियों एवं प्राकृतिक झरनों को देखने की जिज्ञासा रहती है। जब विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों तथा समुदायों के लोग इन स्थानों पर आते हैं तो उनका स्थानीय जनता से सम्पर्क होता है। वे लोग उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन तथा अन्य संसाधन उपलब्ध कराते हैं। उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने और परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है किन्तु आज हमारी भौगोलिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण न मिल पाने एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। इसके आसपास सफाई न होने से लोगों का रुझान और कम होता जा रहा है। इस समय कई जलप्रपात एवं नदियाँ प्रदूषण एवं अतिक्रमण का शिकार हो गयी हैं। नदियों के आसपास बस्तियाँ होने से नदियों का अस्तित्व खतरे में आ गया है। इस कारण से जलप्रपात भी समाप्त होते जा रहे हैं। जब तक सभी लोग अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति

जागरुक नहीं होंगे तब तक इन स्थलों को संरक्षित रख पाना मुश्किल होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

1.8 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिन्तन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बाहर निकल कर स्पष्ट करना है। प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है—

1.8.1 बुन्देलखण्ड

विकीपीडिया के अनुसार—बुन्देलखण्ड से तात्पर्य उस क्षेत्र से है जो उत्तर में यमुना, दक्षिण में विंध्य पर्वतों की श्रेणियों, उत्तर-पश्चिम में चम्बल और दक्षिण-पूर्व में पन्ना-अजयगढ़ श्रेणियों से घिरा हुआ है। इसमें उत्तर प्रदेश के जालौन, झाँसी, ललितपुर, चित्रकूट, हमीरपुर, बाँदा और महोबा तथा मध्य-प्रदेश के सागर, दमोह, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, दतिया के अलावा भिण्ड जिले की लहार और ग्वालियर जिले की माण्डेर तहसीलें तथा रायसेन और विदिशा जिले का कुछ भाग भी शामिल है। (मानचित्र परिशिष्ट—I)

क्रियात्मक परिभाषा——प्रस्तुत अध्ययन में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के केवल पन्ना, रीवा एवं सतना जनपद के कतिपय स्थलों का चयन किया गया है। (मानचित्र परिशिष्ट—I)

1.8.2 जलप्रपात

जलप्रपात से तात्पर्य पहाड़ या किसी ऊँचे स्थान से गिरती हुई जल की विशाल धारा से है अर्थात नदी आदि के जल का ऊँचे पहाड़ या चट्टान से नीचे स्थान पर गिरना।

क्रियात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में जलप्रपातों से तात्पर्य शबरी जलप्रपात (सतना), राघव जलप्रपात (रीवा) तथा बृहस्पति कुण्ड (पन्ना) से है।

1.8.3 महाविद्यालयीन विद्यार्थी

कक्षा 12 तक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात जो शिक्षा ग्रहण की जाती है उसे महाविद्यालयीन शिक्षा या उच्च शिक्षा कहते हैं।

शब्दकोश के अनुसार—विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है। विद्यार्थी दो शब्दों से बना होता है– "विद्या" + "अर्थी" जिसका अर्थ होता है 'विद्या चाहने वाला'। विद्यार्थी किसी भी आयुवर्ग का हो सकता है बालक, किशोर, युवा या वयस्क। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होना चाहिए।

क्रियात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से तात्पर्य स्नातक (B.A., B.Sc.) परास्नातक (M.A., M.Sc., M.Com.) तथा शिक्षक-प्रशिक्षण कोर्स (B.Ed., D.El.Ed.) में अध्ययनरत संस्थागत विद्यार्थियों से है।

1.8.4 जागरूकता

विकीपीडिया के अनुसार—जागरूकता किसी चीज के प्रति सचेत होने की अवस्था है। अधिक विशेष रूप से, यह सीधे तौर पर जानने और समझने, महसूस करने या घटनाओं के बारे में जानने की क्षमता है।

क्रियात्मक परिभाषा—प्रस्तुत लघु शोध में जागरूकता से तात्पर्य बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जानकारी से है।

1.8.5 अध्ययन

अध्ययन से तात्पर्य किसी विषय के सभी अंगों या गूढ़ तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उसे देखने, समझने तथा पढ़ने से है।

1.9 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों का गहन अध्ययन करना।
- चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।
- चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं प्रशिक्षण स्तरानुसार अध्ययन करना।
- बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना।
- चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों से सम्बन्धित e-brochure तैयार करना।
- चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता के संवर्धन के सम्बन्ध में व्यावहारिक कार्य करना।

1.10 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के सन्दर्भ में निम्नलिखित चरों को प्रमुख रूप से लिया गया है—

मापदण्ड चर:

- बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता।

वर्गीकरण चर:

- **लिंग**– छात्र-छात्राएँ
- **विद्यार्थी स्तर**– प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित

1.11 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं—

I. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

II. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

III. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

IV. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

V. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

VI. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.12 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसन्धान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना होता है। कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिये किसी विशेष समस्याग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान पर गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरूप साधारणतया अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए उसका सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चहारदीवारी होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है—

- प्रस्तुत अध्ययन बुन्देलखण्ड क्षेत्र के निम्न जलप्रपातों के अध्ययन तक सीमित है—

  I- शबरी जलप्रपात: सतना

  II- राघव जलप्रपात: रीवा

  III- बृहस्पति कुण्ड: पन्ना

- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा नगर के संस्थागत महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की चयनित जलप्रपातों के प्रति जागरूकता के अध्ययन तक सीमित है।

- प्रस्तुत अध्ययन चयनित विद्यार्थियों के लिंग एवं प्रशिक्षण स्तरानुसार तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्मार्टफोन प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

1.13 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

भारत कलात्मक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक रूप से समृद्ध देश है। हमारी कला एवं संस्कृति की आधारशिला हमारे देश की भौगोलिकता है। इस भौगोलिकता का कला एवं संस्कृति की दृष्टि से तो महत्व है ही साथ ही इसका आर्थिक महत्व भी है। हमारी एक बहुत बड़ी समस्या अपनी भौगोलिक विरासतों (जलप्रपातों) को सुरक्षित न रख पाना है। हमारे देश में ऐसे अनगिनत प्राकृतिक स्थल हैं जिनकी देखभाल ठीक ढंग से नहीं हो रही है। इनमें से कुछ तो इतनी बुरी तरह उपेक्षित हैं कि अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो वह बहुत ही जल्द विलुप्त हो जायेंगे। सरकारी विभाग अपनी सीमाओं और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं स्थलों पर ध्यान देते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं परन्तु इतना काफी नहीं है। देश की प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं वरन् यह देश के सभी लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब सभी लोग अपनी भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरूक होंगे। अतः यह शोध कार्य इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 जागरूकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन

2.3 बुन्देलखण्ड से सम्बन्धित शोध अध्ययन

2.4 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

2.5 समीक्षात्मक निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसन्धान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित शोधों एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या का चयन, परिकल्पना निर्माण व अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार—"मान्यता-प्राप्त अधिकारियों और पिछले शोध के लेखन का सारांश इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से ज्ञात, अज्ञात और अनुपयोगी से परिचित है।"

"A summary of the writings of recognized authorities and of previous research provides evidence that the researcher is familiar with what is already known and what is still unknown and untested."

—**John W. Best**

अत: उपरोक्त परिभाषा के आधार पर सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से होता है, जो उस शोध के लिये आधारशिला प्रदान कर दिशा प्रदान करता है।

2.1.1 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य

साहित्य सर्वेक्षण का अनुसन्धान के विषय में वर्णन करते हुए **गुड, वार तथा स्केट्स** ने निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य बताये हैं—

- यह अनुसन्धान के लिये सिद्धान्त, विचार, व्याख्याएँ तथा परिकल्पनाएँ प्रदान करता है जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते हैं।
- यह अनुसन्धान हेतु लिये गये क्षेत्र में कार्य कितना और किस प्रकार हो चुका है, इसकी जानकारी देता है।
- यह परिकल्पना के लिये साधन प्रदान करता है। शोधकर्ता प्राप्त अध्ययनों के आधार पर शोध परिकल्पना बना सकता है।
- चयनित समस्या के लिये किस विधि तथा प्रक्रिया का प्रयोग उपयुक्त होगा? कौन से उपकरण लाना उचित होगा तथा कौन सी सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा? इन सबकी जानकारी देता है।
- यह परिणामों के विश्लेषण में सहायता करता है तथा उपयोग, निष्कर्षों तथा तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है अर्थात् सम्बन्धित अध्ययनों से निकाले गये निष्कर्षों की तुलना की जा सकती है।
- समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएँ, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

2.1.2 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

- प्रत्येक अनुसन्धानकर्ता के लिये यह आवश्यक है कि वह दूसरों द्वारा किये गये शोधों के आधार पर अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली-भाँति अवगत हो। अतः इस दृष्टि से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक है।
- शोधकर्ता सम्बन्धित साहित्य से अपनी रूचि के अनुरूप शोधकार्य का क्षेत्र चुनता है तथा इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्ता को एक दिशा प्रदान करता है।
- अध्ययनकर्ता साहित्य से शोध की समस्या का चयन करता है तथा साहित्य के पुनर्निरीक्षण के आधार पर अपनी परिकल्पनाएँ बनाता है तथा अनुसन्धान के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद-विवाद किया जा सकता है।

- यह समस्या समाधान हेतु अनुसन्धान की समुचित विधि का सुझाव देता है।
- तुलनात्मक आँकड़ों को प्राप्त करने एवं विश्लेषण करने में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य समस्या के सीमांकन में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य का गम्भीर अध्ययन अनुसन्धानकर्ता के ज्ञानकोष की वृद्धि करता है।

2.1.3 सम्बन्धित साहित्य के स्रोत

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत से तात्पर्य अनुसन्धान विषय में किये गये पूर्व अध्ययनों से होता है तथा इसके लिये शोधकर्ता को अध्ययन सामग्री की आवश्यकता होती है। यह अध्ययन सामग्री शोधकर्ता को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होती है। स्रोत लिखित एवं संकलित हो सकते हैं, इससे शोधकर्ता को उस क्षेत्र में हुए कार्यों के बारे में जानकारी मिलती है, उसकी सूझ एवं अन्तर्दृष्टि का विकास होता है।

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत दो प्रकार के होते हैं—

1. प्रत्यक्ष स्रोत
2. अप्रत्यक्ष स्रोत

1) **प्रत्यक्ष स्रोत:** शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा साहित्य के रूप में सूचना के प्रत्यक्ष स्रोत इस प्रकार के प्राप्त होते हैं—

    - **पत्रिकाओं में उपलब्ध सामयिक साहित्य**—शोध से सम्बन्धित जो कार्य हुए हैं उनकी साहित्य पत्रिकाएँ आदि हो सकती हैं, इनका साहित्य नवीन घटनाओं से सम्बन्धित होता है।
    - **शोध प्रबन्ध**—विषय से सम्बन्धित शोध मिल सकते हैं। शोध वे ही नहीं होते लेकिन उनकी रूपरेखा मिल जाती है।
    - **एक ही विषय पर निबन्ध पुस्तिकाएँ, वार्षिक पुस्तकें तथा बुलेटिन**—शोध चाहे दार्शनिक हो या सर्वे का दोनों में ही सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़े बिना शोध कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

2) **अप्रत्यक्ष स्रोत:** सूचना के अप्रत्यक्ष स्रोत अथवा शिक्षा साहित्य के लिये निर्देशिका निम्न रूपों में प्राप्त होती है—

- शिक्षा के विश्व ज्ञान कोष।
- शिक्षा सूची पत्र।
- शिक्षा सार।
- पत्रिकाएँ एवं सहायक पुस्तकें।
- मोनोग्राफ, बुलेटिन एवं वार्षिक पुस्तकें।

2.2 जागरूकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन

प्रस्तुत लघु शोध में जागरूकता से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया जिनके द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

1. **विजय बहादुर सिंह (1998),** ने *प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक जागरूकता का अध्ययन* किया। यह अध्ययन जौनपुर जनपद में स्थित प्राथमिक विद्यालयों के कुल 160 शिक्षक/शिक्षिकाओं पर किया गया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक जागरूकता में सार्थक अन्तर है तथा नव-नियुक्त प्राथमिक शिक्षक, पुराने प्राथमिक शिक्षकों की तुलना में अधिक जागरूक हैं। नये शिक्षक, छात्रों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हैं तथा नियमित रूप से कक्षा-शिक्षण करते हैं।

2. **जंगजीत कुमार (2008),** ने *कॉलेज के विद्यार्थियों में वातावरण के प्रति जागरुकता, निजत्व एवं वैयक्तिक स्थान का मनोवैज्ञानिक अध्ययन* किया। यह अध्ययन फैजाबाद मण्डल के माध्यमिक एवं स्नातक स्तर के 600 विद्यार्थियों पर किया गया। न्यादर्श के रूप में 300 बालक एवं 300

बालिकाओं का चयन किया गया जिसमें 150 बालक तथा 150 बालिकायें नगरीय एवं 150 बालक एवं 150 बालिकायें ग्रामीण विद्यालयों से लिये गये। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि बालकों में पर्यावरणीय जागरुकता, बालिकाओं की तुलना में अधिक है तथा ग्रामीण क्षेत्र में पर्यावरणीय जागरुकता, शहरी क्षेत्र से अधिक है। साथ ही स्नातक स्तर के विद्यार्थी, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण के प्रति अधिक जागरुक हैं।

3. **अदिति गौतम (2015),** ने *भूमण्डलीकरण के प्रति जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में अध्यापक प्रशिक्षकों की जानकारी एवं शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन* किया। यह अध्ययन राजस्थान के 5 सम्भाग– पूर्व से जयपुर, पश्चिम से जोधपुर, उत्तर से बीकानेर, दक्षिण से उदयपुर तथा मध्य से अजमेर सम्भाग मुख्यालयों पर आधारित है। इस शोध में न्यादर्श के रूप में 320 अध्यापक प्रशिक्षकों को लिया गया जिसमें से 160 ग्रामीण और 160 शहरी अध्यापक प्रशिक्षक हैं। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि भूमण्डलीकरण के प्रति जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में महिला एवं पुरुष अध्यापक प्रशिक्षकों की शिक्षण प्रक्रिया के आयाम, शिक्षण प्रक्रिया में विधि-प्रविधि, शिक्षण प्रक्रिया में तकनीकी, नवाचार, शिक्षण सूत्र, शिक्षण सिद्धान्त तथा नियम में अन्तर पाया गया। पुरुष अध्यापक प्रशिक्षकों में शिक्षण प्रक्रिया के आयामों के अन्तर्सम्बन्धों को समझने में कमी देखी गयी। उन्हें आयामों की जानकारी तो है परन्तु उसे शिक्षा में प्रयोग किस रूप में किया जाये की जानकारी एवं प्रशिक्षण प्राप्त नहीं है।

4. **मातादीन (2018),** ने *उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में बाँदा जनपद की भौगोलिक जागरूकता का अध्ययन* किया। यह अध्ययन बाँदा जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के यू० पी० बोर्ड के विद्यार्थियों पर आधारित है। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में हिन्दी माध्यम के 100 छात्रों तथा 100 छात्राओं का चयन किया गया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि बाँदा जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की भौगोलिक जागरूकता में सार्थक अन्तर है। उन्होंने पाया कि छात्राओं में बाँदा जनपद के प्रति भौगोलिक जागरूकता छात्रों की तुलना में

अधिक है अर्थात छात्राएँ, छात्रों की तुलना में अधिक जागरूक हैं जिसका कारण यह है कि भारतीय परम्परा के अनुसार प्रारम्भ से ही लड़कियों को शिक्षा के साथ गृहकार्य में भी लगा दिया जाता है और वे स्वच्छता आदि का भी ध्यान रखती हैं जिससे वे भौगोलिक स्थानों के महत्व को जानती हैं। यह छात्राओं के अधिक जागरूक होने का एक कारण है।

5. **अभिलाषा धर (2019),** ने *उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में योग जागरूकता का अध्ययन: बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में* किया। यह अध्ययन बाँदा जनपद के अतर्रा क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों पर आधारित है। इस शोध में न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों का चयन छात्र-छात्राओं के आधार पर तथा हिन्दी माध्यम-अंग्रेजी माध्यम के आधार पर किया गया। न्यादर्श रूप में 57 छात्र तथा 43 छात्राएँ एवं 57 हिन्दी माध्यम तथा 43 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों को लिया गया। इस अध्ययन के आधार पर उन्होंने निम्नलिखित सुझाव दिये—

- विद्यार्थियों को विभिन्न आसनों तथा उनके लाभ व महत्व के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।
- विद्यालयों में समय-समय पर विभिन्न योग जागरूकता कार्यक्रम कराने चाहिए।
- प्रत्येक विद्यालय में योगासन कक्ष हो तथा एक कुशल योग शिक्षक के सानिध्य में बच्चों को योग कराया जाना चाहिए।
- शिक्षण कार्य करते समय शिक्षकों का तनावमुक्त व ऊर्जावान बने रहना आवश्यक है, इसके लिये शिक्षकों को योग को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है।
- शिक्षा सम्बन्धी बनायी जाने वाली नीतियों में योग-प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्थान देना चाहिए।

2.3 बुन्देलखण्ड से सम्बन्धित शोध अध्ययन

प्रस्तुत लघु शोध में बुन्देलखण्ड से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया जिनके द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

1. **प्रमोद कुमार शिवहरे (2002),** ने *बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं की राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन* किया। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में महाविद्यालय स्तर के 400 छात्र-छात्राओं को शामिल किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में स्नातक विद्यार्थियों की तुलना में राजनैतिक चेतना अधिक होती है। अतः बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की राजनीतिक चेतना, स्नातक विद्यार्थियों से अधिक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उन्होंने पाया कि स्नातक विद्यार्थियों की राजनीतिक चेतना कम होने का कारण उनमें अनुभव, ज्ञान तथा उम्र का कम होना है जबकि परास्नातक विद्यार्थियों का राजनीतिकरण अच्छा होता है। उन्हें राजनीति के बारे में ज्ञान हो जाता है क्योंकि परास्नातक विद्यार्थी निरन्तर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं और उन्हें विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त हो जाते हैं जिस आधार पर उनका राजनीतिक ज्ञान प्रबल होता है।

2. **प्रत्यूष मिश्र (2002),** ने *बुन्देलखण्ड में पर्यटन विकास नियोजन: कालिंजर के विशेष सन्दर्भ में* किया। इस अध्ययन में निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि कालिंजर क्षेत्र में पर्यटन का विकास अपेक्षित रूप से कम है, जिसका कारण कालिंजर में प्रशिक्षित गाइड का न होना, पर्यटन कार्यालय तथा पर्यटन बंगला का अभाव होना, जलपान व्यवस्था का न होना, असुरक्षा, गन्दगी, जल प्रदूषण तथा पशुओं द्वारा पर्यावरण की क्षति आदि हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने कालिंजर क्षेत्र में पर्यटन के विकास हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये—
   - पर्यटक आवासगृह एवं पर्यटन कार्यालय का निर्माण किया जाना चाहिए।

- पर्यटन अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना की जाये, जिसका मुख्य कार्य स्थानीय परिस्थिति को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम तैयार करना, गाइडों को प्रशिक्षित करना, दर्शनीय स्थलों का सौन्दर्यीकरण, पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक महत्व के अनेक स्थल जो उपेक्षित पड़े हैं, उनका जीर्णोद्धार तथा यात्राओं के लिये सम्पूर्ण सुविधाओं का पता लगाना, इसके अतिरिक्त पर्यटन स्थलों की सचित्र पुस्तिकाएँ, फिल्में एवं त्रैमासिक पर्यटन समाचार का प्रकाशन आदि होना चाहिए। वीडियो कैसेट, पुस्तिकाएँ, फिल्म-स्लाइडें, पर्यटन कार्यालय में बिक्री के लिये उपलब्ध की जानी चाहिए।
- पर्यटकों को आधारभूत सुविधायें प्रदान कराने हेतु यातायात, आवास एवं भोजन व्यवस्था, बैंकिंग एवं बाजार सुविधायें, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा सुविधायें, प्रशिक्षित गाइड आदि सेवाओं का उपयुक्त मात्रा में नियोजित ढंग से विस्तार किया जाना चाहिए।
- राज्य दूरदर्शन रिले केन्द्र, रेडियो, समाचार पत्र-पत्रिकाओं को यहाँ के पर्यटन की विशेषताओं के सम्बन्ध में विशेष जानकारी देनी चाहिए।
- पर्यटन पुलिस फोर्स का गठन किया जाना चाहिए।

3. **सत्येन्द्र गुप्ता (2005),** ने *बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन* किया। प्रस्तुत अध्ययन बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सातों जिलों के हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श रूप में 30 सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं का चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने विद्यालय सर्वेक्षण के लिए डाक-प्रश्नावली सर्वेक्षण, साक्षात्कार सर्वेक्षण तथा दूरभाष सर्वेक्षण का सम्मिलित रूप से उपयोग किया है। अध्ययन हेतु शोधार्थी ने 113 प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। इस अध्ययन में निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र में संख्यात्मक रूप से तीव्र गति से प्रगति की है तथा बालक-बालिकाओं की शिक्षा पर लगभग समान रुप से ध्यान दे रहे हैं

परन्तु बुन्देलखण्ड क्षेत्र की जनसंख्या एवं शिक्षा की माँग की तुलना में इन संस्थाओं की संख्या एवं छात्र धारण क्षमता अभी कम है। इन संस्थाओं में ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले छात्रों का अनुपात अधिक है।

4. **पंकज कुमार (2019),** ने *बुन्देलखण्ड के बाँदा, चित्रकूट एवं महोबा जनपद की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का अध्ययन* किया। इस अध्ययन में बुन्देलखण्ड के बाँदा, चित्रकूट एवं महोबा जनपद के सर्वेक्षण के फलस्वरुप बाँदा और चित्रकूट जनपद से प्राप्त शैल-चित्रों की विषय-वस्तु से तत्कालीन मानव की जीवनचर्या, रहन-सहन, सामाजिक जीवन, आर्थिक क्रियाकलाप, शिकार करने की पद्धति और मनोरञ्जन के साधनों का पता चलता है। यहाँ से विविध प्रकार के अंकन प्राप्त हुए हैं, जिनमें जंगली पशुओं के शिकार, प्राकृतिक दृश्यों व हाथ के पंजों का अंकन, पालतू पशुओं से सम्बन्धित अंकन, युद्ध दृश्य, शहद एकत्र करने के दृश्य, हाथी-घोड़ों की सवारी, लोहे के अस्त्र-शस्त्र, जैसे– तलवार, ढाल, सांग, बल्लम, धार्मिक चिन्ह अभिलेख आदि प्रमुख हैं। इसी प्रकार के शैल-चित्र भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों से प्रकाश में आये हैं, भीमबेटका, रायसेन (मध्य प्रदेश), आदमगढ़, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश), लेखहिया, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) घघरिया आदि पुरास्थल उल्लेखनीय हैं। यहाँ से प्राप्त शैलाश्रयों के उत्खनन से मानव के आवासीय होने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं और साथ ही भारी संख्या में लघुपाषाण उपकरण मिले हैं। इस प्रकार के साक्ष्य अध्ययन क्षेत्र से प्रकाश में नहीं आये हैं लेकिन चित्रों की विषय-वस्तु के आधार पर बाँदा और चित्रकूट जनपद के विभिन्न स्थलों से प्राप्त शैलचित्रों को मध्य -पाषाण काल से लेकर आद्य-ऐतिहासिक काल के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

5. **बृजेश कुमार मिश्रा** ने *बुन्देलखण्ड की महिलाओं में शैक्षणिक पिछड़ेपन का अध्ययन* किया। प्रस्तुत अध्ययन बुन्देलखण्ड के झाँसी जनपद पर आधारित है। इस अध्ययन हेतु न्यादर्श रूप

में झाँसी जनपद की 194 न्याय पंचायतों से कुल 500 महिलाओं का चयन करके साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में उन्होंने पाया कि बुन्देलखण्ड में महिलायें शैक्षणिक रूप से पिछड़ी हुई हैं। इस पिछड़ेपन के निम्नलिखित कारण बताये गये हैं—

- कम उम्र में विवाह हो जाना।
- दहेज प्रथा के कारण व्यावसायिक शिक्षा से वञ्चित किया जाना।
- घर की चहारदीवारी तक सीमित रहना।
- आर्थिक समस्या एवं जातिवाद।

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से शोधकर्ता ने शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये हैं—

- प्राथमिक विद्यालयों का अधिक से अधिक विस्तार।
- प्रशासन द्वारा दी गयी सुविधाओं का सही प्रयोग।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था।
- शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के पाठ्यक्रम स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल।
- गैर-मान्यता प्राप्त विद्यालयों को समाप्त किया जाये।
- बालिकाओं की शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जाये।
- महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये।
- विद्यालयों में खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की समुचित व्यवस्था हो।
- शिक्षण संस्थाओं के असंतुलित विस्तार को रोका जाये।
- निर्धन बालिकाओं को नि:शुल्क शिक्षा दी जाये।
- जनसंख्या वृद्धि को रोका जाये।

2.4 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों से सम्बन्धित कुछ प्रमुख समाचार लेख (चित्रावली परिशिष्ट—II) निम्नलिखित हैं—

2.4.1 चित्रकूट जागरण स्पेशल: 01/08/2021

चित्रकूट में सैलानियों को आकर्षित कर रही शबरी जलप्रपात की गर्जना, जानिए यहाँ के कुछ रोचक तथ्य

प्रभु श्रीराम की तपोभूमि में पयस्वनी नदी पर शबरी जलप्रपात साल भर आकर्षण की छटा बिखेरता है। आजकल त्रि-जलधारा के तेज रफ्तार से नीचे गिरने का मनोहारी दृश्य किसी को मन्त्रमुग्ध करने के लिये पर्याप्त है। वहीं यह जलराशि जमीन पर बादलों के होने का अहसास भी करा रही है। मारकुण्डी थाना अन्तर्गत जमुनिहाई-बंभिया जंगल में शबरी जलप्रपात स्थित है। बारिश के मौसम में यहाँ की त्रि-धाराएँ माहौल को और भी मनोरम बना देती हैं। पहाड़ों में कई दिनों से हो रही लगातार बारिश से तीन जल धाराएँ इन दिनों पूरे वेग से नीचे गिर रही हैं। इससे गर्जना के साथ का दृश्य और भी मनोहारी हो जाता है। इस दृश्य का लुत्फ उठाने के लिये अच्छी-खासी संख्या में पर्यटक व स्थानीय लोग यहाँ पहुँच रहे हैं। रविवार को छुटटी होने के कारण प्रपात में अच्छी खासी भीड़ रही।

2.4.2 पत्रिका स्पेशल चित्रकूट: 10/08/2018

शबरी जलप्रपात: प्रकृति की गोद में स्वर्ग सा एहसास नजारे ऐसे कि न हटें नजरें

प्रकृति की गोद में एक ऐसा स्थान जहाँ स्वर्ग सी अनुभूति होती है। भगवान राम की तपोस्थली चित्रकूट में वैसे तो न जाने कितने मनोहारी स्थल हैं जिनका दृश्यावलोकन करने के बाद आँखों पर यकीन नहीं होगा कि कुदरत ने अपनी नियामत बुन्देलखण्ड में भी बखूबी बरती है लेकिन सिस्टम की दुश्वारियों के चलते तपोभूमि के कई पर्यटन स्थल आज तक देश दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर अपनी जगह नहीं बना पाये। इन्हीं स्थलों में से एक है शबरी जलप्रपात। प्रकृति की गोद में एक ऐसा स्थान जहाँ स्वर्ग सी अनुभूति होती है पर्यटकों को और दिलकश नजारों से नज़रें नहीं हटतीं।

आकर्षण का केन्द्र शबरी जलप्रपात: चित्रकूट के यू० पी० और एम० पी० बॉर्डर पर स्थित शबरी जलप्रपात अपने अनोखे आकर्षण के लिये जाना जाता है। दुर्भाग्य है कि देश प्रदेश के कई नामी जलप्रपातों की फेहरिस्त में इसका स्थान नहीं लेकिन जो भी इसकी सुन्दरता देखता है वो इस स्थान का गुणगान किये बिना नहीं रह पाता। जनपद के मारकुण्डी थाना और मध्य-प्रदेश के धारकुण्डी थाना क्षेत्र के जंगलों के बीच पाठा के पहलू में स्थित है शबरी जलप्रपात।

40 फीट नीचे गिरती जलधाराएँ: घने जंगलों, पहाड़ों के बीच कुदरत का एक नायाब तोहफा है शबरी जलप्रपात। पयस्वनी सहित अन्य छोटी नदियों के एकत्र होने से तीन भागों में बँटी जलधाराएँ जब लगभग 40 फीट नीचे कुण्ड में प्रचण्ड वेग से गिरती हैं तो किसी जलतरंग की ध्वनि की भांति पर्यटकों के अन्तर्मन को झंकृत कर देती हैं। एक कुण्ड में गिरने के बाद ये जलधाराएँ पुनः दो भागों में बँटते हुए दूसरे कुण्ड में गिरती हैं जो प्रकृति के सम्मोहन को और बढ़ा देती हैं। बारिश के मौसम में शबरी जलप्रपात की सुन्दरता अपने चरम पर होती है।

2.4.3 बुन्देली झलक: 25/10/2021

धार्मिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थल: बृहस्पति कुण्ड

बृहस्पति कुण्ड पन्ना जिले (मध्य प्रदेश) के पहाड़ी खेड़ा गाँव में स्थित है। पहाड़ी खेड़ा गाँव से बृहस्पति कुण्ड की दूरी दक्षिण की ओर लगभग 6 किमी० है जो कालिन्जर के पास है। यह पन्ना से 37 किमी०, बाँदा से 85 किमी० और कालिन्जर किले से 29 किमी० दूर है। 400 फीट ऊँचा बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात, जिसे भारत का नियाग्रा जलप्रपात भी कहा जाता है। यह बुन्देलखण्ड की सबसे खूबसूरत जगह में से है।

मध्य प्रदेश के पन्ना जिले के पहाड़ी खेड़ा गाँव (कालिन्जर किले के पास) में स्थित है देवस्थान प्राकृतिक स्थल बृहस्पति कुण्ड। ऐसा मनोरम और मनभावन प्राकृतिक स्थल जो सैलानियों का मन मोह लेता है। कहते हैं इस स्थान पर देवताओं के धार्मिक शिक्षक- देवगुरु बृहस्पति ने एक आश्रम की स्थापना की थी

और इसलिये इसका नाम बृहस्पति कुण्ड हो गया। इसके साथ पौराणिक आस्था भी जुड़ी हुई है। विद्वानों का मानना है कि देवगुरु बृहस्पति ने यहीं यज्ञ किया था। बाद में भगवान प्रभु श्रीराम वनवास अवधि के दौरान अनेक ऋषियों मुनियों से मिलने के लिये यहाँ आये थे। इसलिये यह स्थान पवित्र और पावन है जहाँ देश और दुनिया के लोग अपना शीश नवाते हैं और आशीष पाते हैं। यहाँ से बाघिन नदी घाटी और झरनों की प्राकृतिक सुन्दरता देख सकते हैं। यह अपने अद्वितीय प्राकृतिक परिदृश्य और अद्भुत जलप्रपात के लिये प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र हरियाली, हीरा और हरि की अनुपम सम्पदा से परिपूर्ण है। इस जगह पर पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक सन्दर्भ पाये गये हैं। यहाँ के आसपास प्राचीन शैल-चित्रकला के प्रमाण मिले हैं जो शिकार और जनजातीय सभा जैसी मानवीय गतिविधियों को दर्शाते हैं । यह पूर्व-ऐतिहासिक काल के दौरान जनजातियों द्वारा उपयोग किये जाने वाले शिकार उपकरण के रूप में धनुष, भाला, तीर-कमान आदि के उपयोग को भी दर्शाते हैं। ये मानव सभ्यता के पर्याप्त प्रमाण हैं जो साबित करते हैं मानव सभ्यता इसी घाटी, जलाशय के आसपास विकसित हुई।

2.4.4 रफ्तार चित्रकूट: 09/09/2020

राघव जलप्रपात-बेधक को विकसित कर बनायें टूरिस्ट हब

शबरी जलप्रपात के बाद मानिकपुर क्षेत्र के राघव जलप्रपात और बेधक को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने और मानिकपुर को टूरिस्ट हब बनाने की दिशा में पहल करने की माँग बुन्देली सेना ने मुख्यमन्त्री से की है। इन स्थलों में पुलिस बूथ की स्थापना की जाये। बुधवार को बुन्देली सेना जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने बताया कि मानिकपुर क्षेत्र के शबरी जलप्रपात में यात्री सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए सीढ़ी, रेलिंग और शेड बनाये गये हैं। जबकि अभी भी यहाँ तक पहुँचने के लिये रास्ता कच्चा है। अब लोग बड़े पैमाने में यहाँ पर्यटन के लिहाज से पहुँच रहे हैं। इसलिये रास्ते और मुख्य सड़क में गेट का निर्माण कराया जाना जरूरी है। मानिकपुर क्षेत्र में मऊ गुरदरी ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आने वाले राघव जलप्रपात और गर्मियों में भी शिमला जैसी शीतलता प्रदान करने वाले बेधक में भी पर्यटकों को आकर्षित करने की असीम

सम्भावना है। इन स्थलों को भी पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जाये तो लोगों की यहाँ आवक बढ़ेगी। अकेले मानिकपुर क्षेत्र के विभिन्न स्थलों को विकसित कर पर्यटन का बड़ा केन्द्र बनाया जा सकता है। यहाँ सरहट में भित्तिचित्र, रानीपुर वन्य जीव बिहार, शबरी प्रपात, राघव प्रपात, बेधक, धारकुण्डी, मार्कण्डेय आश्रम, अमरावती, बरदहा नदी, खम्भेसुर के भित्तिचित्र, शोभन सरकार आश्रम, चर के सोमनाथ मन्दिर समेत प्रकृति की अभूतपूर्व सौन्दर्यछटा बरबस ही लोगों को आकर्षित करती है। मानिकपुर क्षेत्र को हमेशा पिछड़े और उपेक्षित क्षेत्र के रूप में पहचान मिली। जबकि यहाँ नैसर्गिक सुषमा का अकूत खजाना है। बुन्देली सेना ने सीएम पोर्टल में पत्र भेजकर राघव जलप्रपात और बेधक में यात्री सुविधाओं का विकास करने और मानिकपुर को टूरिस्ट हब बनाने की दिशा में विभिन्न स्थलों को विकसित किये जाने की दिशा में सरकार से पहल की माँग की है।

2.5 समीक्षात्मक निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले अनेक शोध अध्ययनों की समीक्षा की है। शोधकर्ता ने सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन दो भागों में विभाजित करके किया है—

- जागरूकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन।
- बुन्देलखण्ड से सम्बन्धित शोध अध्ययन।

जागरूकता से सम्बन्धित शोध अध्ययनों की समीक्षा करने पर शोधकर्ता ने पाया कि जागरूकता से सम्बन्धित अनेकानेक शोध पूर्व में किये जा चुके हैं, जिनमें **प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक जागरूकता, कॉलेज के विद्यार्थियों में वातावरण के प्रति जागरूकता, निजत्व एवं वैयक्तिक स्थान का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, भूमण्डलीकरण के प्रति जागरूकता, भौगोलिक जागरूकता तथा योग जागरूकता** का अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों का परिचय

3.1 शबरी जलप्रपात

3.2 राघव जलप्रपात

3.3 बृहस्पति कुण्ड

तृतीय अध्याय

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों का परिचय

इस अध्याय में बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों—शबरी जलप्रपात, बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात एवं राघव जलप्रपात के विषय में विस्तार से चर्चा की गयी है। इस अध्याय में इन स्थलों के ऐतिहासिक कथानक एवं भौगोलिक स्थिति आदि के विषय में वर्णन किया गया है।अधोलिखित स्थलों पर शोधार्थी द्वारा स्वयं जाकर गहन जानकारी एकत्र की गयी, जिसकी चित्रावली परिशिष्ट—III में संलग्न है।

3.1 शबरी जलप्रपात

बुन्देलखण्ड के चित्रकूट क्षेत्र (सतना जिला) में बंभिया गाँव के पास 'शबरी जलप्रपात' नाम का एक शानदार जलप्रपात है। यह जलप्रपात लगभग 240 फीट ऊँचा है। शबरी जलप्रपात के आस-पास का क्षेत्र विन्ध्य पर्वत श्रेणी का हिस्सा है। यह स्थल पौराणिक तथा भौगोलिक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डॉ० जगन्नाथ सिंह, जिलाधिकारी चित्रकूट, ने शोध करने के बाद 31 जुलाई, 1998 को इस जगह का नाम रखा था।

हिन्दू धर्म ग्रन्थ रामायण के अनुसार अयोध्या के राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं—कौशल्या, कैकेई तथा सुमित्रा। राजा दशरथ अपने और कौशल्या के ज्येष्ठ पुत्र राम को अपने बाद सिंहासन पर बैठाना चाहते थे किन्तु रानी कैकेई ने मन्थरा के बहकावे में आकर राजा दशरथ से राम के लिये 14 वर्ष का वनवास तथा अपने पुत्र भरत के लिए राज-सिंहासन माँगा। राजा दशरथ वचनबद्ध थे, अत: उन्हें रानी कैकेई की यह बात माननी पड़ी। राम ने भी पिता के वचन का मान रखते हुए 14 वर्ष का वनवास स्वीकार किया और वनवास के लिए चले गये। अपने वनवास के दिनों में भ्रमण करते हुए भगवान राम ने चित्रकूट आकर शबरी मैया से भेंट की। पौराणिक कथाओं के अनुसार यह कहा जाता है कि भगवान राम ने शबरी मैया से फल खाने के बाद इस स्थान पर स्नान किया था और इस स्थान का नाम **शबरी मैया** के नाम पर **शबरी जलप्रपात** पड़ा।



चित्र संख्या 3.1.1 राजा दशरथ का परिवार



चित्र संख्या 3.1.2 राम-लक्ष्मण-सीता वनगमन



चित्र संख्या 3.1.3 राम-लक्ष्मण की माता शबरी से भेंट



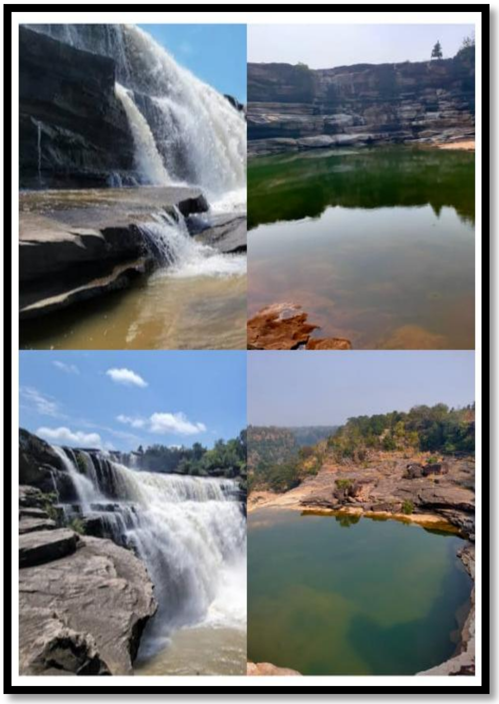
चित्र संख्या 3.1.4 स्नान करते हुए भगवान श्री राम

इस जलप्रपात का **प्रवेश द्वार** उत्तर दिशा की ओर है जिस पर गेट लगा हुआ है। इसी द्वार से ही पर्यटक परिसर में प्रवेश करते हैं। प्रपात के उत्तर दिशा की ओर काफी लम्बी बाउन्ड्री वॉल बनायी गयी है, जिससे प्रपात का गेट बन्द होने पर कोई अन्दर न जा सके तथा कोई जंगली जानवर भी इस ओर न आ सके।

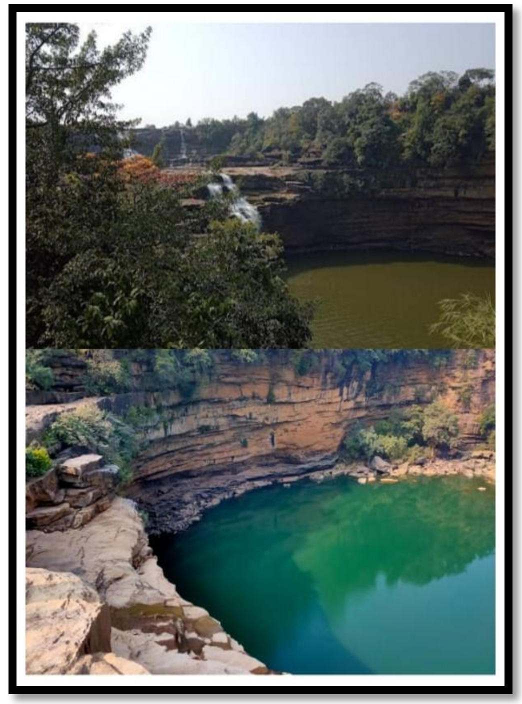


चित्र संख्या 3.1.5 प्रवेश द्वार

शबरी जलप्रपात स्थल में दो प्रपात बनते हैं। यहाँ ऊपरी प्रपात को **शबरी कुण्ड** के नाम से जाना जाता है। इस प्रपात के चारों ओर पर्यटकों की सुरक्षा हेतु रेलिंग लगायी गयी है। इस प्रपात की ऊँचाई 80 फीट है। वर्षा ऋतु में यहाँ की सुन्दरता पर्यटकों को मन्त्रमुग्ध कर देती है। शबरी जलप्रपात के मुख्य द्वार से दायीं ओर थोड़ी दूर चलने पर नीचे की ओर एक रास्ता जाता है। यह रास्ता **निचले कुण्ड** तक जाता है। निचले कुण्ड की ऊँचाई 240 फीट है। यहाँ पहुँचने का मार्ग अत्यन्त ही दुर्गम है तथा बरसात के दिनों में तो नदी में पानी अधिक होने के कारण यह मार्ग पूरी तरह से बन्द हो जाता है जिससे निचले कुण्ड तक पहुँचना सम्भव नहीं हो पाता।

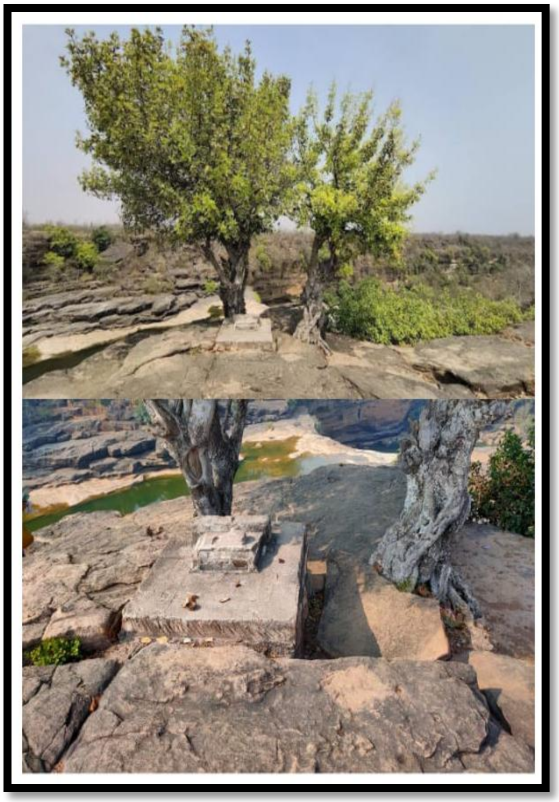


चित्र संख्या 3.1.6 शबरी कुण्ड



चित्र संख्या 3.1.7 निचला कुण्ड

लोगों की मान्यता के अनुसार निचले कुण्ड के आस-पास पहाड़ों में ही एक गुफा है। इस गुफा में भगवान राम तथा देवी सीता ने अपने वनवास के दिनों में रात्रि विश्राम किया था। उन्होंने जिस शिला पर विश्राम किया था, उस पर उनके विश्राम के साक्ष्य मौजूद हैं किन्तु इस शिला तक पहुँचने के मार्ग के विषय में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है। मात्र कुछ क्षेत्रीय लोग ही इस शिला तक पहुँचने का मार्ग भली-भांति जानते हैं। शबरी जलप्रपात में शबरी कुण्ड के प्रवेश द्वार के बगल में रेलिंग के अन्दर **भगवान शिव की मूर्ति** रखी हुई है। यहाँ आने वाले पर्यटक जलप्रपात में भ्रमण करने के साथ भगवान शिव की पूजा अर्चना करते हैं। यहाँ भगवान शिव की मूर्ति के बगल में ही एक प्राचीन वट वृक्ष है। इस वट वृक्ष की छाँव में ही भगवान शिव की मूर्ति स्थापित की गयी है। श्रद्धालुगढ़ भगवान शिव की पूजा अर्चना करने के पश्चात वट वृक्ष की शीतल छाँव में विश्राम करते हैं तथा अपने मन को शान्त करते हैं। जलप्रपात में चारों ओर विशाल शिलाएँ हैं। यहाँ आने वाले पर्यटक इन शिलाओं पर चढ़कर सेल्फी लेना पसन्द करते हैं परन्तु यह एक जोखिम-पूर्ण कार्य है।



चित्र संख्या 3.1.8 वट वृक्ष एवं शिव जी की मूर्ति



चित्र संख्या 3.1.9 विशाल शिलाएँ एवं राम-सीता शैय्या

शबरी जलप्रपात परिसर से लगभग 50 मीटर पहले राजकीय पौधशाला है। इस पौधशाला में विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे तथा पुष्पों की विभिन्न प्रजातियों को संग्रहित किया गया है। यहाँ आने वाले पर्यटक पौधशाला में जाकर विभिन्न औषधियों एवं पुष्पों के विषय में जानकारी इकट्ठा कर सकते हैं तथा अपनी इच्छानुसार पौधे ले जाकर अपने घरों पर भी लगा सकते हैं। मुख्य सड़क से शबरी जलप्रपात के लिये जाने वाले मार्ग में एक चबूतरा बना हुआ है। इस चबूतरे में भगवान राम, देवी सीता तथा लक्ष्मण जी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। ये प्रतिमायें अत्यन्त सुन्दर एवं प्राचीन हैं। यहाँ आने वाले पर्यटक इन प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना करते हैं।



चित्र संख्या 3.1.10 पौधशाला



चित्र संख्या 3.1.11 मन्दिर एवं राम-सीता-लक्ष्मण प्रतिमाएँ

3.2 राघव जलप्रपात

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश की सीमा पर रीवा जिले में राघव जलप्रपात नाम का एक शानदार जलप्रपात स्थित है। यह जलप्रपात चित्रकूट एवं रीवा जिलों की सीमा पर मऊ-गुरदरी गाँव के पास स्थित है। इस जलप्रपात को यहाँ के स्थानीय लोग **पन्ना जलप्रपात** के नाम से जानते हैं। इस जलप्रपात की ऊँचाई लगभग 84 फीट है। इस स्थल का प्राकृतिक एवं भौगोलिक रूप से अत्यन्त महत्व है।

राघव जलप्रपात में सिर्फ बरसात के मौसम (जुलाई-जनवरी) में ही पानी रहता है। बरसात के मौसम में यहाँ **दो जलधाराएँ** बनती हैं। मुख्य जलधारा के अतिरिक्त यहाँ एक और जलधारा गिरती है जिसका दृश्य बहुत ही आकर्षक लगता है। इस जलधारा में पानी कम होने पर इसके नीचे खड़े होकर लोग स्नान भी करते हैं। यह इस प्रपात का मुख्य आकर्षण है। बरसात के दिनों में पानी पूरे वेग से गहरी खाई में गिरता है। पानी के गिरने से उत्पन्न आवाज तथा फुहारें यहाँ आने वाले पर्यटकों को आनन्द की अनुभूति कराती हैं।



चित्र संख्या 3.2.1 पतली जलधारा एवं मुख्य चौड़ी जलधारा

राघव जलप्रपात के सामने सड़क के दूसरी तरफ **हनुमान जी का मन्दिर** है। यहाँ आने वाले पर्यटक मन्दिर में पूजा-अर्चना करते हैं तथा भगवान के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हैं। हनुमान जी के मन्दिर के बगल में ही पुजारी जी का आवास है। उनके आवास के समीप ही एक प्राकृतिक जलस्रोत है। लोगों का कहना है कि इस स्रोत से पूरे वर्ष पानी निकलता रहता है। यह प्राकृतिक जलस्रोत अपने आप में बहुत ही अद्भुत है। हनुमान जी के मन्दिर के बगल में ही एक **उपवन** है। इस उपवन में विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे तथा पुष्प लगे हुए हैं जो देखने में बहुत ही आकर्षक एवं सुन्दर लगते हैं।



चित्र संख्या 3.2.2 हनुमान मन्दिर



चित्र संख्या 3.2.3 उपवन एवं प्राकृतिक जलस्रोत

राघव जलप्रपात में मुख्य जलधारा के ठीक पीछे एक **प्राकृतिक गुफा** है। यह गुफा इतनी बड़ी है कि यहाँ 10-15 लोग आराम से बैठ सकते हैं किन्तु बरसात के दिनों में यह गुफा दिखायी नहीं देती है तथा यहाँ पहुँचना अत्यन्त दुर्गम हो जाता है। जलप्रपात के आसपास **शिलाओं का विशाल समूह** है। इन शिलाओं के

ऊपर चढ़कर यहाँ आने वाले पर्यटक सेल्फी लेते हैं किन्तु चट्टानों पर सेल्फी लेना अत्यन्त जोखिम भरा कार्य है। क्योंकि यहाँ पर रेलिंग नहीं लगायी गयी हैं जिस कारण से पैर फिसलने पर खाई में गिरने का खतरा रहता है। इस प्रपात के आस-पास तथा नीचे उतरने के मार्ग में अनेक चट्टानें पड़ती हैं। इन चट्टानों पर अत्यधिक फिसलन होती है। अतः यहाँ नीचे उतरते समय बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है ताकि कोई अप्रिय घटना न हो। मानिकपुर से राघव जलप्रपात तक जाने वाले मार्ग में छोटे-बड़े कई **रपटे** पड़ते हैं जो बरसात के दिनों में उफना जाते हैं। इस कारण उनका पानी ऊपर सड़क से होकर गुजरता है। इन रपटों से होकर राघव जलप्रपात तक पहुँचना पर्यटकों को बहुत ही रोमांचित करता है। राघव जलप्रपात बिल्कुल जंगल से सटा हुआ है। यह एक निर्जन स्थान है। इस कारण यहाँ पर अक्सर जंगली जीव-जन्तु जैसे—शेर, भालू, चीता आदि को विचरण करते क्षेत्रीय लोगों द्वारा देखा गया है। जलप्रपात के आस-पास के जंगल में विभिन्न प्रकार के औषधीय वृक्ष भी हैं। यह **औषधियाँ** विभिन्न प्रकार के रोगों को दूर करने में सहायता करती हैं।



चित्र संख्या 3.2.4 प्राकृतिक गुफा, शिला समूह एवं काई-युक्त चट्टानें



चित्र संख्या 3.2.5 रपटा एवं प्राकृतिक औषधियाँ

3.3 बृहस्पति कुण्ड

बुन्देलखण्ड के **पन्ना जिले में पहाड़ी खेड़ा गाँव** के पास बृहस्पति कुण्ड नाम का एक शानदार जलप्रपात है, जो लगभग 400 फीट ऊँचा और 200-300 फीट चौड़ा है। यह इतना खूबसूरत है कि इसे बुन्देलखण्ड का नियाग्रा जलप्रपात कहा जाता है। बृहस्पति कुण्ड के आस-पास का क्षेत्र विन्ध्य पर्वत श्रेणी का हिस्सा है। इस स्थल का पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्व है।

प्राचीन परम्परा में सबसे पुराणतम महर्षि भृगु, अङ्गिरा, मरीचि, पुलस्त्य, कृत, अत्रि, वशिष्ठ माने गये हैं और ये ही ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। इस क्षेत्र के सृष्टिकालीन वैदिक ऋषियों में महर्षि अङ्गिरा प्रमुख हैं। शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि महर्षि अङ्गिरा की तपस्या और उपासना इतनी तीव्र थी कि इनका तेज और प्रभाव अग्नि की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गया। उस समय अग्निदेव भी जल में रहकर तपस्या कर रहे थे। जब उन्होंने देखा कि अङ्गिरा के तपोबल के सामने मेरी तपस्या और प्रतिष्ठा तुच्छ हो रही है, तो वह दु:खी होकर अङ्गिरा के पास गये और कहने लगे- "आप प्रथम अग्नि हैं, मैं आपके तेज की तुलना में अपेक्षाकृत न्यून होने से द्वितीय अग्नि हूँ। मेरा तेज आपके सामने फीका पड़ गया है। अब मुझे कोई अग्नि नहीं कहेगा। तब महर्षि अङ्गिरा ने सम्मानपूर्वक पुत्र रूप में अग्नि का वरण किया। तत्पश्चात वह अग्निदेव ही बृहस्पति के नाम से प्रसिद्ध हुए।



चित्र संख्या 3.3.1 महर्षि अङ्गिरा एवं भगवान बृहस्पति



चित्र संख्या 3.3.2 महर्षि अङ्गिरा आश्रम एवं यहाँ श्री राम का आगमन

महर्षि अङ्गिरा का आश्रम मड़फा क्षेत्र में गुप्त गोदावरी के ऊपर तुङ्गाचल पर्वत के दक्षिणी भाग में सामसूत्र नामक अरण्य में था। इस आश्रम में वेदों का अध्यापन होता था, जिसके मुख्य अधिष्ठाता एवं शिक्षाचार्य महर्षि अङ्गिरा थे। वेदों के विद्वान होने के कारण उनके पुत्र बृहस्पति भी अपने पिता का सहयोग करते थे। वेदों के अध्यापन काल में एक बार सभी वेदाध्यायी, अंत:वासियों एवं आचार्यों को इस विद्यापीठ में वेदों की ऋचाएँ विस्मृत हो गयीं। वेदों के लुप्त होने की स्थिति से हाहाकार मच गया। तब आचार्य बृहस्पति ने ओमकार मन्त्र का जाप कर स्मृति देवी को जागृत किया। इससे, जिसने जिस वेद का अध्ययन एवं अभ्यास किया था, वे सब उसे स्मरण हो आये। महर्षि अङ्गिरा के ज्येष्ठ पुत्र बृहस्पति अपने वैदुष्य के कारण 'वाचस्पति' की उपाधि से विभूषित होकर देवताओं के आचार्य एवं गुरु पद पर प्रतिष्ठित हुए थे। वे अपनी सारस्वत साधना के बल पर सात दिनों में एक दिन गुरुवार के स्वामी बने और नवग्रहों के मध्य प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया। यह सम्पूर्ण ग्रहों में सर्वश्रेष्ठ शुभप्रद माने जाते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिस जातक के जन्मांक के केन्द्र में बृहस्पति हो, उसका अन्य कोई भी ग्रह कुछ नहीं बिगाड़ सकता। बृहस्पति ने भी अपने पिता के आश्रम के समीप बालुवाहिनी के किनारे नैसर्गिक सुषमा सम्पन्न गहवर में तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न किया था। आचार्य बृहस्पति की यह तपस्थली वर्तमान में 'बृहस्पति कुण्ड' के नाम से विख्यात है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान राम ने भी अपने 14 वर्ष के वनवास के दौरान इस स्थान का भ्रमण किया था।

बृहस्पति कुण्ड आश्रम परिसर को छोटी चहारदीवारी द्वारा घेरा गया है तथा मध्य में प्रवेश हेतु लोहे का द्वार है। प्रवेश द्वार से अन्दर जाने पर बायीं ओर एक पुराना खपरैल की छत का बना हुआ भवन स्थित है, जिसे **प्राचीन बृहस्पति आश्रम** के रूप में मान्यता है और आश्रम के बगल में नीम का वृक्ष है, जिसके चारों और पक्का चबूतरा बना हुआ है। नीम के वृक्ष के बायीं ओर बाबाजी की कुटिया है। कुटिया से लगा हुआ एक छोटा मन्दिर है। इसमें गणेश जी और हनुमान जी की प्रतिमा विराजमान है। मन्दिर के सामने नन्दी की मूर्ति स्थापित है तथा मन्दिर के बगल में **तुलसी चौरा** है। छोटे मन्दिर के पीछे **भगवान राम और सीता का मन्दिर** है जो इस स्थान का मुख्य मन्दिर है। मुख्य मन्दिर के सामने ही थोड़ी दूर पर **बजरंगबली** का एक और मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर के पास ही एक पीपल का वृक्ष है जिसके चारों तरफ पक्का चबूतरा बना हुआ है।

बजरंगबली मन्दिर के ठीक सामने **भगवान राम के चरण चिह्न** एक चबूतरे पर उत्कीर्ण हैं। भगवान राम का वनवास काल के समय विभिन्न ऋषियों से मिलने के लिये इस आश्रम में आगमन हुआ था। भ्रमण के समय उन्होंने जिस स्थान पर अपनी चरण पादुका उतारी थी, उसी स्थान पर यह चबूतरा बना है।



चित्र संख्या 3.3.3 आश्रम द्वार, प्राचीन वृहस्पति आश्रम, मन्दिर एवं महन्त जी



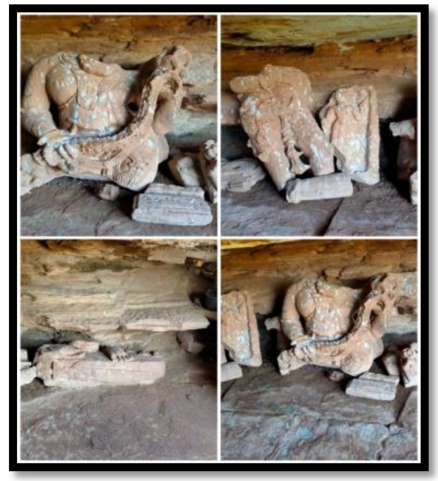
चित्र संख्या 3.3.4 राम और सीता मन्दिर, हनुमान जी मन्दिर, भगवान राम के चरण चिह्न एवं तुलसी चौरा

चरण चिह्न चबूतरे के बगल से ही कुण्ड में नीचे जाने के लिये **प्रवेश द्वार** है। इस द्वार से प्रवेश करने पर कुण्ड में नीचे उतरने के लिए पत्थरों को तराशकर सीढियाँ बनायी गयी हैं। इस प्रवेश द्वार से प्रवेश कर दो या तीन कदम आगे बढ़ने पर सीढियाँ दायीं ओर घूम जाती हैं। इन सीढ़ियों से थोड़ा सा नीचे उतरने पर एक

कठिन संकरा रास्ता मिलता है। संकरे रास्ते पर थोड़ा आगे बढ़ने पर एक गुफा मिलती है। यह संत जी का निवास स्थान है। **गुफा** का द्वार आकर्षक एवं अलंकृत है। इसमें अनेक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। यह मूर्तियाँ अजन्ता के समकालीन मानी जाती हैं। इस गुफा के अन्दर एक बड़ा तथा एक छोटा **शिवलिंग** है जिसकी पूजा अर्चना की जाती है। इसके अतिरिक्त गुफा में नन्दी, बृहस्पति, धनुर्धारी राम, सीता व हनुमान जी की **खण्डित मूर्तियाँ** हैं।

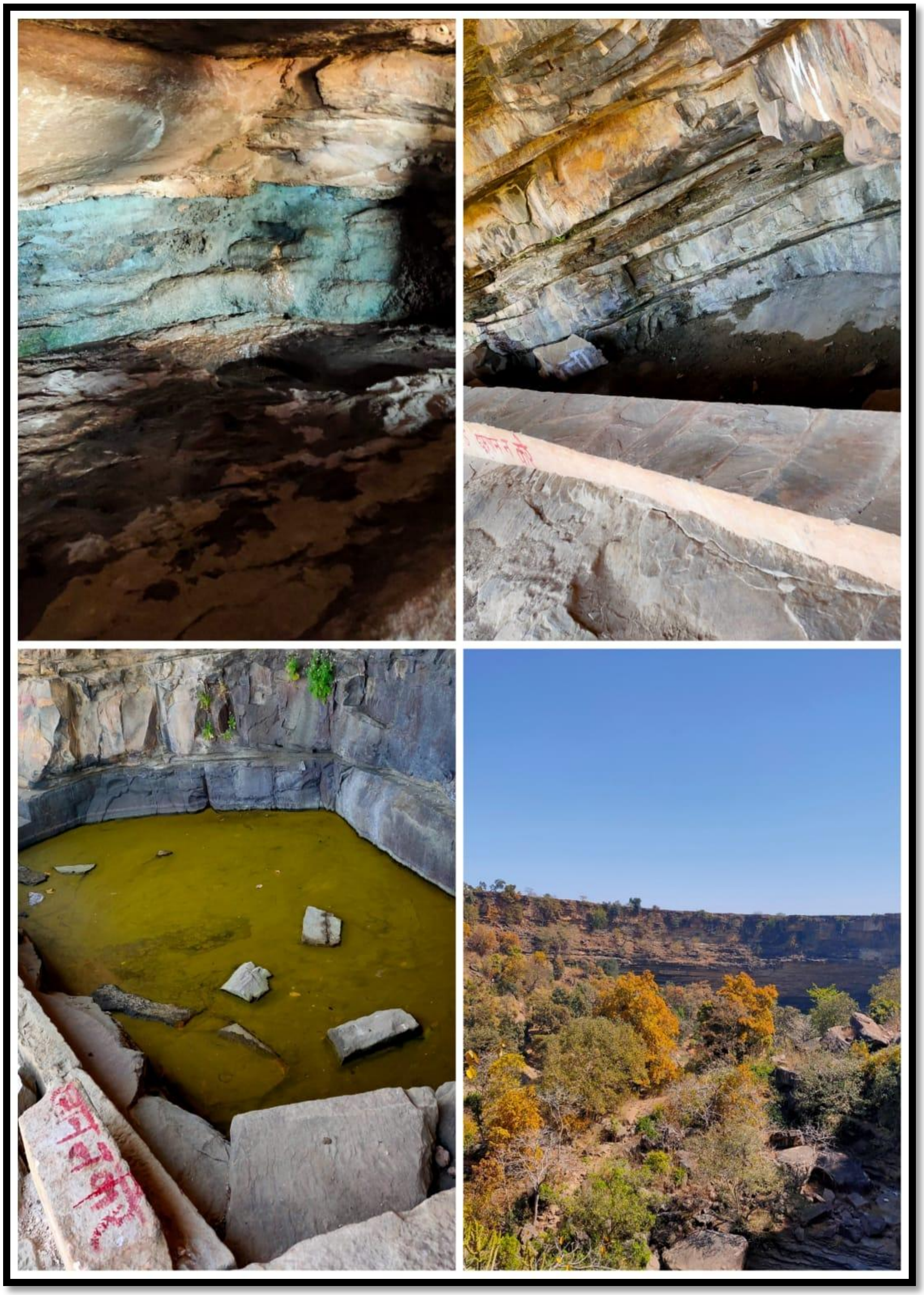


चित्र संख्या 3.3.5 बृहस्पति कुण्ड प्रवेश द्वार, चबूतरा, गुफा एवं शिवलिंग



चित्र संख्या 3.3.6 खण्डित मूर्तियाँ

गुफा के अन्दर ही **हनुमान कुण्ड** है। यह पानी का प्राकृतिक स्रोत है। यहाँ पानी हमेशा उपलब्ध रहता है। यहाँ से जितना पानी निकाला जाता है, उतना पानी भरता जाता है। संकरे रास्ते से आगे बढ़ने पर **पार्वती कुण्ड** मिलता है। यह कुण्ड पानी का प्राकृतिक स्रोत माना जाता है। बताया जाता है कि प्राचीन समय में इस कुण्ड का पानी सूखता नहीं था। इसमें से जितना पानी निकाला जाता था, उतना पानी उसमें अपने आप ही भर जाता था लेकिन अब यह सूख चुका है। पार्वती कुण्ड से जैसे ही थोड़ा सा आगे बढ़ते हैं तो **राम कुण्ड** पड़ता है। राम कुण्ड से थोड़ा सा आगे बढ़ने पर बायीं ओर नीचे जाने के लिये सीढियाँ हैं। नीचे उतरने पर बायीं तरफ **सूखा कुण्ड** पड़ता है। कुण्ड में कभी भी पानी दिखता नहीं है। चाहे वह बरसात का मौसम हो या अन्य कोई भी मौसम। पहले यहाँ राक्षस निवास करते थे। देवगुरु बृहस्पति ने यहाँ यज्ञ किया तथा आश्रम की स्थापना की। भगवान राम ने वनवास के समय यहाँ आकर इस स्थल को राक्षसों से मुक्ति प्रदान की। ऐसी जनश्रुति है कि यहाँ से चित्रकूट, बद्रीनाथ तथा श्रीलंका जाने के लिए गुप्त मार्ग भी है।



चित्र संख्या 3.3.7 हनुमान कुण्ड, पार्वती कुण्ड, राम कुण्ड एवं सूखा कुण्ड

नीचे उतरने पर सीढ़ी के दाहिनी ओर उबड़-खाबड़ रास्ते पर थोड़ा चलने पर **बृहस्पति कुण्ड** मिलता है। इसके पानी का रंग हमेशा हरा होता है। इस क्षेत्र का सबसे अनोखा एवं आकर्षक कुण्ड सूरज कुण्ड है।



चित्र संख्या 3.3.8 बृहस्पति कुण्ड

सूरज कुण्ड अपने आप में एक अलग प्रकार की अद्भुत सुन्दरता समेटे हुए है। इस कुण्ड का आकर्षण इतना अधिक है कि व्यक्ति यदि एक बार भी इसे देख ले तो उसका हृदय प्रसन्नता व आनन्द से आच्छादित हो उठेगा। इस कुण्ड की सुन्दरता बरसात के मौसम में देखते बनती है। बरसात के मौसम में ऊँचाई से गिरते हुए पानी की गर्जना तथा उड़ती धुआँमयी एवं पानी की बौछारें इसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा देती हैं। इस कुण्ड की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका पानी कभी सूखता नहीं है।



चित्र संख्या 3.3.9 सूरज कुण्ड

सूरज कुण्ड से पानी के प्रवाह की दिशा में लगभग एक किलोमीटर चलने पर **पत्तालिया कुण्ड** मिलता है। इसकी गहराई देखकर अत्यन्त विस्मय होता है। क्योंकि धरातल पर जितना नीचे सूरज कुण्ड है उतना और नीचे सूरज कुण्ड के धरातल से पत्तालिया कुण्ड स्थित है। अधिक गहराई में होने के कारण ही इसका नाम पत्तालिया कुण्ड है। यहाँ तक पहुँचना अत्यन्त रोमाञ्चकारी कार्य है। सूरज कुण्ड तथा पत्तालिया कुण्ड के आस-पास के क्षेत्र में तलहटी पर स्थानीय व्यक्तियों द्वारा **हीरा उत्खनन** का कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता है। इसके लिए सर्वप्रथम एक स्थान से काफी गहराई तक मिट्टी खोदकर निकाली जाती है फिर इसे जालीनुमा बर्तन में रखकर पहले से बने किसी गड्ढे में, जिसमें पानी भरा होता है; खूब हिलाया जाता है ताकि उसमें से मिट्टी गीली होकर जाली के माध्यम से बाहर निकल जाये और हीरे एवं कंकड़ अलग हो जायें। इस हीरे और कंकड़ के ढेर को जमीन पर फैलाकर सुखाया जाता है तथा इसके सूख जाने पर एक-एक कंकड़ को हटाकर हीरा ढूँढने का कार्य किया जाता है। यह स्थानीय लोगों की आजीविका का मुख्य साधन है। यहाँ आस-पास **प्राचीन शैल चित्रकला** के साक्ष्य मिले हैं जो शिकार और जनजातीय सभा जैसी मानवीय गतिविधियों को दर्शाते हैं। यह पूर्व ऐतिहासिक काल के दौरान जनजातियों द्वारा उपयोग किये जाने वाले शिकार उपकरण के रूप में धनुष और तीर के उपयोग को भी दर्शाता है। प्राचीन मानव सभ्यता के पर्याप्त प्रमाण हैं, जो इस खूबसूरत घाटी के आसपास विकसित थीं।



चित्र संख्या 3.3.10 पत्तालिया कुण्ड, हीरा खदान एवं प्राचीन शैल चित्र

चतुर्थ अध्याय

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

चतुर्थ अध्याय

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

4.1 प्रस्तावना

जब कोई अनुसन्धानकर्ता अपनी अनुसन्धान समस्या से सम्बन्धित उद्देश्य और परिकल्पनाओं का निरूपण कर लेता है तब वह अपनी परिकल्पनाओं का अनुभवपरक सत्यापन करना चाहता है। अनुभवपरक सत्यापन के लिए परिकल्पनाओं से सम्बन्धित तथ्यों और आँकड़ों की आवश्यकता होती है। यह तथ्य या आँकड़े किस योजना या अनुसन्धान व्यूह नीति के आधार पर एकत्र किए जायें कि परिकल्पनाओं की वैज्ञानिक और अनुभवपरक जाँच की जा सके और विश्वसनीय तथा वैद्य परिणाम प्राप्त किए जा सकें। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि अनुसन्धानकर्ता उपयुक्त रीतिविधान का निर्धारण करे और उपयुक्त अभिकल्प का चयन करे। वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्ता को भी अनुसन्धान समस्या के अध्ययन के लिए अनेक साधन जुटाने पड़ते हैं। प्रायः उसे अपनी अनुसन्धान समस्या के लिए अनुसन्धान अभिकल्प की आवश्यकता होती है।

एकॉफ (1953) के अनुसार, "अभिकल्प वह प्रक्रिया है जिससे किसी समस्या समाधान के लिए निर्णयों को क्रियान्वित किया जाता है। किसी अपेक्षित परिस्थिति को नियन्त्रित करने की दिशा में यह एक संकलित पूर्वानुमान की प्रक्रिया है।"

"Design is the process of making decisions before the situation arises in which the decision is to be carried out. It is a process of deliberate anticipation directed towards bringing the expected situation under control."

—R. L. Ackoff.

करलिंगर (1978) के अनुसार, "अनुसन्धान अभिकल्प नियोजित अन्वेषण की वह योजना, संरचना तथा अनुसन्धान व्यूह नीति है जिसके आधार पर अनुसन्धान प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते हैं और प्रसरण पर नियन्त्रण किया जाता है।"

"Research design is the plan, structures and strategy of investigation conceived so as to obtain answers to research questions and to control variance."

—F. N. Kerlinger.

4.2 शोध विधि

प्रत्येक शोधकर्ता को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु कई विधियों का चयन करना होता है। शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरे समूह से सम्बन्धित होती है और इसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपनाकर **बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन** करने का प्रयास किया है।

4.2.1 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द Survey का हिन्दी रूपान्तरण है। Survey शब्द दो शब्दों (sur+vey) से मिलकर बना है। Sur शब्द का अर्थ ऊपर और Vey का अर्थ देखना है अर्थात सर्वेक्षण का अर्थ ऊपर से देखना या निरीक्षण करना है। विभिन्न विद्वानों के अनुसार सर्वेक्षण को निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

मोर्स (1934) के अनुसार, " संक्षेप में सर्वेक्षण किसी सामाजिक स्थिति अथवा समस्या अथवा जनसंख्या के परिभाषित उद्देश्यों हेतु वैज्ञानिक तथा व्यवस्थित रूप में विश्लेषण की एक पद्धति है।"

"The Survey is, in brief, simply a method of analysis in scientific and orderly forms and for defined purposes of a given social situation or problem or population."

—H. N. Morse, the Social Survey in Town and Country Areas.

फेयरचाइल्ड (1944) के अनुसार, " सामान्य शब्दों में एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके किसी एक पक्ष जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरञ्जन के सम्बन्ध में तथ्यों को व्यवस्थित, संकलित और विश्लेषण करने को ही सर्वेक्षण कहते हैं।"

"A term …….. used rather loosely to indicate a more or less orderly and comprehensive gathering and analysis of facts about the total life of a community or some phase of it e.g. health, education, recreation ……. ."

—Fairchild, Dictionary of Sociology.

4.3 शोध अभिकल्प

बुन्देलखण्ड विश्विद्यालय, झाँसी द्वारा शोध के प्रारूप सम्बन्धी दिशा-निर्देश के अभाव में शोधर्थी द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में APA Style एवं Kumaun University, Nainital द्वारा शोध हेतु निर्गत दिशा-निर्देशों का संयुक्त रूप से प्रयोग किया गया है।

(विस्तृत विवरण परिशिष्ट—IV)

4.4 अध्ययन समष्टि

अनुसन्धान का अन्तिम लक्ष्य ऐसे सिद्धान्तों या सामान्यीकरणों का विकास करना है जो व्यक्तियों, घटनाओं या वस्तुओं के किसी समूह पर लागू होता है परन्तु ऐसे सिद्धान्त के विकास के लिए समूह के प्रत्येक

सदस्य का अध्ययन करना सम्भव नहीं होता, न ही अक्सर आवश्यक होता है, विशेषकर उस स्थिति में जब समूह के सदस्यों की संख्या बहुत अधिक हो। सामान्यत: जिस समूह पर अनुसन्धान परिणामों का सामान्यीकरण करना होता है उसके कुछ सदस्यों को लेकर उन पर अध्ययन किया जाता है, उसे समष्टि कहते हैं।

यह उन सभी प्रेक्षणों का कुलक अथवा समुच्चय है जिनमें एक या एक से अधिक विशेषताएँ उभयनिष्ठ हैं तथा जो किसी अध्ययन का विषय है।

सैद्धान्तिक रूप से समष्टि किन्ही ऐसी इकाइयों या तत्वों का कुलक (सेट) हो सकता है, जिसमें अनुसन्धानकर्ता की रुचि हो।

4.4.1 प्रस्तुत लघु शोध हेतु अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिनसे वाञ्छित सूचनाएँ संकलित की गयी हैं, वह है— **बाँदा नगर के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी**।

4.5 प्रतिदर्श चयन

किसी भी शोध कार्य के लिए प्रतिदर्श का चयन करने से पूर्व उसके अर्थ को समझना आवश्यक होता है। प्रतिदर्श को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

प्रतिदर्श को न्यादर्श भी कहते हैं। प्रतिदर्श जनसंख्या का वह छोटा भाग है, जिसे अनुसन्धानकर्ता के द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है। प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व सूक्ष्म-रूप होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का सामान्यीकरण करके जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाया जाता है। प्रतिदर्श के अंग्रेजी पर्याय Sample का उद्भव लैटिन भाषा के Exemplum शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है— Example अर्थात उदाहरण। इस शाब्दिक अर्थ से भी संकेत मिलता है कि प्रतिदर्श जनसंख्या की कुछ ऐसी इकाइयों का संकलन होता है, जिन्हें जनसंख्या की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है।

गुडे और हाट (1960) के अनुसार, "प्रतिदर्श जैसा की इसके नाम से स्पष्ट है, विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि है।"

"A sample as the name applies, is a smaller representation of a large whole."

—Methods in Social Research, Goode & Hatt.

यंग (1966) के अनुसार, "एक सांख्यिकीय प्रतिदर्श सम्पूर्ण समूह अथवा योग का ही एक अति छोटे आकार का चित्र है।"

"A statistical sample is a miniature picture or cross-section of the entire group or aggregate from which the sample is taken."

—Scientific Social Survey and Research, P.V. Young.

प्रतिचयन, प्रतिदर्श चुनने की विधि है जिसमें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव किया जाता है। प्रतिदर्श की इकाइयों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया प्रतिदर्श उस सम्पूर्ण जनसंख्या या समष्टि (Universe) का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह प्रतिदर्श चुना गया है।

बोगार्ड्स के अनुसार, "पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है।"

"Sampling is the selection of a certain percentage of a group of items according to a predetermined plan."

—Bogardus.

4.5.1 प्रतिदर्श चयन की विधियाँ

प्रतिदर्श का चयन किसी न किसी प्रतिचयन विधि द्वारा किया जाता है। प्रतिचयन प्रक्रिया के लिये तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रत्येक अध्ययनकर्ता प्रतिचयन नहीं कर सकता है। वह प्रतिचयन तभी कर सकता है जब उसे प्रतिचयन पद्धतियों का आवश्यक ज्ञान हो या इस क्षेत्र में उसे प्रशिक्षण प्राप्त हो।

प्रतिदर्श चयन की विधियों को मुख्यतः दो समूहों में विभक्त किया जा सकता है—

(I) यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—यादृच्छिक प्रतिचयन विधियों में वे सारी विधियाँ आती हैं जिसमें किसी न किसी प्रकार का यादृच्छिकरण शामिल होता है। ऐसी विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- संयोगिक प्रतिचयन
- वर्गबद्ध प्रतिचयन
- गुच्छ प्रतिचयन
- द्विस्तर प्रतिचयन

(II) गैर यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—गैर यादृच्छिक विधि में प्रतिदर्श के सदस्यों का चुनाव उनकी उपलब्धता और शोधकर्ता की सुविधा पर निर्भर करता है अर्थात् शोधकर्ता प्रतिदर्श में उन्हीं सदस्यों को रखता है जिन्हें वह आसानी से प्राप्त कर सकता है। इससे प्रतिदर्श में अधिक सदस्य लिए जा सकते हैं। इन विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
- अंश प्रतिचयन
- आकस्मिक प्रतिचयन
- **सुविधानुसार प्रतिचयन**
- स्वेच्छानुसार प्रतिचयन

4.5.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन

सुविधानुसार प्रतिचयन का प्रयोग सर्वेक्षणात्मक शोध में किया जाता है जहाँ शोधकर्ता को तथ्य का सस्ता सन्निकटन प्राप्त करना हो। जैसा कि इस विधि के नाम से पता चलता है, इसमें प्रतिदर्श का चयन इसलिए किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। इसे **अव्यवस्थित या आकस्मिक प्रतिचयन** भी कहा जाता है, क्योंकि यह विधि उन लोगों पर लागू होती है जो टहलते हुए अचानक मिल जायें या उन लोगों पर लागू होती है जिसकी शोध में विशेष रुचि हो स्वयंसेवकों का उपयोग सुविधानुसार प्रतिचयन का एक उदाहरण है। इस विधि का प्रयोग परिणामों का सकल आकलन प्राप्त करने के लिए प्राथमिक अनुसन्धान प्रयासों के दौरान किया जाता है। इस विधि से प्रतिदर्श का चयन करने में कोई खर्च या समय व्यर्थ नहीं जाता।

प्रदत्त संकलन हेतु **सुविधानुसार प्रतिचयन विधि** का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि कोरोना काल होने के कारण विद्यालयों/महाविद्यालयों का खुलना तथा उनमें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का भौतिक रूप से आना-जाना अनिश्चित था। अधिकांश अध्ययन-अध्यापन ऑनलाइन माध्यम से हो रहा था। अतः शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से करने का निश्चय किया गया, इस हेतु महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के whats app ग्रुप में गूगल फॉर्म का लिंक प्रेषित कर तथा मोबाइल रखने वाले कुछ विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क कर विद्यार्थियों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया।

4.6 लक्षित प्रतिदर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया—

4.6.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद का चयन किया गया। बाँदा जनपद के अन्तर्गत बाँदा नगर, बबेरू, अतर्रा, पैलानी तथा नरैनी तहसीलें आती हैं जिसमें से न्यादर्श के चयन के लिए बाँदा नगर का चुनाव किया गया।

बुन्देलखण्ड के बाँदा जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है। इस जिले को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता है, इस आवश्यकता को समझते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु बाँदा जनपद का चुनाव किया। साथ ही शोधकर्ता जन्म से ही बाँदा नगर का निवासी है एवं यहीं रहकर अध्ययन कार्य कर रहा है, जिस कारण शोधकर्ता का इस नगर से भावनात्मक जुड़ाव भी है। अतः शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन में **सुविधानुसार प्रतिदर्श विधि** को अंगीकृत कर बाँदा नगर को चयनित किया गया।

4.6.2 संस्थाओं का चयन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता द्वारा बाँदा नगर के पाँच महाविद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन सुविधानुसार प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया **(परिशिष्ट—V)** तथा उन्हें विभिन्न समूहों—छात्र-छात्राएँ, प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित विद्यार्थियों में विभाजित किया गया, जिसका विवरण निम्नवत है—

तालिका संख्या 4.6.2.1
न्यादर्श वितरण तालिका

चर	वर्ग	संख्या	कुल संख्या
लिंग	छात्र	92	200
	छात्राएँ	108	
विद्यार्थी स्तर	प्रशिक्षित	121	200
	अप्रशिक्षित	79	

तालिका संख्या 4.6.2.2
लिंग-वार प्रतिदर्श को प्रदर्शित करती तालिका

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएँ
1.	राजकीय महिला डिग्री कॉलेज, बाँदा		20
2.	पंडित जवाहरलाल नेहरू पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा	45	14
3.	राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा	31	58
4.	KCNIT	08	03
5.	R. N. Institute	08	13
योग		**92**	**108**
		200	

तालिका संख्या 4.6.2.3
प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के आधार पर विभाजन को प्रदर्शित करती तालिका

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित	
		छात्र	छात्राएँ	छात्र	छात्राएँ
1.	राजकीय महिला डिग्री कॉलेज				20
2.	पंडित जवाहरलाल नेहरू पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज			45	14
3.	राजा देवी पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज	31	58		
4.	KCNIT	08	03		
5.	RN Institute	08	13		
योग		**47**	**74**	**45**	**34**
		121		**79**	

4.7 प्रदत्तों का स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन के लिए प्राथमिक स्रोत का ही प्रयोग किया है।

शोध में प्रदत्तों का स्रोत निम्न है—

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थी।

4.8 प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के रूप में विद्यार्थियों की जागरूकता जानने हेतु ' बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता मापनी' का प्रयोग कर अनुक्रियायें प्राप्त की गयी हैं। तत्पश्चात उपकरण से प्राप्त अनुक्रियाओं का अंकन किया गया, अतः प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

तालिका संख्या 4.8
बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता की प्रश्न संख्या को प्रदर्शित करती तालिका

क्र० सं०	आयाम	प्रश्न	कुल प्रश्नों की संख्या
1	राघव जल प्रपात	1, 6, 9, 11, 16, 17, 19, 25, 26, 29, 30	11
2	शबरी जल प्रपात	2, 5, 8, 12, 13, 15, 18, 24, 27, 32	10
3	बृहस्पति कुण्ड जल प्रपात	3, 4, 7, 10, 14, 20, 21, 22, 23, 28, 31, 33	12
कुल कथनों की संख्या		33	33

4.9 शोध उपकरण

शोध उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग करके अनुसन्धान में डाटा एकत्र किया जाता है। यह अध्ययन के लिए डाटा संग्रह का साधन बन जाता है। यह विश्वसनीय और सटीक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र

में तथ्यों के संकलन के लिये प्रायोगिक विधि में किसी उपकरण/यन्त्र का उपयोग होता है। इसके साथ-साथ निरीक्षणों का भी सहारा लिया जाता है। लेकिन जब अध्ययन प्रयोगात्मक विधि के अतिरिक्त अन्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा किये जाते हैं तो तथ्यों के संकलन में मुख्यतः निम्न उपकरणों का उपयोग करते हैं—

- प्रेक्षण
- साक्षात्कार
- अनुसूची
- **प्रश्नावली**
- समाजमिति
- वैयक्तिक अध्ययन
- व्यक्तिवृत विधि
- वस्तुपरक मापनियाँ

(i) निर्धारण मापनी

(ii) पदांकन मापनी

(iii) चिह्नांकन सूची

- मनोवैज्ञानिक परीक्षण

(i) बुद्धि परीक्षण

(ii) अभियोग्यता परीक्षण

(iii) अभिरुचि सूची

(iv) व्यक्तित्व परीक्षण

- अभिवृत्ति मापनियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है।

4.9.1 प्रश्नावली

प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो शोध समस्या के सम्बन्ध में बनायी जाती है और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाइयों से तथ्यों का संकलन करके शोध समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

गुड और हॉट (1952) के अनुसार, "सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ, प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है जिसे उत्तर दाता स्वयं भरता है।"

"In general the word questionnaire refers to a device for securing answers to questions by using a form which the respondent fills in himself."

— Goode and Hatt.

लुण्डबर्ग (1957) के अनुसार, "मौलिक रूप से प्रश्नावली उद्दीपकों का वह समूह होता है जिसे शिक्षित लोगों के सामने, इन उद्दीपकों के अन्तर्गत उनके मौखिक व्यवहारों का निरीक्षण करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।"

"Fundamentally, the questionnaire is a set of stimuli to which literate people are exposed in order to observe their verbal behaviour under these stimuli."

—Lundberg.

4.9.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्ता के समक्ष महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों में बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए **कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्व-निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।** इसका निर्माण अध्ययन के लिए आवश्यक है। इस उपकरण का निर्माण अनुसन्धानकर्ता ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है।

4.9.3 स्वनिर्मित प्रश्नावली निर्माण के सोपान

प्रस्तुत शोध हेतु बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली निर्माण के सोपान निम्नवत हैं—

(i) प्रथम सोपान: सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अनुसन्धानकर्ता द्वारा प्रश्नावली निर्माण से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया गया।

(ii) द्वितीय सोपान: विषय विशेषज्ञों से परामर्श

शोधकर्ता ने प्रश्नावली निर्माण हेतु विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय ली तथा उनके परामर्श से प्रश्नावली के निर्माण के लिए क्षेत्र निर्धारित किये।

(iii) तृतीय सोपान: प्रश्नों का निर्माण

जलप्रपातों से सम्बन्धित जागरूकता के अध्ययन हेतु प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित अधिकतम सम्भव प्रश्नों का निर्माण किया गया। इस प्रकार बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता के 39 प्रश्नों का निर्माण किया गया। **(परिशिष्ट—VI)** समस्या के उद्देश्य एवं न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बन्द प्रश्नावली का चयन किया गया। इनमें कथनों को विकल्पात्मक बनाया गया जिसमें चार विकल्प दिए गये; इन चार में से एक विकल्प को चुनना था।

(iv) चतुर्थ सोपान: विशेषज्ञों की राय

प्रश्नावली निर्माण के पश्चात इसे विशेषज्ञों को दिखाया गया। उनके द्वारा निरर्थक एवं दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया तथा कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गये। अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को क्रमवार रखा गया तथा अन्तिम रूप से कुल 33 प्रश्न बने। **(परिशिष्ट–VII)**

4.10 परीक्षण का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन रूप में किया जाना था। इस हेतु सर्वप्रथम शोधकर्ता ने राजकीय महिला महाविद्यालय, बाँदा की प्राचार्या डॉ० दीपाली गुप्ता से मिलकर उन्हें इस जागरूकता प्रश्नावली के विषय में बताया। उन्होंने इसे प्रशासित करने की अनुमति दी तथा प्रश्नावली के लिंक को अपने व्हाट्स एप नम्बर पर भेजने के लिए कहा। उन्होंने इसको अपने महाविद्यालय के विद्यार्थियों के ग्रुप में भेज दिया।

इसी प्रकार शोधकर्ता राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा में गया तथा शिक्षक-शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष से मिलकर उनसे प्रश्नावली को प्रशासित करने की अनुमति प्राप्त की। उनकी अनुमति से शोधकर्ता ने स्वयं कक्षाओं में जाकर प्रशिक्षुओं को इस प्रश्नावली के विषय में समझाया तथा अपने समक्ष ही प्रश्नावली को छात्रों के ग्रुप में भेजकर ऑनलाइन भरवाया।

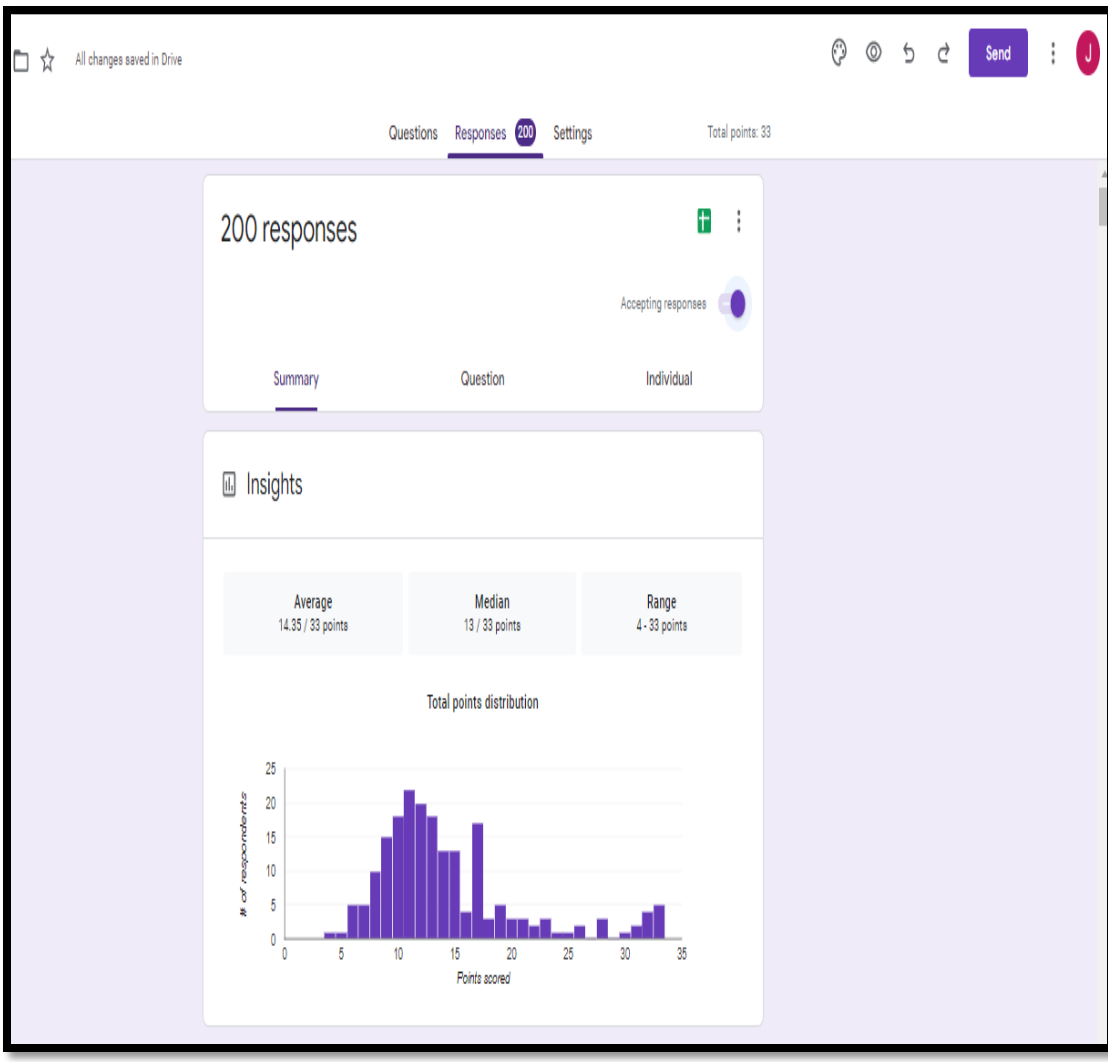
इसी प्रकार शोधकर्ता आर० एन० इन्स्टीट्यूट, बाँदा तथा KCNIT, बाँदा के प्रवक्ताओं से मिला तथा उनकी सहायता से प्रश्नावली को विद्यार्थियों के व्हाट्स एप ग्रुप में भेजकर प्रश्नावली को भरवाया।

शोधकर्ता ने पंडित जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा में स्वयं जाकर वहाँ के छात्र नेताओं की सहायता से प्रश्नावली को छात्रों को ऑनलाइन भेजकर भरवाया।

गूगल फॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों के प्रत्युत्तर शोधार्थी को Gmail द्वारा प्राप्त हुए। कुछ विद्यार्थियों ने गूगल फॉर्म को एक से अधिक बार भर दिया। अतः उनके द्वारा भरे गये प्रथम गूगल फॉर्म को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे विद्यार्थियों ने भी गूगल फॉर्म भरा जो शोध हेतु चयनित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् नहीं थे। ऐसे विद्यार्थियों को पहचानकर शोधकर्ता द्वारा उन्हें न्यादर्श में सम्मिलित नहीं किया गया। न्यादर्श में दिनांक 30/03/2022 तक प्राप्त विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार अन्तिम रूप से कुल 200 विद्यार्थियों की न्यादर्श के रूप में अनुक्रियायें प्राप्त हुईं। **(चित्रावली परिशिष्ट—VIII)**

4.11 परीक्षण का फलांकन

शोधकर्ता ने प्रश्नावली का निर्माण गूगल फॉर्म के माध्यम से क्विज के रूप में किया था जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित था। सही उत्तर के लिए 1 अंक तथा गलत उत्तर देने पर 0 अंक प्रदान किया गया। गूगल फॉर्म में response पर क्लिक करने पर वह स्वतः ही उसका फलांकन करके परिणाम प्रस्तुत कर देता है। **(विस्तृत विवरण परिशिष्ट—IX)**



4.12 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकी, गणित की वह शाखा है, जिसमें आँकड़ों का संग्रहण, प्रदर्शन, वर्गीकरण और उसके गुणों का आकलन तथा अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी एक गणितीय विज्ञान है, जिसमें किसी वस्तु/अवयव/तन्त्र/समुदाय से सम्बन्धित आँकड़ों का संग्रह, विश्लेषण, व्याख्या या स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की जाती है।

एम० जी० कैण्डाल के अनुसार—" सांख्यिकी प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने का विज्ञान है।"

"Statistics is the science of collecting, analyzing and interpreting numerical data."

—M.G. Kendall.

स्लिगमैन के अनुसार—"सांख्यिकी वह विज्ञान है जिसमें किसी क्षेत्र विशेष की जानकारी हेतु संख्यात्मक आँकड़ों के संकलन, वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण, तुलना और व्याख्या करने की विधियों का वर्णन होता है।"

"Statistics is the science which deals with the methods of collecting, classifying, presenting, comparing and interpreting numerical data collected to throw some light on any sphere of inquiry."

—Sligman.

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध में प्रश्नावली की सहायता से संग्रहित किए गये आँकड़ों से प्राप्त सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इनको एक निश्चित रूप प्रदान करना था। इसके लिए शोधकर्ता ने सामान्य सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया।

शोध के उद्देश्य तथा आँकड़ों की प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया—

- प्रतिशत
- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- क्रान्तिक अनुपात
- दण्ड आरेख

4.12.1 प्रतिशत (Percentage)

प्रतिशत गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने का एक तरीका है। इसे (%) द्वारा व्यक्त किया जाता है। प्रतिशत को ज्ञात करने का सूत्र निम्नवत है—

प्रतिशत(%) = (प्राप्तांक/ पूर्णांक)×100

4.12.2 मध्यमान (Mean)

मध्यमान को समान्तर माध्य या अंकगणितीय माध्य भी कहा जाता है।

किंग के अनुसार—"समंक माला के पदों के योग में उनकी संख्या से भाग देने पर जो अंक प्राप्त होता है उसी को अंकगणितीय माध्य या मध्यमान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

"The arithmetic average may be defined as the sum of aggregate of a series of items, divided by their number."

—W. I. King

मध्यमान प्राप्तांकों का केन्द्रीय मान होता है जो सभी आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यमान के आधार पर एक समूह की दूसरे समूह से तुलना की जाती है।

मध्यमान की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$\overline{X} = \frac{\sum X}{N}$$

यहाँ—

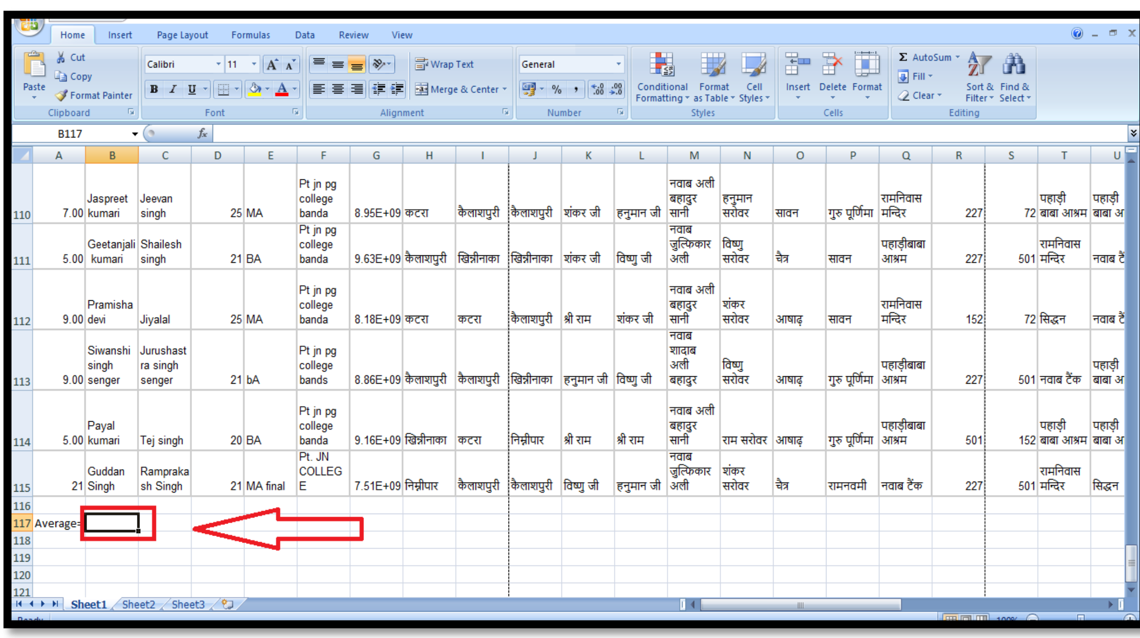
$\bar{x}$ = मध्यमान

$\sum x$ = प्राप्तांकों का योग

N = विद्यार्थियों की कुल संख्या

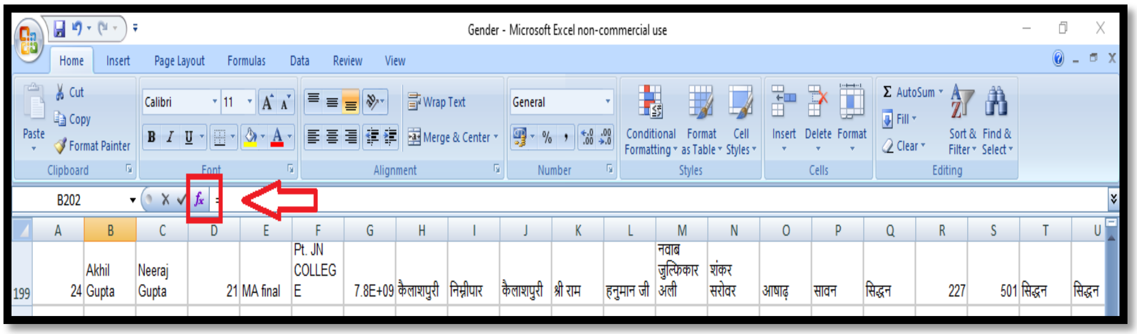
मध्यमान की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) किसी भी संख्या समूह का मध्यमान निकालने के लिए एक्सेल के **AVERAGE** Function का प्रयोग करते हैं। एक्सेल स्प्रेडशीट में संख्याओं को प्रविष्ट करके जहाँ पर एवरेज जानना चाहते हैं, वहाँ पर क्लिक करें।

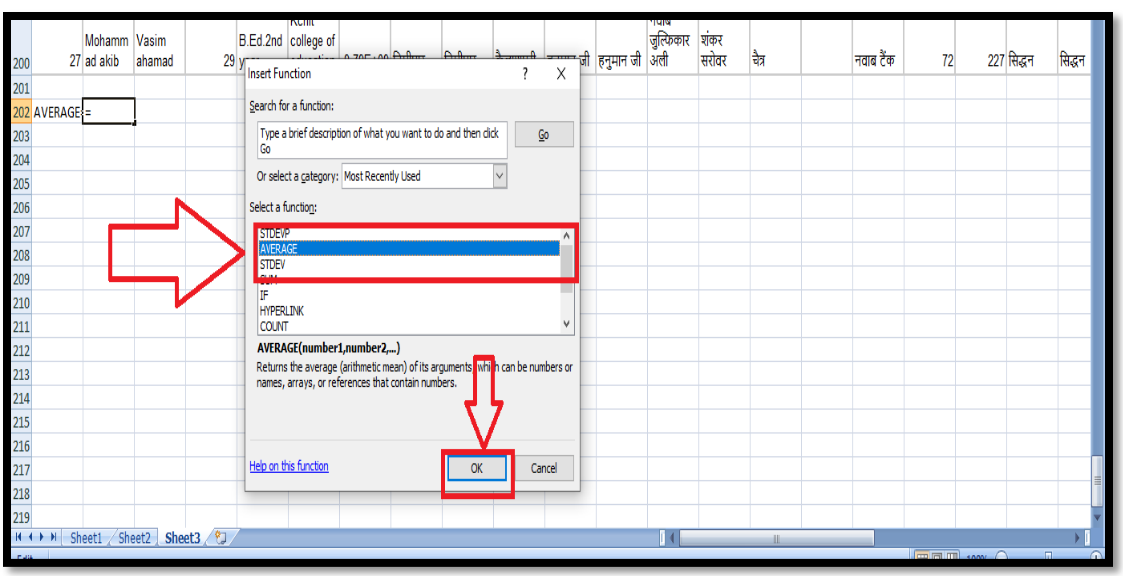


(ii) Formulas में क्लिक करें और 'Insert Function' tab को चुनें।

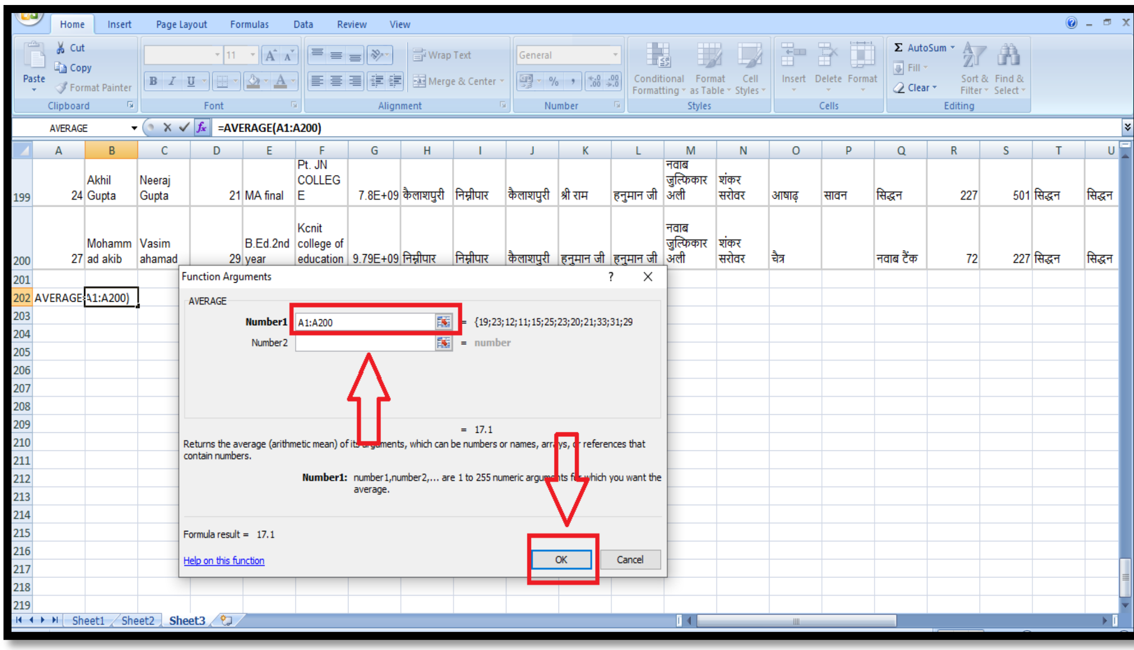
एक्सेल स्प्रेडशीट की row या column में enter करें।



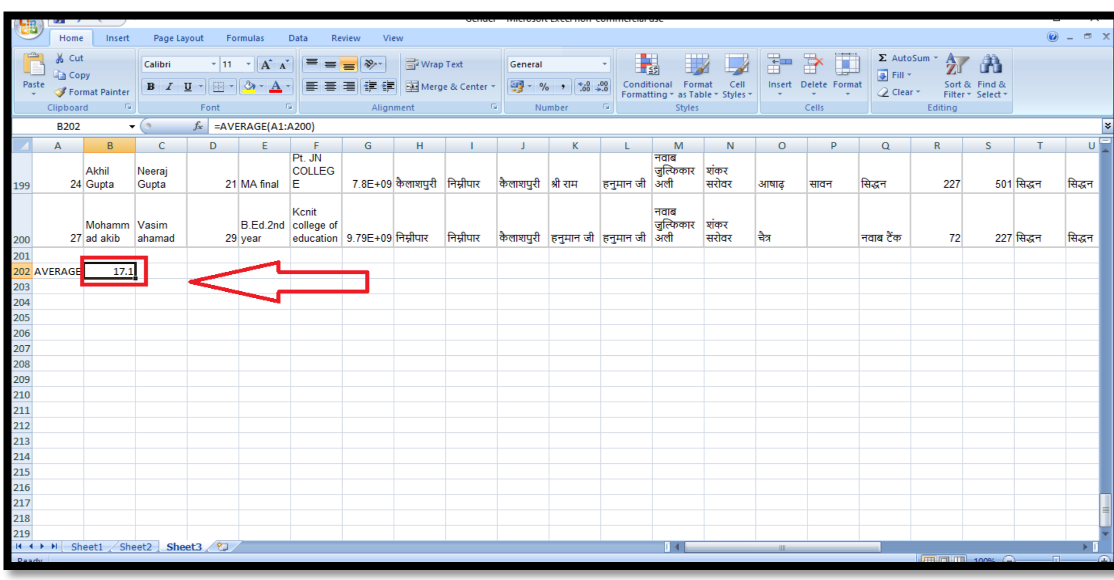
(iii) नीचे स्क्रॉल करें और **AVERAGE** Function चुनें।



(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए, एक cell range (जैसे—A1:A200) enter करें और ok क्लिक करें।



(v). अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का मध्यमान (average) नजर आयेगा।



जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप 'Insert Function' feature process का इस्तेमाल करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे इस सूत्र को type कर सकते हैं—

- Mean- "=AVERAGE (cell range)"

  e.g. "AVERAGE (A1:A200)"

4.12.3 प्रमाप विचलन (Standard Deviation)

प्रमाप विचलन समंक माला के विभिन्न पदों के समान्तर माध्य से लिए गये विचलनों के वर्गों के समान्तर माध्य का वर्गमूल होता है।

एलहान्स के अनुसार— "मानक विचलन अंकगणितीय माध्य से मापे गये विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल होता है।"

"Standard deviation is the square root of the arithmetic average of the squares of deviations measured from the mean."

—Elhance.

प्रमाप विचलन को मानक विचलन या प्रामाणिक विचलन भी कहा जाता है। इसका संकेताक्षर **σ** है।

प्रमाप विचलन की गणना करने का सूत्र निम्नलिखित है—

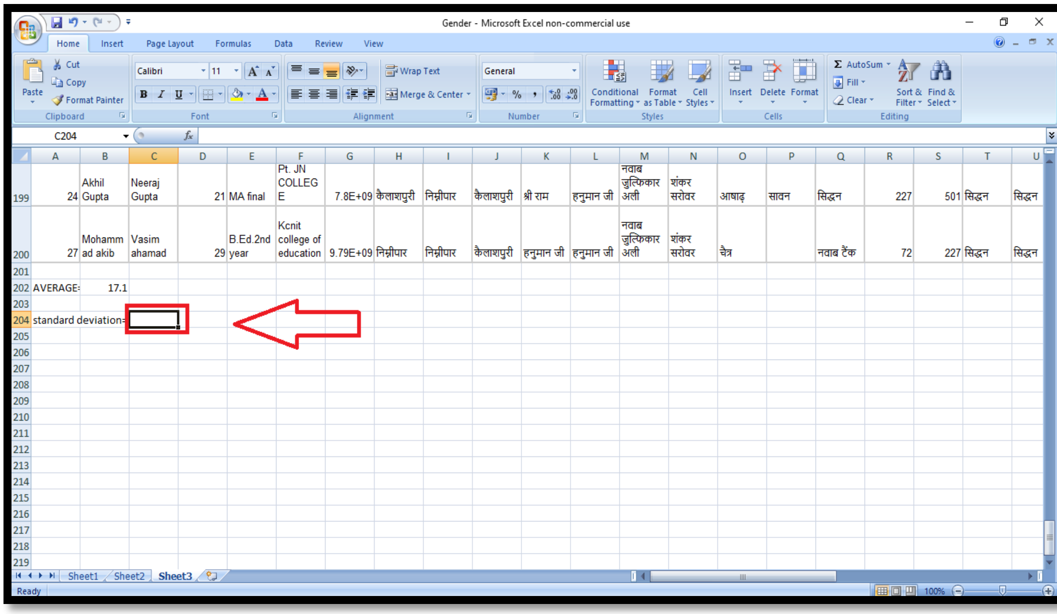
$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum(x - \text{mean})^2}{n}}$$

- x is a set of numbers
- mean is the average of the set of numbers
- n is the size of the set
- σ is the standard deviation

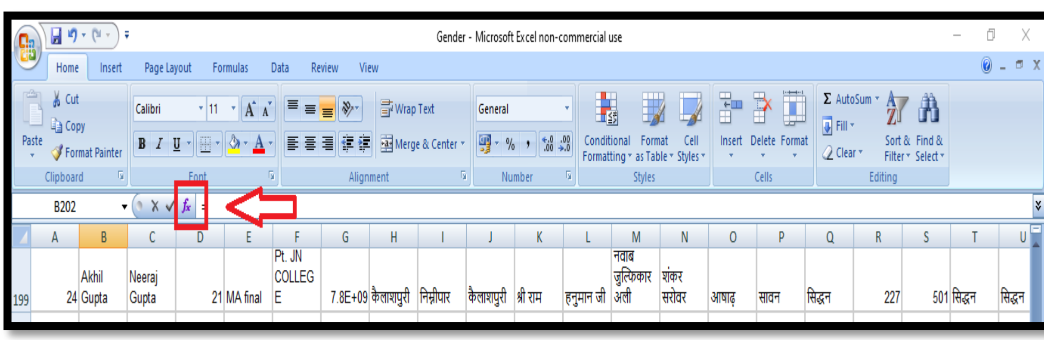
प्रमाप विचलन की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) प्रमाप विचलन की गणना के लिए **STDEVP** Function का प्रयोग करें।

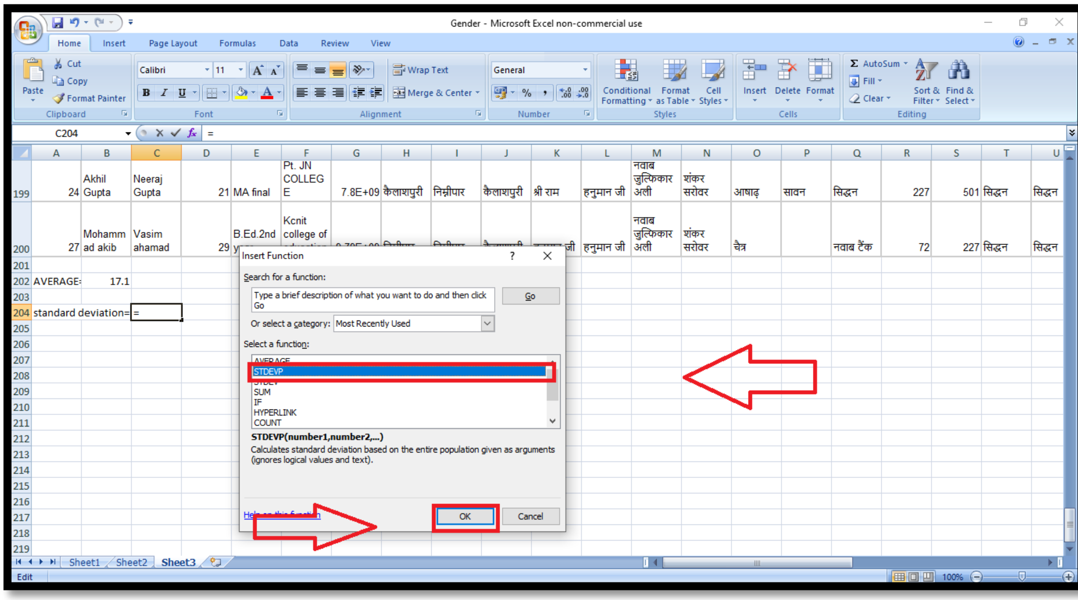
आपके कर्सर को उस जगह पर रखें, आप जहाँ इसे देखना चाहते हैं।



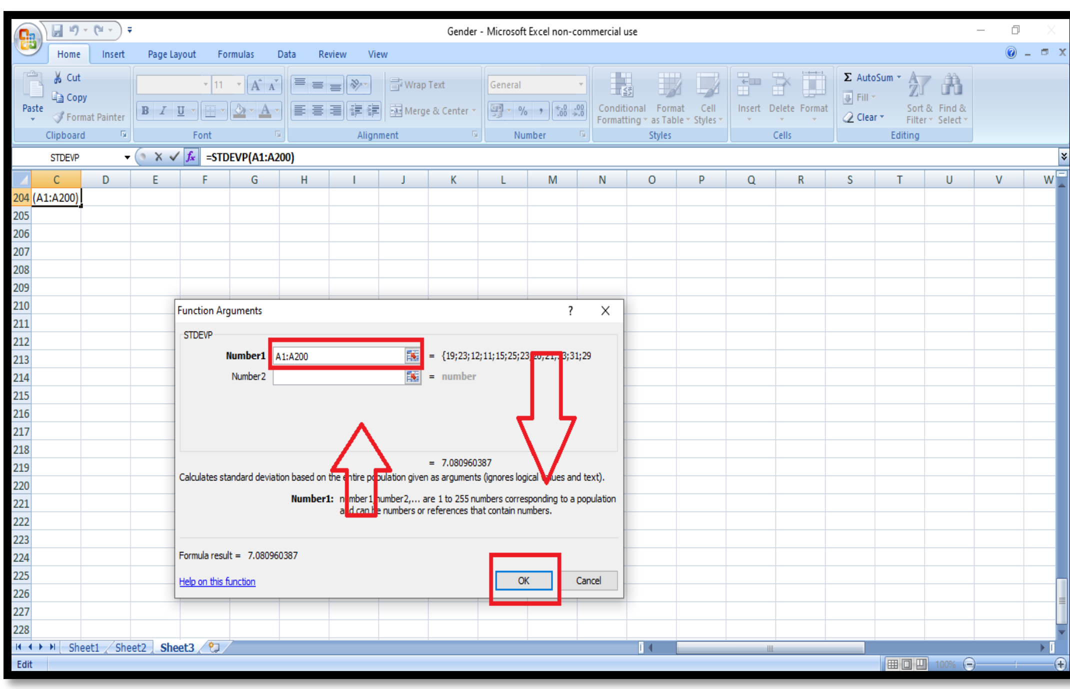
(ii). **FORMULAS** पर क्लिक करें और एक बार फिर से **Insert Function tab** चुनें।



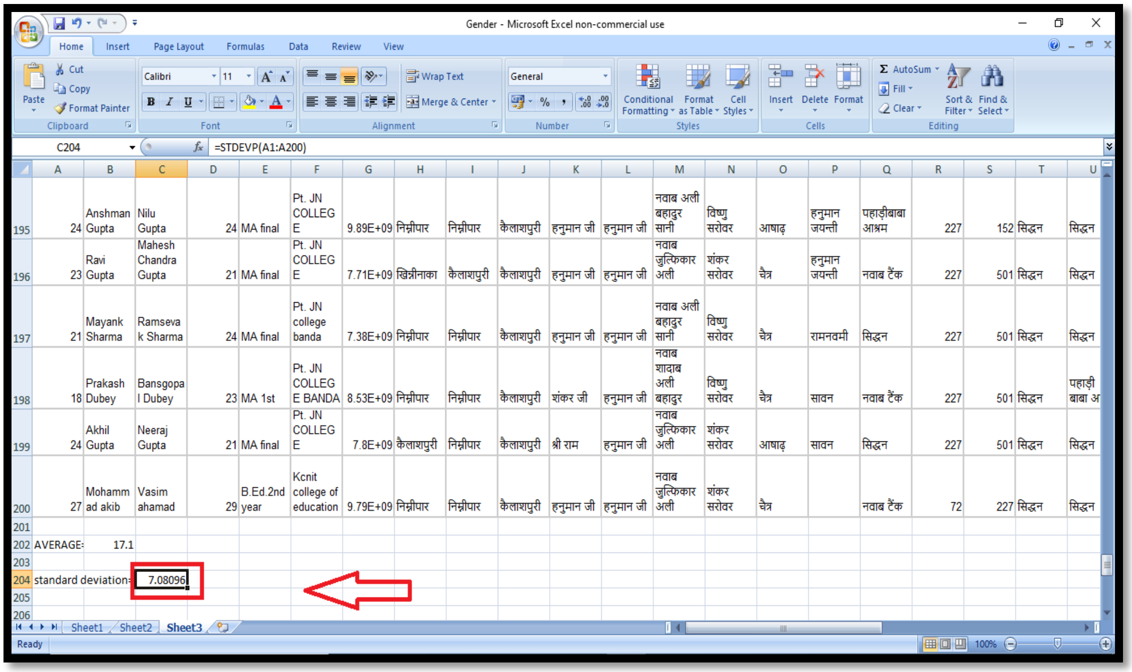
(iii). Dialog box पर scroll down करें और **STDEVP** Function चुनें।



(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए cell range enter करें और ok करें।



(v) अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का प्रमाप विचलन नजर आयेगा।



जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप Insert Function feature process का प्रयोग करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे सूत्र को type कर सकते हैं।

- Standard Deviation- "STDEVP (Cell range)

  e.g. "STDEVP (A1:A200)"

4.12.4 वैषम्यता तथा कुकुदता (Skewness and Kurtosis)

वैषम्यता से तात्पर्य सामान्य वक्र में होने वाले अपसरण से है, जो किसी जनसंख्या के माध्य और माध्यिका में होने वाले अंतर से उत्पन्न होता है। सामान्य वक्र में माध्य, माध्यिका तथा बहुलांक वक्र की आधार रेखा के मध्य एक ही बिन्दु पर पड़ते हैं तथा इन तीनों का मान भी संख्यात्मक रूप से भी बराबर होता है। इसके फलस्वरूप सामान्य वक्र का चित्र काफी सन्तुलित दिखाई पड़ता है क्योंकि इसका दायाँ और बायाँ भाग समान ढाल वाला और एक दूसरे के बराबर होता है। परन्तु जब वितरण सामान्य न होकर विषम होता है

तो माध्य तथा माध्यिका एक ही बिन्दु पर न पड़कर अलग-अलग पड़ते हैं और प्राप्तांकों का केन्द्रीकरण वितरण के बायीं या दायीं ओर हो जाता है। सामान्य वक्र में माध्य और माध्यिका दोनों बराबर होते हैं इसलिए विषमता शून्य होती है, परन्तु विषम वितरण में माध्य और माध्यिका में अन्तर होता है, यह अन्तर जितना ज्यादा होता है; विषमता उतनी अधिक होती है।

'विषमता' को इन दो 'सूत्रों' द्वारा ज्ञात किया जा सकता है–

(क) $$Sk = \frac{3(\text{माध्य} - \text{मध्यिका})}{\sigma}$$

यहाँ – Sk = विषमता, σ = मानक विचलन।

(ख) $$Sk = \frac{(P_{99} + P_{10})}{2} - P_{50}$$

जहां, SK = विषमता

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{10} = प्रतिशतता 10

P_{50} = प्रतिशतता 50 या मध्यिका

सामान्य वैषम्यता प्रसार

- If skewness is less than -1 or greater than 1, the distribution is highly skewed.
- If skewness is between -1 and -0.5 or between 0.5 and 1, the distribution is moderately skewed.
- If skewness is between -0.5 and 0.5, the distribution is approximately symmetric.

एक 'आवृत्ति वितरण वक्र', प्रसामान्य वक्र की तुलना में कितना **चपटा** अथवा **शिखरीय** है, इसकी जानकारी **कुकुदता** से मिलती है।

'ककुदता या 'कुर्टोसिस' को नीचे दिये गये 'सूत्र' द्वारा निकाला जा सकता है।

$$Ku = \frac{Q}{(P_{90} + P_{10})}$$ (प्रतिशित के आधार पर वक्रता को निकालना।)

जहां, Ku = ककुदता

Q = चतुर्थक विचलन

P_{90} = प्रतिशतता 90

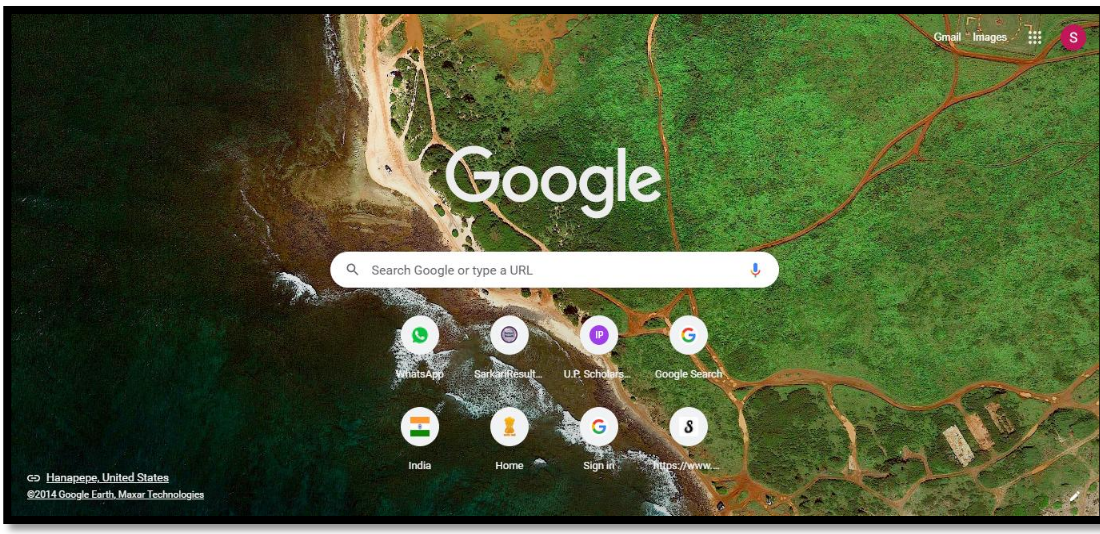
P_{100} = प्रतिशतता 10

सामान्य कुकुदता प्रसार

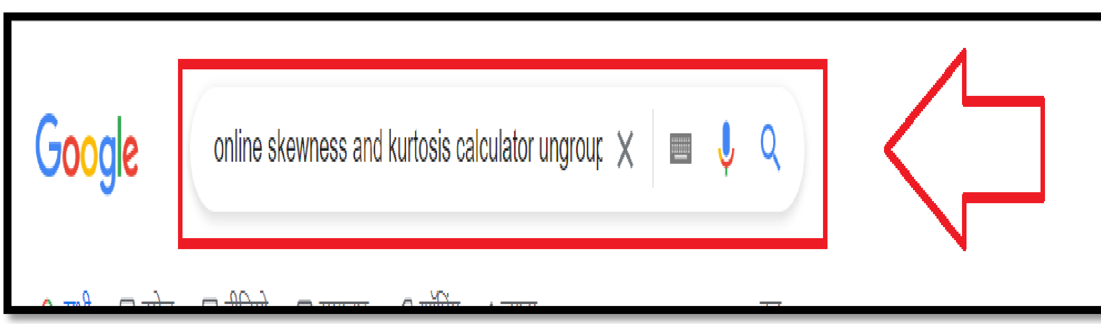
A standard normal distribution has kurtosis of 3 and is recognized as mesokurtic. An increased kurtosis (>3) can be visualized as a thin "bell" with a high peak whereas a decreased kurtosis corresponds to a broadening of the peak and "thickening" of the tails.

ऑनलाइन वैषम्यता और कुकुदता ज्ञात करने के चरण—

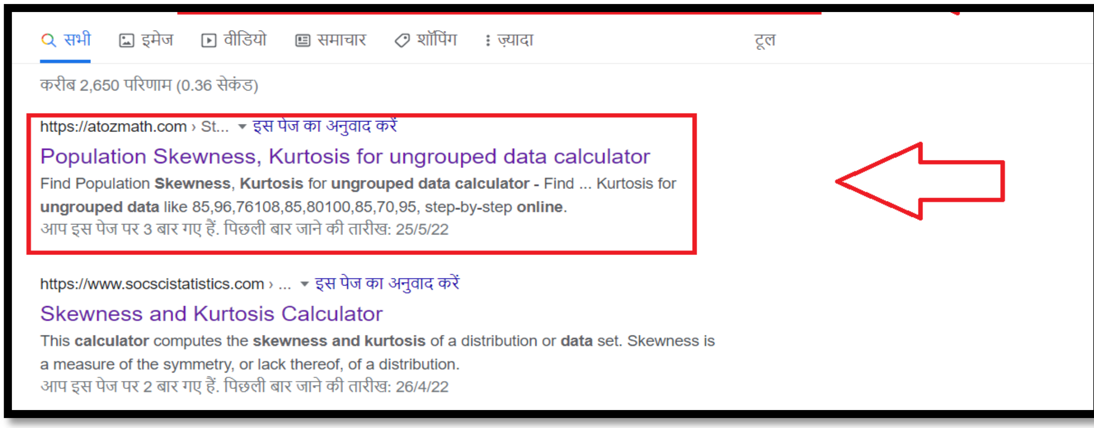
Step 1: सबसे पहले गूगल क्रोम ब्राउज़र को खोलें।



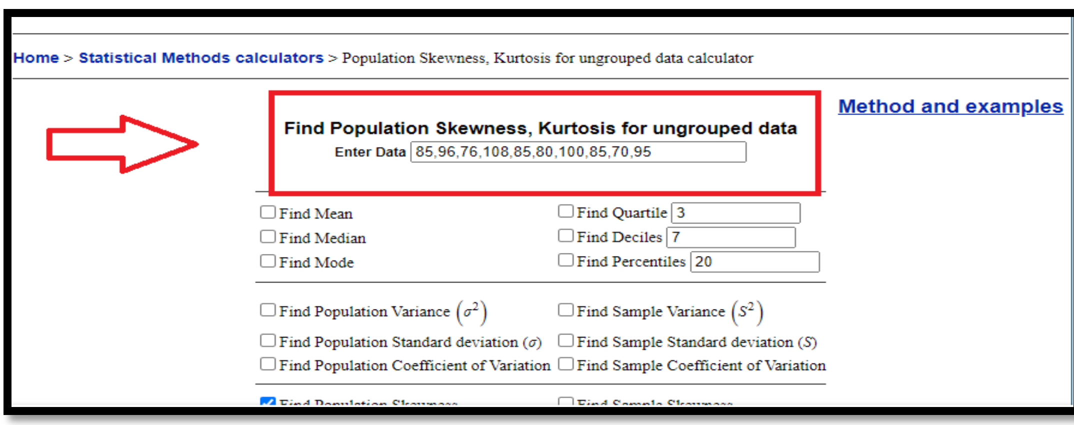
Step 2: Online Skewness and Kurtosis ungrouped data खोजें।



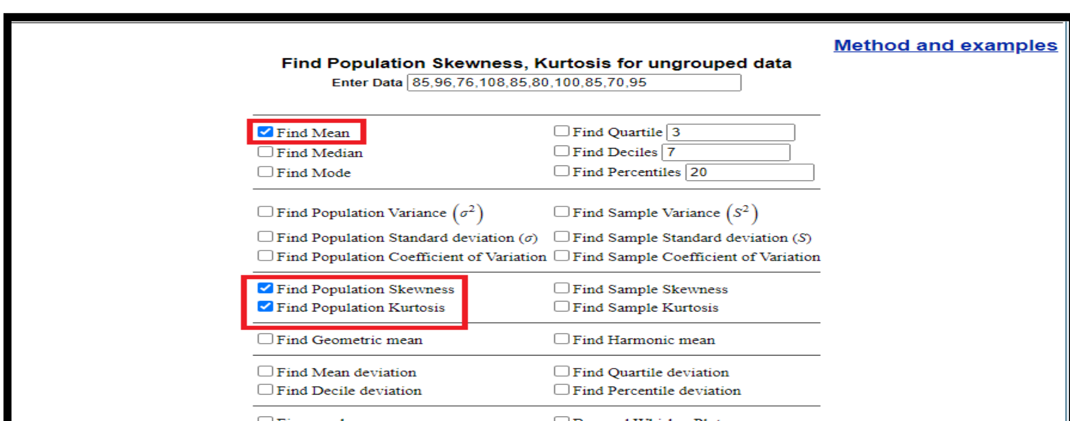
Step 3: पहले सर्च रिजल्ट (A to Z math) को खोलें।



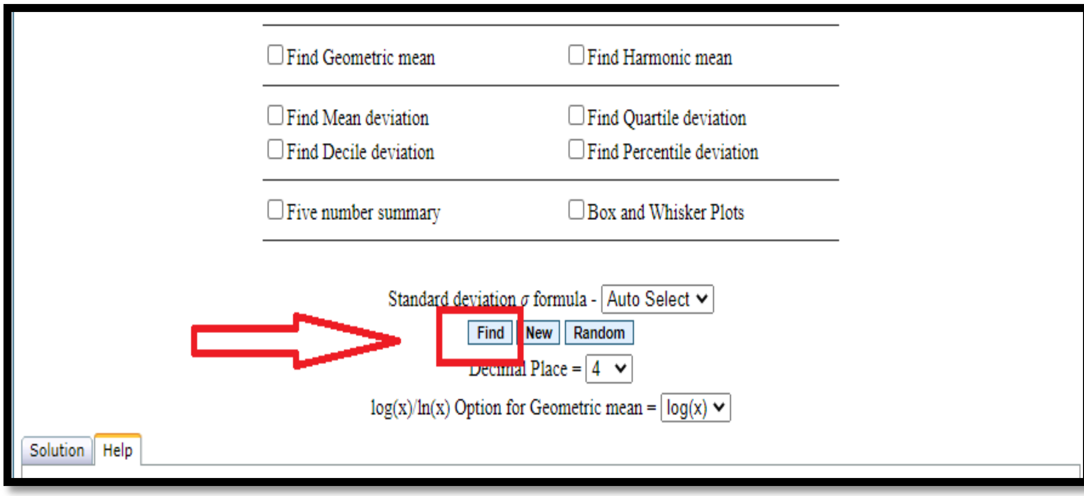
Step 4: Data enter करें।



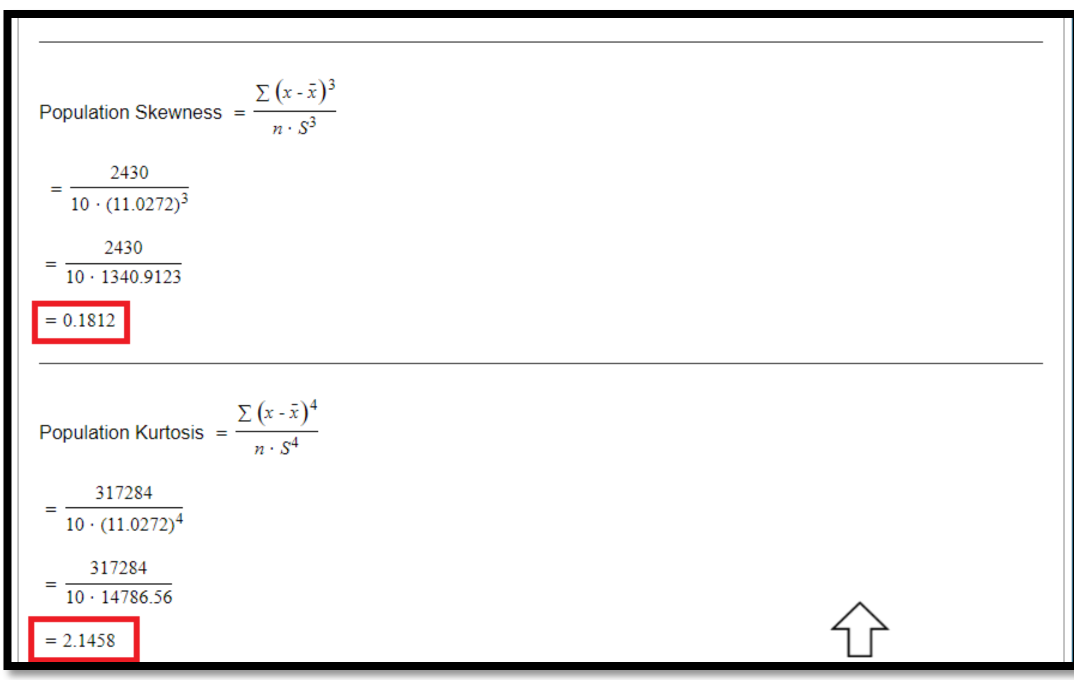
Step 5: Mean, Skewness तथा Kurtosis option को select करें।



Step 6: Find पर click करें।



Step 7: आपका Result आपके सामने Open हो जायेगा।



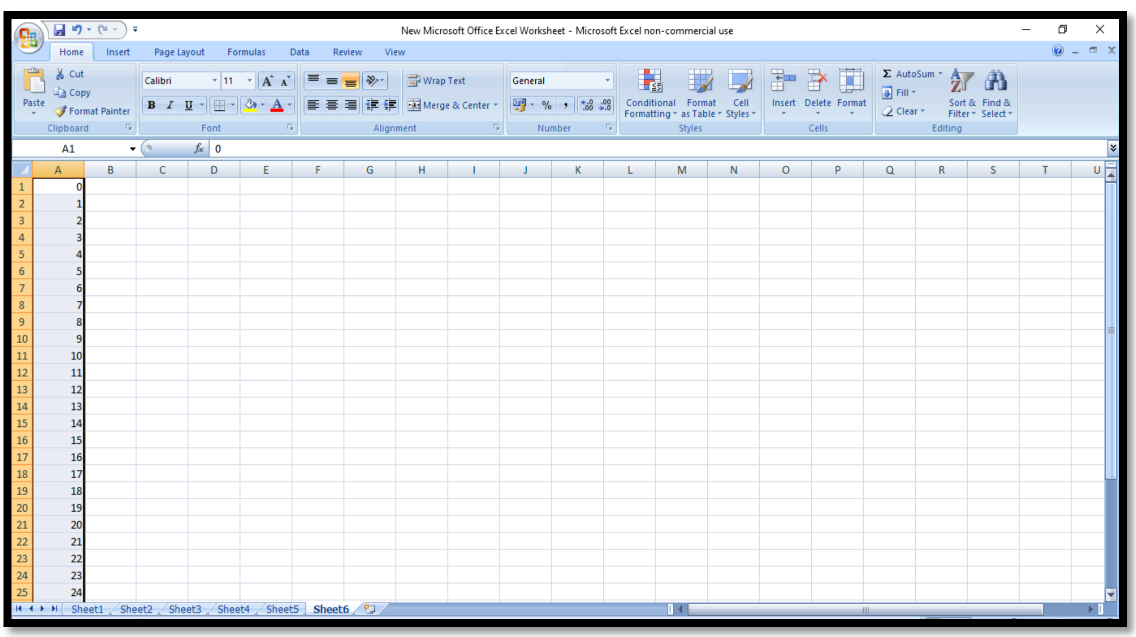
4.12.5 सामान्य सम्भाव्यता वक्र (Normal Probability Curve)

सामान्य सम्भाव्यता वक्र को सामान्य वक्र भी कहते हैं। इसका विकास 'त्रुटि के नियम' के आधार पर हुआ है। इस वक्र के जन्मदाता **ए० डी० मोरे** कहे जाते हैं। वे एक फ्रेंच गणितज्ञ थे और उन्होंने जुएं के खेल में संयोग की घटना की व्याख्या सामान्य सम्भाव्यता के आधार पर की। खगोलविद **कार्ल फ्रेडरिक गॉस** ने भी भौतिक विज्ञान में निरीक्षण सम्बन्धित त्रुटियों की व्याख्या सामान्यता के आधार पर की तथा त्रुटियों का सामान्य वक्र बनाया।

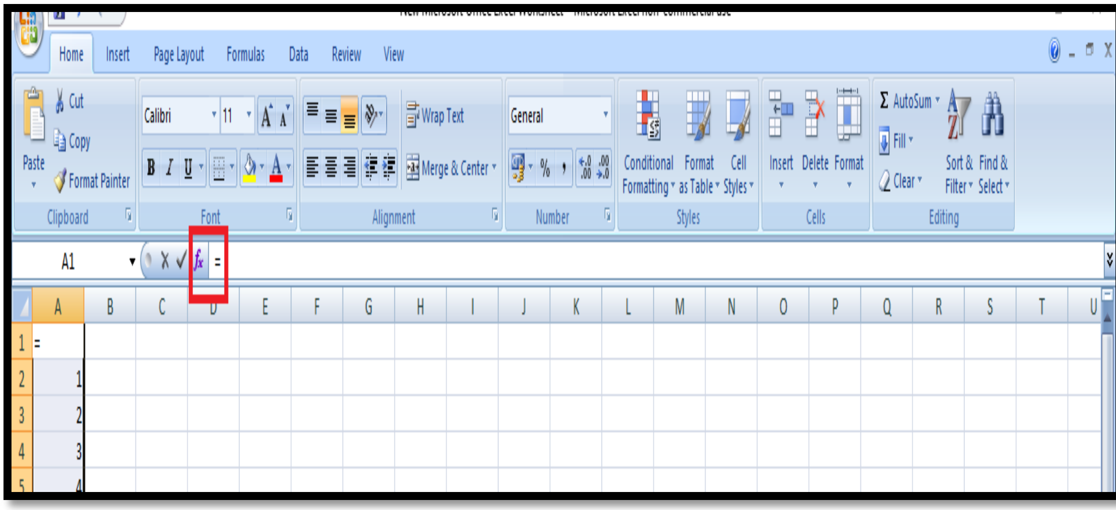
सामान्य वितरण की विशेषता यह होती है कि वितरण के मध्य में सर्वाधिक प्राप्तांक होते हैं तथा क्रमशः दोनों किनारों पर घटते जाते हैं। इसी सामान्य वितरण के आधार पर जो वक्र बनता है, उसे सामान्य वितरण वक्र या सामान्य सम्भाव्यता वक्र या सामान्य वक्र कहते हैं। यह वक्र सममित होता है तथा इसकी ऊँचाई मध्य में सर्वाधिक होती है। दोनों किनारों की ओर इसकी ऊँचाई घटती जाती है परन्तु आधार रेखा को स्पर्श नहीं करती है।

सामान्य सम्भाव्यता वक्र की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

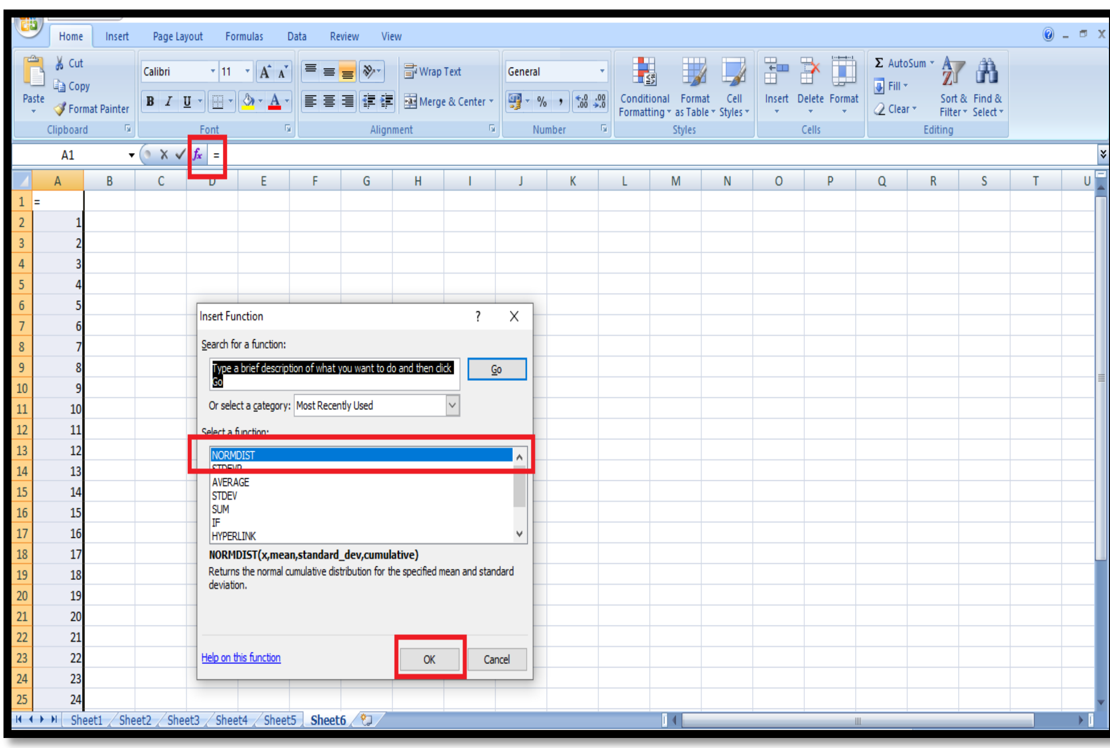
Step 1: Ms Excel में first cell lowest range से लेकर highest range तक data enter करें।



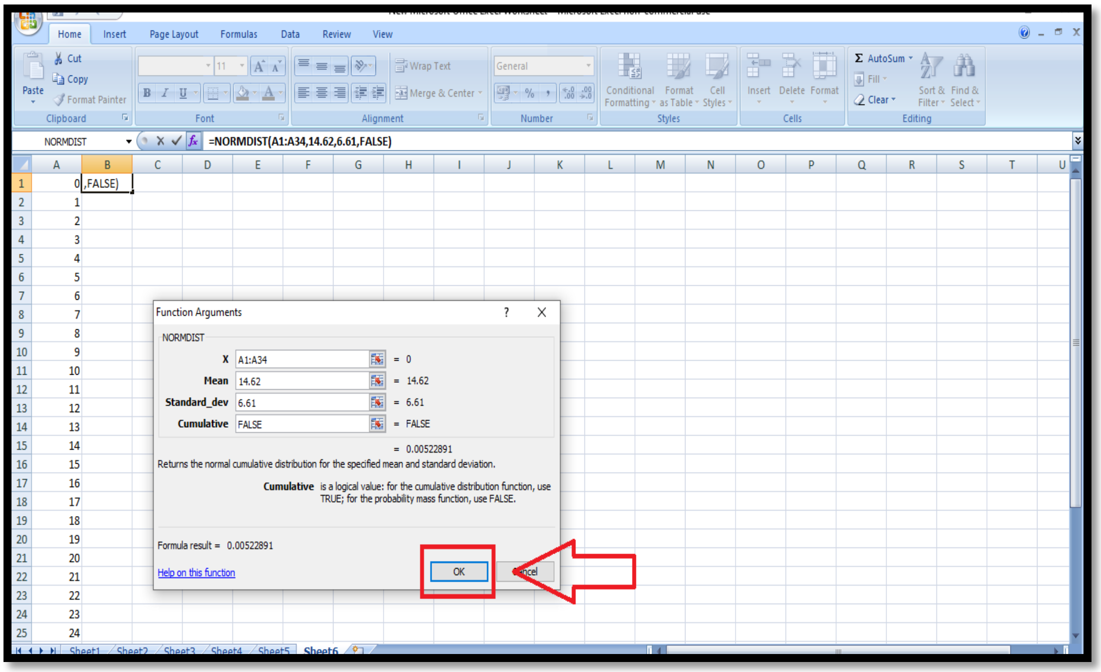
Step 2: Function option पर click करें।



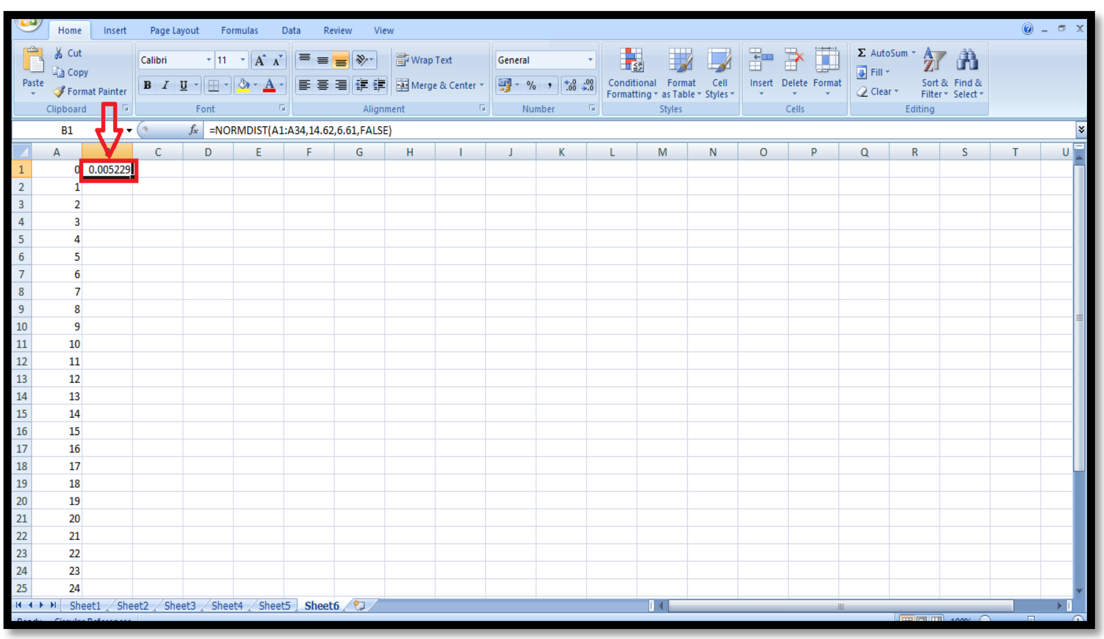
Step 3: NORMDIST को सेलेक्ट करें।



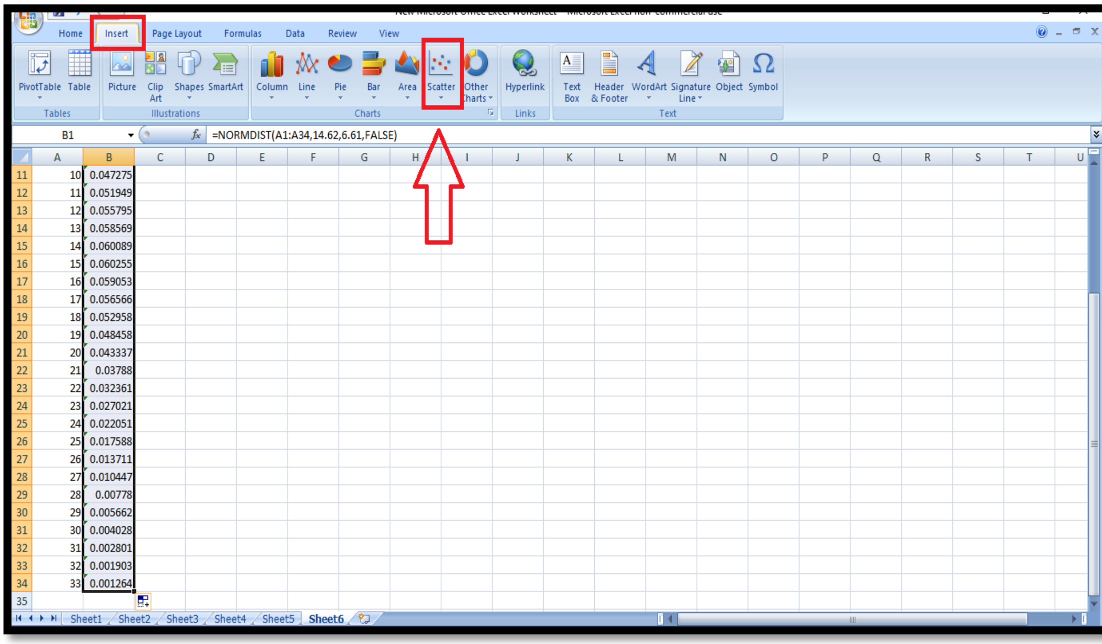
Step 4: Cell range, Mean, Standard deviation तथा Cumulative Frequency को भरें।



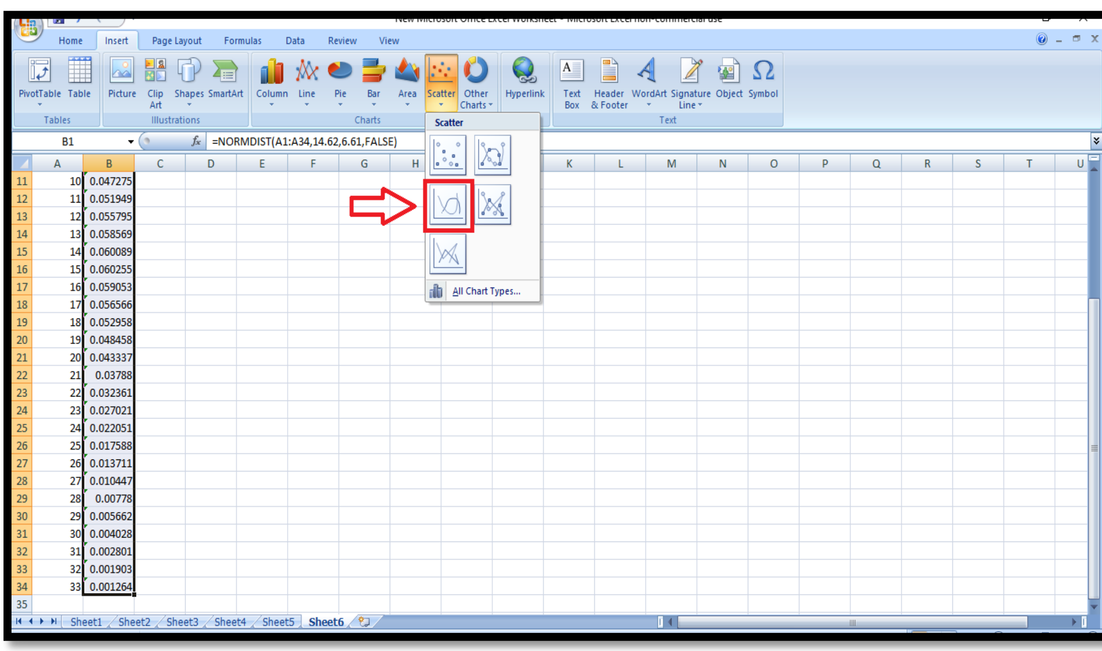
Step 5: चयनित cell तक Drag करें।



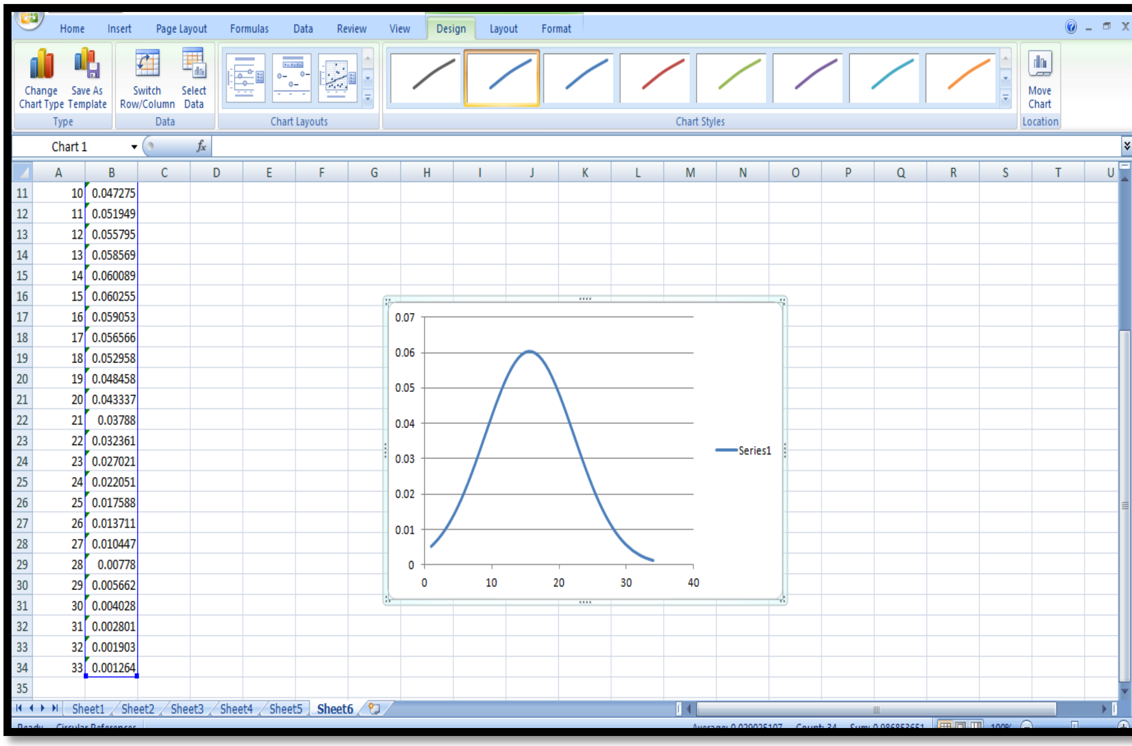
Step 6: Insert option पर जाकर Scatter को select करें।



Step 7: Scatter with smooth lines select करें।



Step 8: अब आपको NPC नजर आएगा।



4.12.6 क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio)

दो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब समूह के प्राप्तांकों की संख्या 30 या 30 से अधिक होती है। क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$t = \frac{(X_1 - X_2)}{\sqrt{\frac{(S_1)^2}{n_1} + \frac{(S_2)^2}{n_2}}}$$

जहाँ–

X_1 = पहले समूह का मध्यमान

X_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

n_1 = पहले समूह का आकार

n_2 = दूसरे समूह का आकार

S_1 = पहले समूह का प्रमाप विचलन

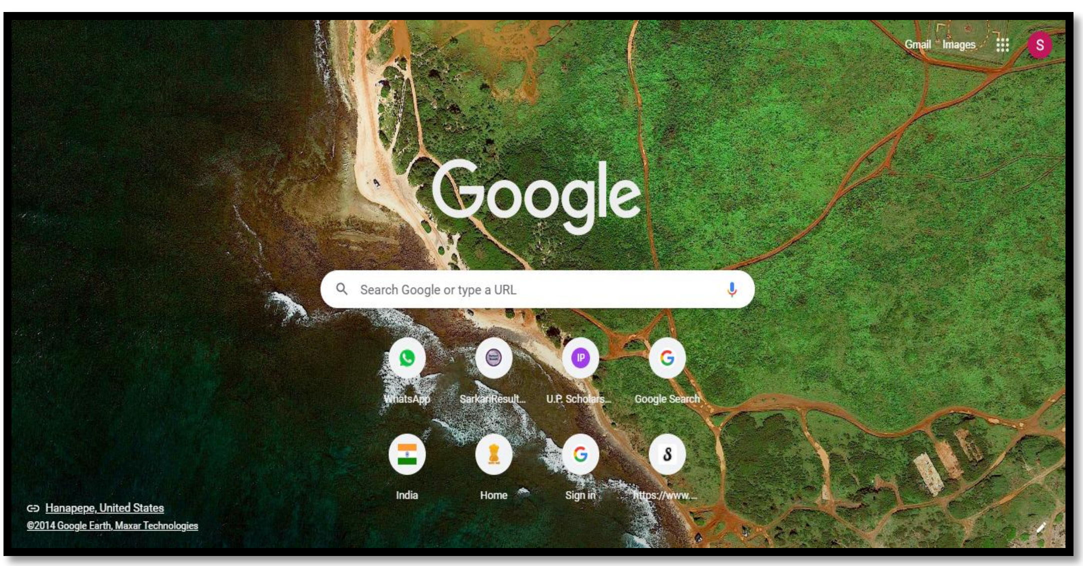
S_2 = दूसरे समूह का प्रमाप विचलन

स्वतन्त्रता की कोटि (df) को सूत्र– $df = (N_1+N_2) - 2$ द्वारा ज्ञात किया गया है। क्रान्तिक अनुपात गणना मान की सार्थकता टी- तालिका में .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान से तुलना करके ज्ञात किया जाता है।

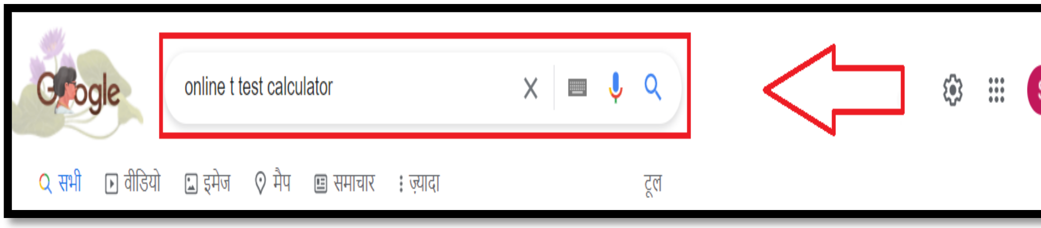
क्रान्तिक अनुपात की online गणना के चरण—

Online माध्यम से क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित चरणों में करते हैं—

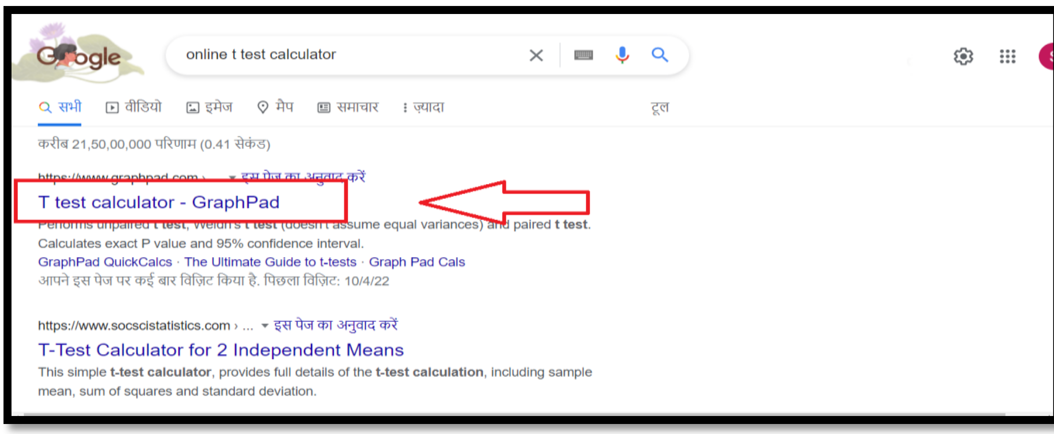
Step 1: सर्वप्रथम Google chrome browser को open करते हैं।



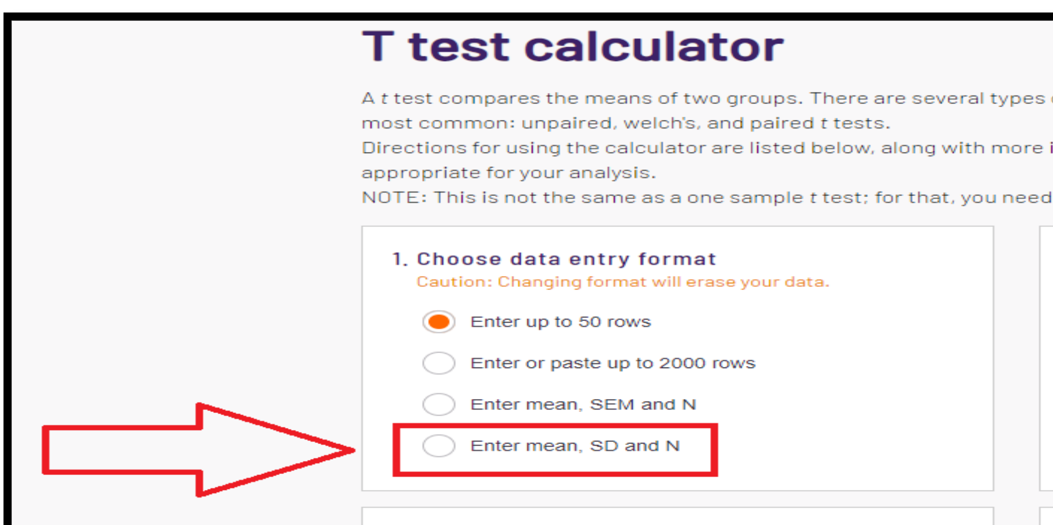
Step 2: Chrome में online t-test calculator search करते हैं।



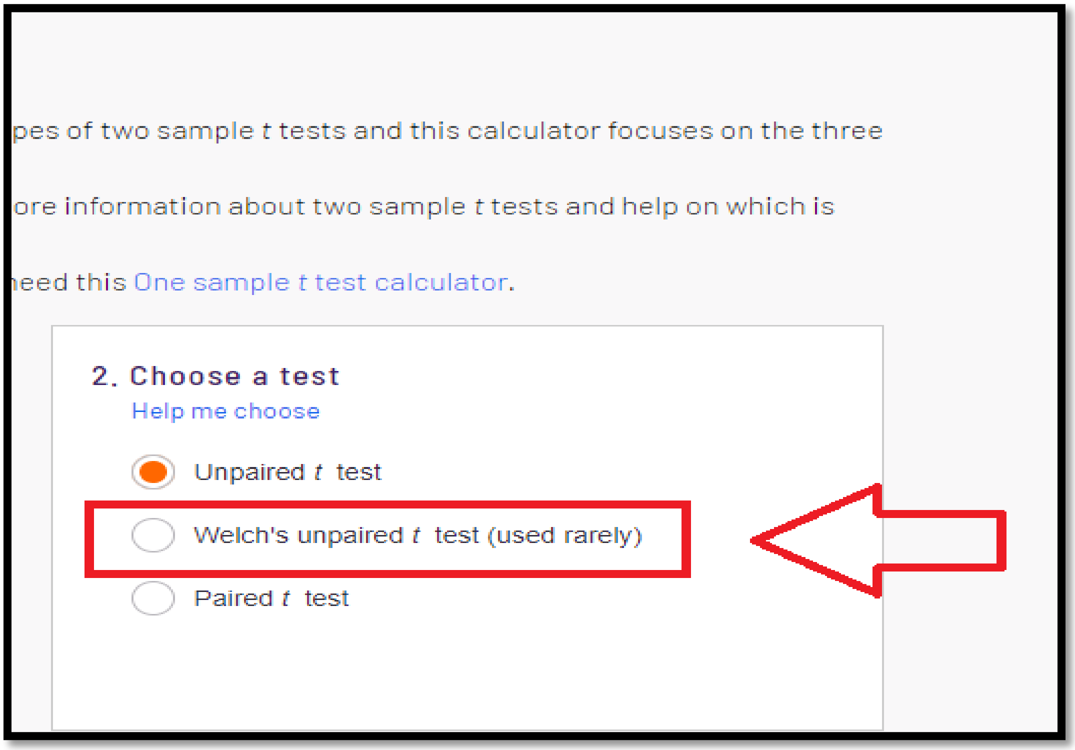
Step 3: विभिन्न search results में से प्रथम calculator (graph pad) को open करते हैं।



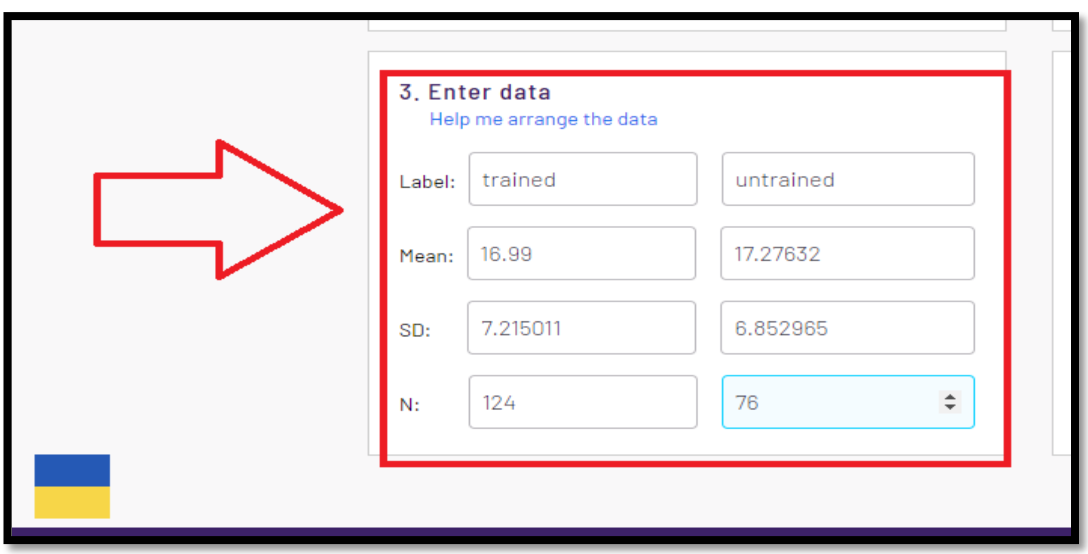
Step 4: Mean, S.D. तथा N Data fill करने वाले option पर क्लिक करते हैं।



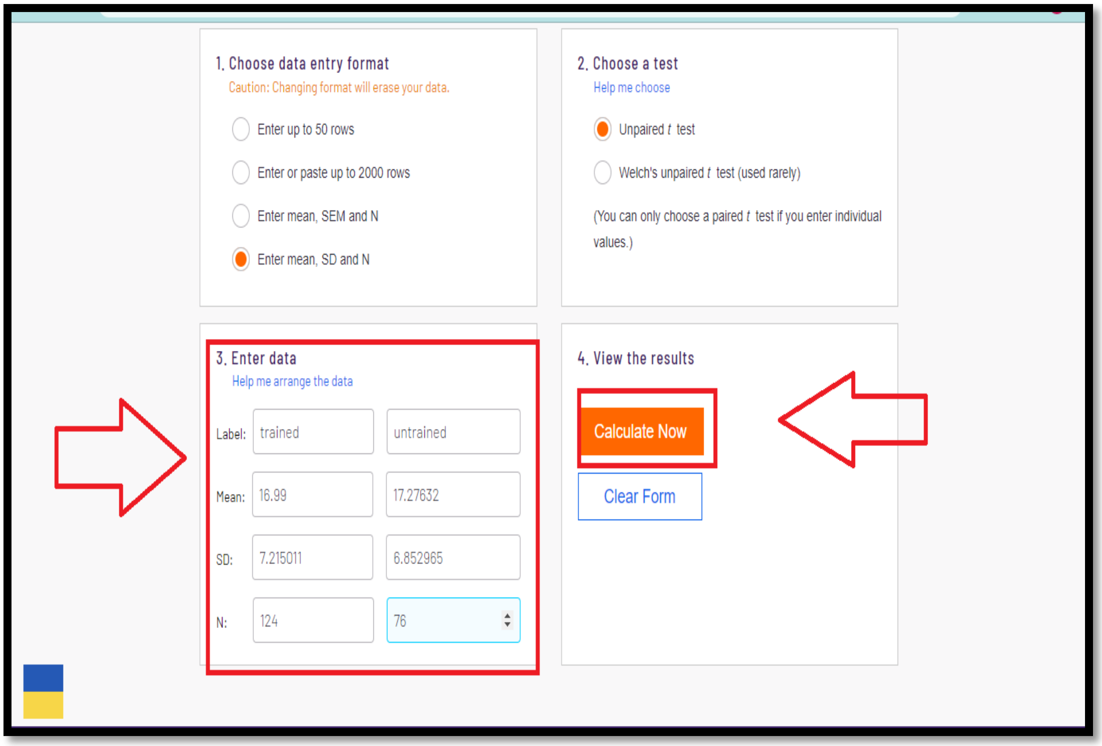
Step 5: Welch's unpaired t-test को चुनते हैं।



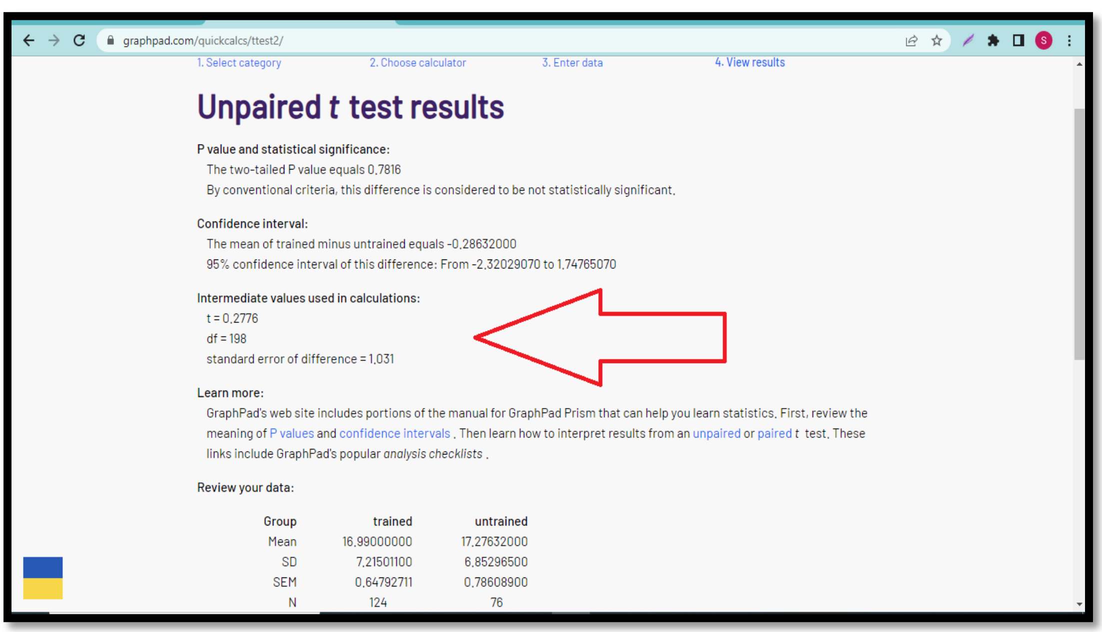
Step 6—आपके सामने data enter करने वाला option आयेगा। यहाँ पर प्रश्न में उपलब्ध data enter करते हैं। Group one में पहले समूह का data तथा Group two में दूसरे समूह का data enter करते हैं।



Step 7— परिणाम देखने के लिए calculate now पर क्लिक करते हैं।



आपका परिणाम निम्न प्रकार दिखायी देगा—



4.12.7 दण्ड आरेख (Bar Graph)

जब प्राप्त आँकड़ों को ग्राफ पेपर पर खड़े स्तम्भों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है तो उसे दण्ड आरेख या स्तम्भ आरेख कहते हैं। इसका प्रयोग सामान्यतः स्कूलों में छात्रों और शिक्षकों की संख्या और साक्षर-निरक्षरों की संख्या आदि स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। दण्ड आरेख के द्वारा दो या दो से अधिक समूहों की मध्यमान योग्यता को भी स्पष्ट किया जा सकता है। दण्ड आरेख लम्बवत या क्षैतिज किसी भी दिशा में बनाए जा सकते हैं परन्तु सामान्यतः इन्हें लम्बवत ही बनाया जाता है।

पञ्चम अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

पञ्चम अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

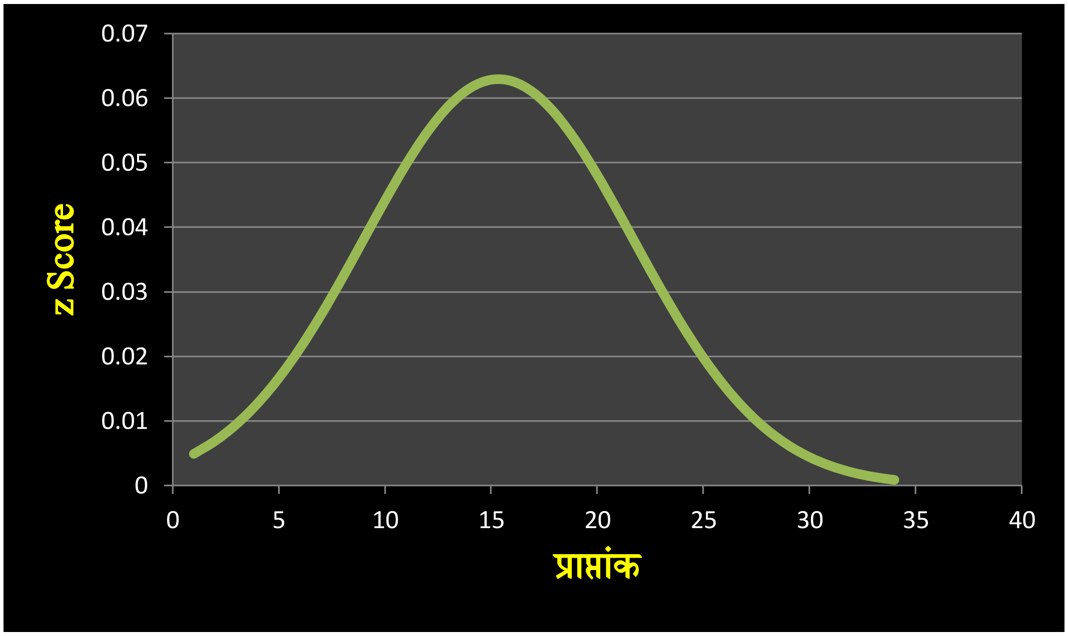
प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध-विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचन करना है। प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकी गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

5.1 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करना

तालिका संख्या 5.1

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र छात्राओं की जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
छात्र	92	15.07	14	6.11	0.9451	3.5348
छात्राएँ	108	13.79	12	6.43	1.8112	5.8531
कुल विद्यार्थी	200	14.35	13	6.34	1.3961	4.6318

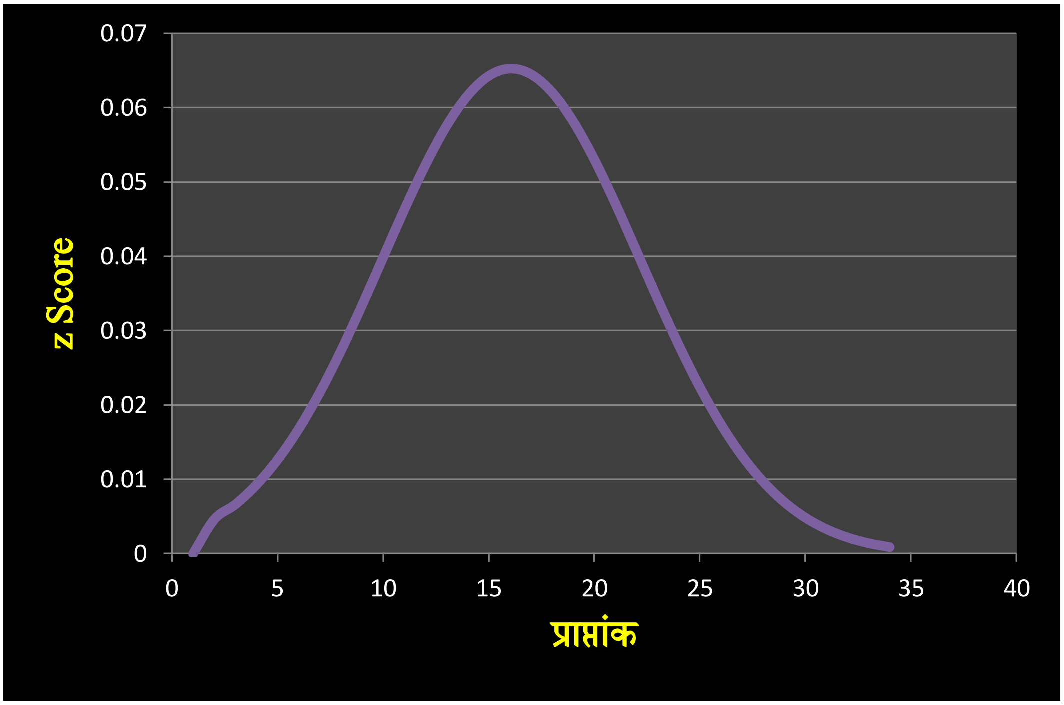


चित्र संख्या 5.1.1

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंकों के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 1.3961 है, जब वैषम्यता का मान -1 से कम या +1 से अधिक होता है, तब वितरण उच्च वैषम्य माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 4.6318 पायी गयी, जब कुकुदता का स्तर +3 या -3 से अधिक होता है, तब वितरण असामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त होने के बाद भी इकाइयों का वितरण उच्च वैषम्य तथा कुकुदता का स्तर उच्च होने के कारण वितरण असामान्य है, जो चित्र संख्या 5.1.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को यद्यपि जनसंख्या पर पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता, किन्तु इसके आधार पर जनसंख्या के विषय में अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है।

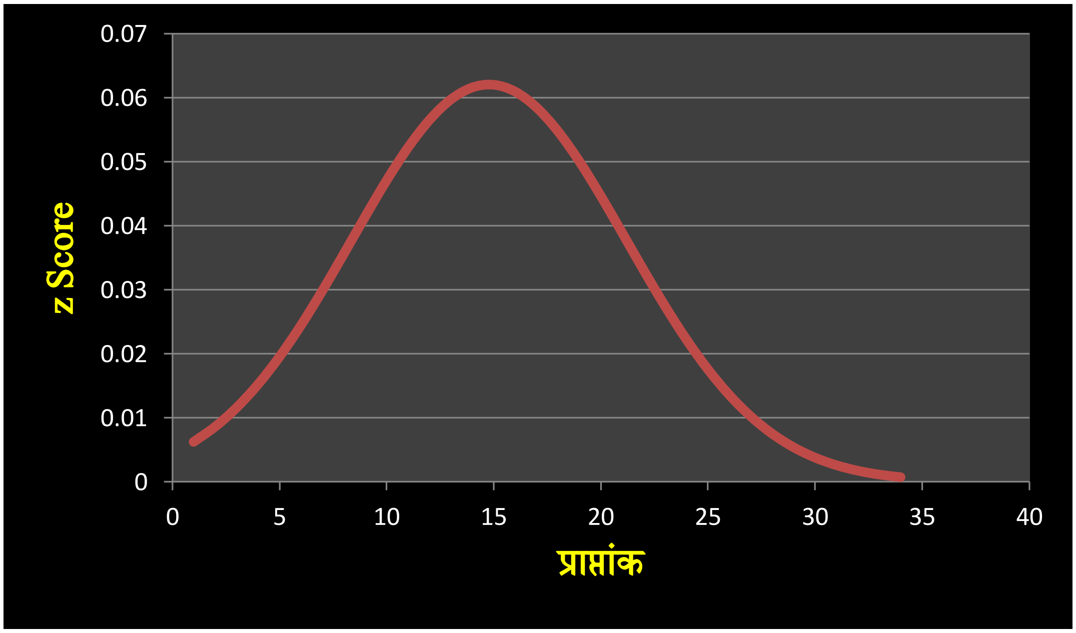


चित्र संख्या 5.1.2

छात्रों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्रों का मध्यमान 15.07 तथा प्रमाप विचलन 6.11 है। छात्रों के लिए वैषम्यता का मान 0.9451 है, जब वैषम्यता का मान 0.5 से +1 के मध्य होता है, तब वितरण मध्यम रूप से वैषम्य माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 3.5348 पायी गयी, जब कुकुदता का स्तर +3 या -3 से अधिक होता है, तब वितरण असामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल छात्रों की संख्या पर्याप्त होने के बाद भी इकाइयों का वितरण मध्यम वैषम्य तथा कुकुदता का स्तर उच्च होने के कारण वितरण असामान्य है, जो चित्र संख्या 5.1.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को यद्यपि जनसंख्या पर पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता है, किन्तु इसके आधार पर जनसंख्या के विषय में अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है।



चित्र संख्या 5.1.3

छात्राओं की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्राओं का मध्यमान 13.79 तथा प्रमाप विचलन 6.43 है। छात्राओं के लिए वैषम्यता का मान 1.8112 है, जब वैषम्यता का मान -1 से कम या +1 से अधिक होता है तब वितरण उच्च रूप से वैषम्य माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 5.8531 पायी गयी, जब कुकुदता का स्तर +3 या -3 से अधिक होता है, तब वितरण असामान्य माना जाता है।

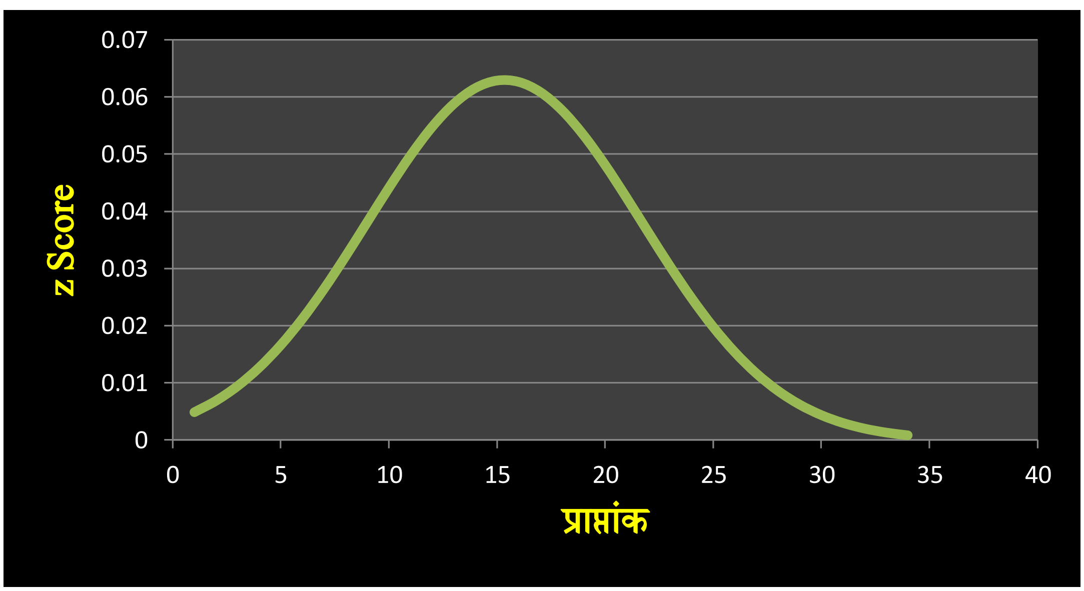
विवेचना—न्यादर्श में कुल छात्राओं की संख्या पर्याप्त होने के बाद भी इकाइयों का वितरण उच्च वैषम्य तथा कुकुदता का स्तर उच्च होने के कारण वितरण असामान्य है, जो चित्र संख्या 5.1.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को यद्यपि जनसंख्या पर पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता, किन्तु इसके आधार पर जनसंख्या के विषय में अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है।

5.2 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

तालिका संख्या 5.2

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता विश्लेषण तालिका

प्रशिक्षण स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
प्रशिक्षित विद्यार्थी	121	14.62	13	6.61	1.6352	4.7638
अप्रशिक्षित विद्यार्थी	79	13.93	13	5.88	0.8159	3.7185
कुल विद्यार्थी	200	14.35	13	6.34	1.3961	4.6318

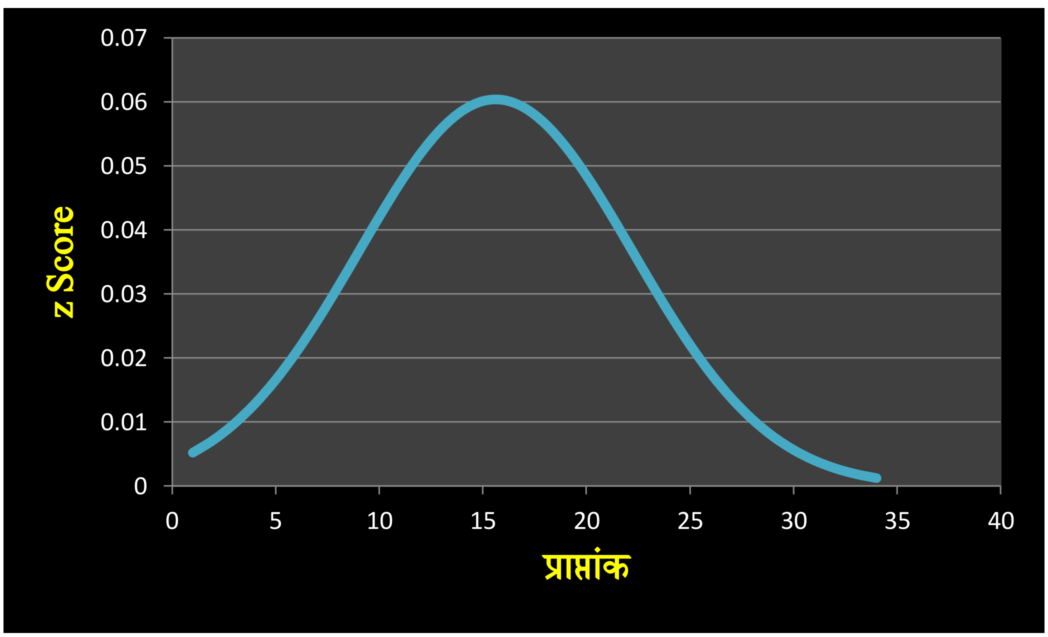


चित्र संख्या 5.2.1

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंकों के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 1.3961 है, जब वैषम्यता का मान -1 से कम या +1 से अधिक होता है तब वितरण उच्च रूप से वैषम्य माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 4.6318 पायी गयी, जब कुकुदता का स्तर +3 या -3 से अधिक होता है तब वितरण असामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त होने के बाद भी इकाइयों का वितरण उच्च वैषम्य तथा कुकुदता का स्तर उच्च होने के कारण वितरण असामान्य है, जो चित्र संख्या 5.2.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता, किन्तु इसके आधार पर जनसंख्या के विषय में अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है।

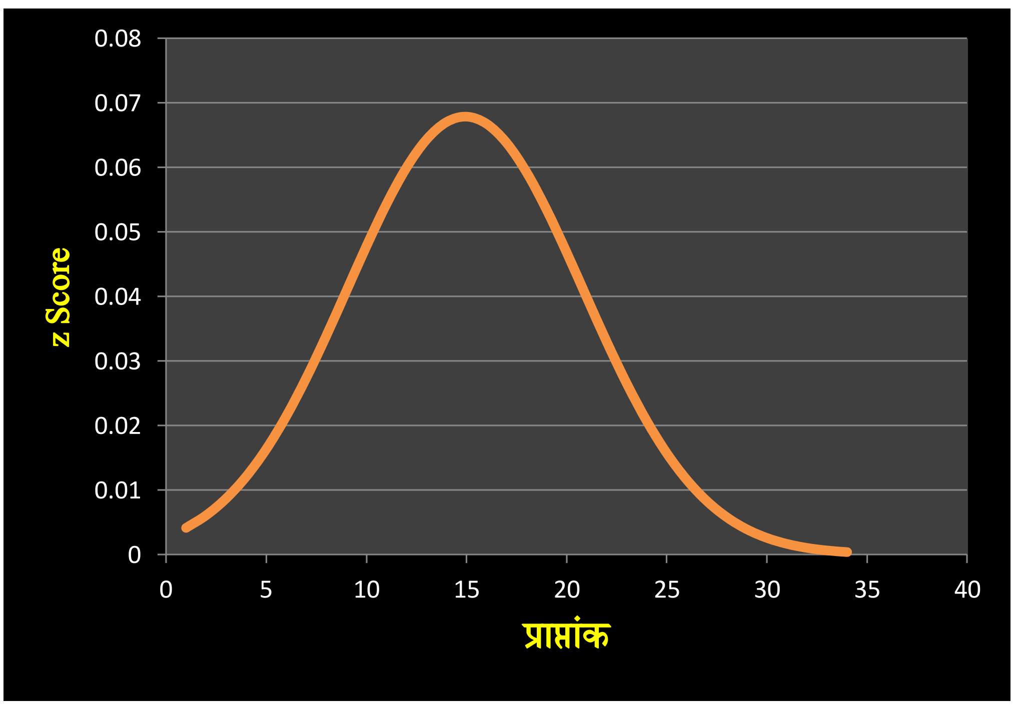


चित्र संख्या 5.2.2

प्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षित विद्यार्थियों के लिए मध्यमान 14.62, प्रमाप विचलन 6.61 तथा वैषम्यता का मान 1.6352 है, जब वैषम्यता का मान -1 से कम या +1 से अधिक होता है तब वितरण उच्च रूप से वैषम्य माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 4.7638 पायी गयी, जब कुकुदता का स्तर +3 या -3 से अधिक होता है, तब वितरण असामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में प्रशिक्षित विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर असामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, उनकी वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य से उच्च स्तर का है। इस कारण से सामान्य सम्भावना वक्र में झुकाव है, जो चित्र संख्या 5.2.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को यद्यपि जनसंख्या पर पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता, किन्तु इसके आधार पर जनसंख्या के विषय में अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है।



चित्र संख्या 5.2.3

अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के लिए मध्यमान 13.93, मानक विचलन 5.88 तथा वैषम्यता का मान 0.8159 है, जब वैषम्यता का मान 0.5 से +1 के बीच में होता है तब वितरण मध्यम रूप से वैषम्य माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के लिए कुकुदता 3.7185 पायी गयी, जब कुकुदता का स्तर + 3 या -3 से अधिक होता है, तब वितरण असामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में अप्रशिक्षित विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य नहीं है/सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, जो चित्र संख्या 5.2.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को यद्यपि जनसंख्या पर पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता, किन्तु इसके आधार पर जनसंख्या के विषय में अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है।

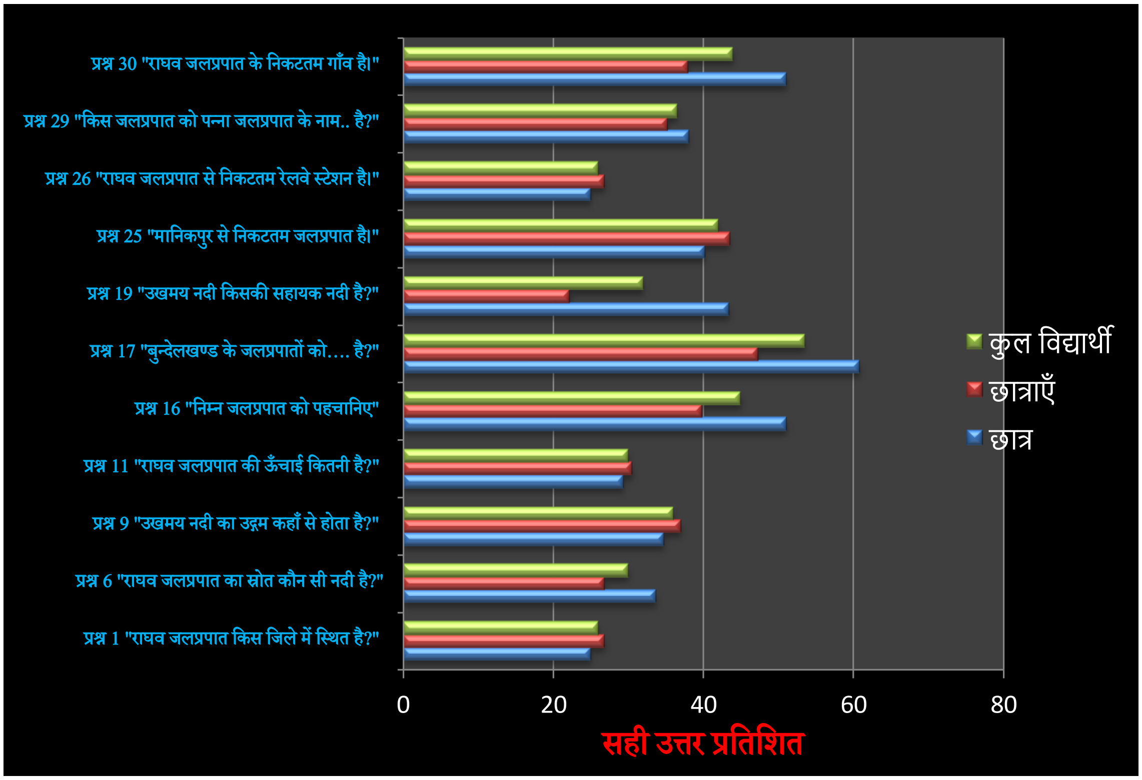
5.3 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का जलप्रपातानुसार विश्लेषण

5.3.1 राघव जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

तालिका संख्या 5.3.1.1

राघव जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका

		प्रश्न संख्या 1		प्रश्न संख्या 6		प्रश्न संख्या 9		प्रश्न संख्या 11		प्रश्न संख्या 16		प्रश्न संख्या 17		प्रश्न संख्या 19		प्रश्न संख्या 25		प्रश्न संख्या26		प्रश्न संख्या 29		प्रश्न संख्या 30	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	92	23	25%	31	33.7%	32	34.8%	27	29.3%	47	51.1%	56	60.9%	40	43.5%	37	40.2%	23	25%	35	38%	47	51.1%
छात्राएँ	108	29	26.9%	29	26.9%	40	37%	33	30.6%	43	39.8%	51	47.2%	24	22.2%	47	43.5%	29	26.9%	38	35.2%	41	38%
कुल विद्यार्थी	200	52	26%	60	30%	72	36%	60	30%	90	45%	107	53.5%	64	32%	84	42%	52	26%	73	36.5%	88	44%



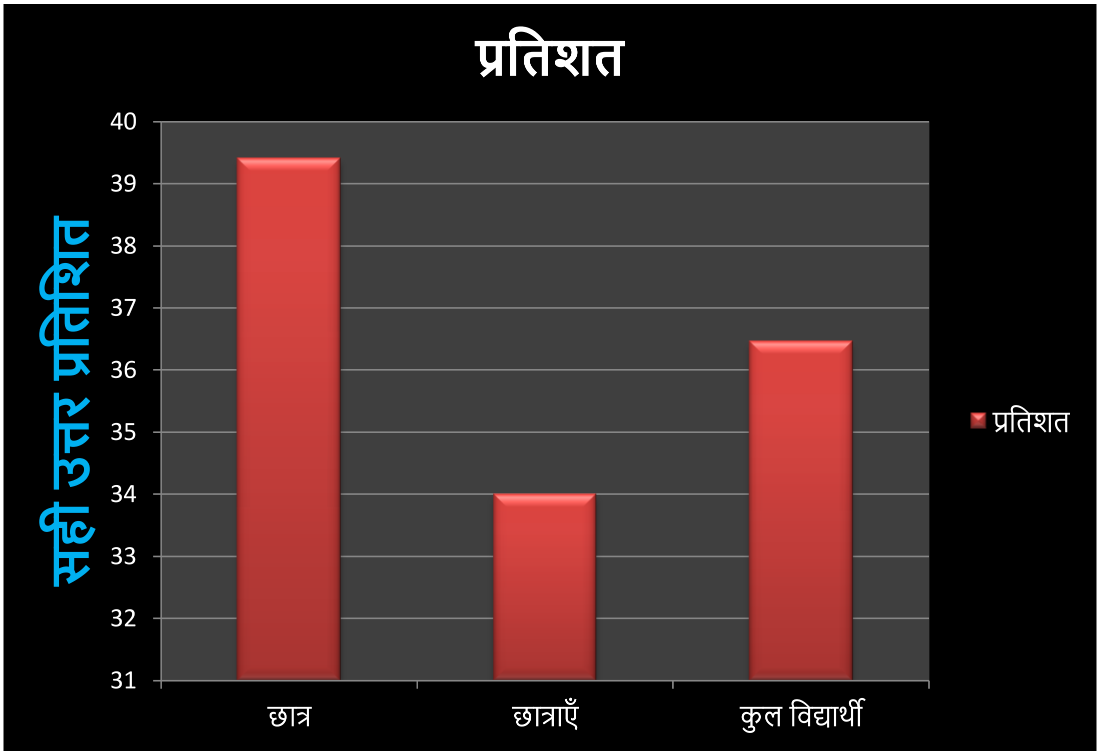
चित्र संख्या 5.3.1.1

राघव जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र

तालिका संख्या 5.3.1.2

राघव जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	N	सही उत्तर	
		M	प्रतिशत
छात्र	92	36.18	39.31%
छात्राएँ	108	36.72	34%
कुल विद्यार्थी	200	36.45	36.45%



चित्र संख्या 5.3.1.2
राघव जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.3.1.1 एवं चित्र संख्या 5.3.1.1 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि राघव जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित **प्रथम प्रश्न** "राघव जलप्रपात किस जिले में स्थित है?" के प्रति 25% छात्र, 26.85% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप **से 26% विद्यार्थी जागरूक हैं।** प्रश्न संख्या 6 "राघव जलप्रपात का स्रोत कौन सी नदी है?" के प्रति 33.69% छात्र, 26.85% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से कुल 30% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 9 "उखमय नदी का उद्गम कहाँ से होता है?" के प्रति 34.78% छात्र, 37.03% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 36% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 11 "राघव जलप्रपात की ऊँचाई कितनी है?" के प्रति 29.34% छात्र, 30.55% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 30% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 16 "निम्न जलप्रपात को पहचानिए—" के प्रति 51.08% छात्र, 39.81% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 45% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 17 "बुन्देलखण्ड के जलप्रपातों को देखने का सबसे अच्छा समय है—" के प्रति 60.86% छात्र, 47.22%

छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 53.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 19 "उखमय नदी किसकी सहायक नदी है?" के प्रति 43.47% छात्र, 22.22% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 32% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 25 "मानिकपुर से निकटतम जलप्रपात है।" के प्रति 40.21% छात्र, 43.51% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 42% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 26 "राघव जलप्रपात से निकटतम रेलवे स्टेशन है।" के प्रति 25% छात्र, 26.85 प्रतिशत छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 26% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 29 "किस जलप्रपात को पन्ना जलप्रपात के नाम से जाना जाता है?" के प्रति 38.04% छात्र, 35.38% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 36.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 30 "राघव जलप्रपात के निकटतम गाँव है।" के प्रति 51.08% छात्र, 37.96% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 44% विद्यार्थी ही जागरूक हैं।

तालिका संख्या 5.3.1.2 एवं चित्र संख्या 5.3.1.2 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि **राघव जल प्रपात** के प्रति औसत रूप से 39.31% छात्र, 34% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से **36.45% विद्यार्थी जागरूक** हैं।

विवेचना—तालिका संख्या 5.3.1.1 एवं चित्र संख्या 5.3.1.1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि **राघव जलप्रपात की स्थिति**, उसकी ऊँचाई तथा उसके निकटतम रेलवे स्टेशन के विषय में मात्र **एक-चौथाई विद्यार्थी ही जागरूक हैं। इससे यह पता चलता है कि अधिकांश विद्यार्थी कभी इस जलप्रपात को देखने के लिए नहीं गए। इसका कारण यह हो सकता है कि अधिकांश लोगों को इस जलप्रपात के विषय में जानकारी नहीं है।** राघव जलप्रपात किस नदी पर बनता है?, उस नदी का उद्गम कहाँ से होता है?, यह किस प्रमुख नदी की सहायक नदी है? तथा राघव जलप्रपात को क्षेत्रीय लोग किस नाम से जानते हैं? इन सब बातों की जानकारी मात्र एक-तिहाई विद्यार्थियों को ही है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश विद्यार्थियों में क्षेत्रीय भौगोलिकता के ज्ञान की कमी है। इसका कारण पाठ्यक्रम में क्षेत्रीय भौगोलिकता से सम्बन्धित प्रकरणों को अपेक्षित महत्व न दिया जाना हो सकता है। राघव जलप्रपात के चित्र को लगभग आधे छात्र पहचानते हैं जबकि एक-तिहाई छात्राएँ ही इसे पहचानती हैं। इसका कारण छात्रों में घुमक्कड़ प्रवत्ति का अधिक होना हो सकता है जबकि छात्राओं के लिए यह स्थल दुर्गम है। इस कारण अधिकाश छात्राएँ इस चित्र

को नहीं पहचान सकीं। बुन्देलखण्ड के जलप्रपातों को देखने का सबसे अच्छा समय वर्षा ऋतु होता है, इस बात की जानकारी लगभग आधे से अधिक विद्यार्थियों को है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने अपने सामान्य ज्ञान का उपयोग करते हुए इस प्रश्न का सही विकल्प चुना है। मानिकपुर से निकटतम रेलवे स्टेशन, राघव जलप्रपात के निकटतम गाँव के विषय में एक-तिहाई से कुछ अधिक विद्यार्थी ही जागरूक हैं। इससे यह पता चलता है कि अधिकांश विद्यार्थी इन स्थलों पर नहीं गए हैं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वर्तमान समय में अधिकांश विद्यार्थी प्राकृतिक एवं भौगोलिक महत्व के स्थानों से दूर होते जा रहे हैं, और वे अपना अधिकतर समय मोबाइल तथा कम्प्यूटर में व्यतीत कर रहे हैं।

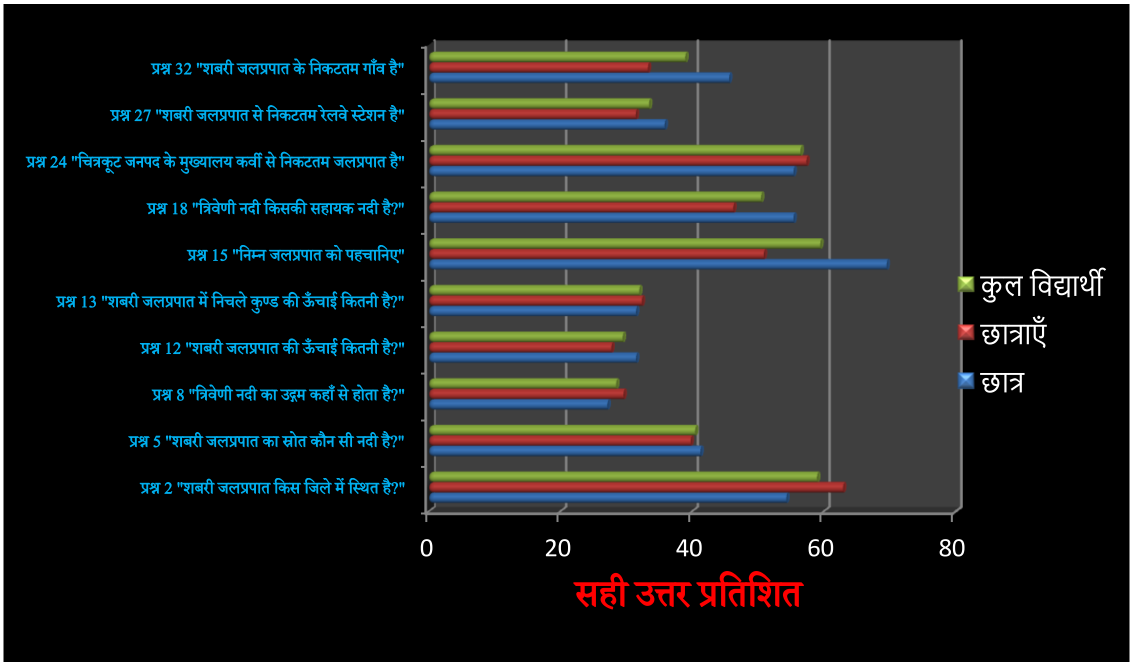
तालिका संख्या 5.3.1.2 एवं चित्र संख्या 5.3.1.2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि **राघव जलप्रपात के विषय में अधिकांश विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर अत्यन्त निम्न है। मात्र एक-तिहाई से कुछ अधिक विद्यार्थी ही राघव जलप्रपात के विषय में जागरूक हैं।**

5.3.2 शबरी जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

तालिका संख्या 5.3.2.1

शबरी जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका

		प्रश्न संख्या 2		प्रश्न संख्या 5		प्रश्न संख्या 8		प्रश्न संख्या 12		प्रश्न संख्या 13		प्रश्न संख्या 15		प्रश्न सख्या 18		प्रश्न संख्या 24		प्रश्न संख्या 27		प्रश्न संख्या 32	
	N	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	92	50	54.3%	38	41.3%	25	27.2%	29	31.5%	29	31.5%	64	69.6%	51	55.4%	51	55.4%	33	35.9%	42	45.7%
छात्राएँ	108	68	63%	43	39.8%	32	29.6%	30	27.8%	35	32.4%	55	51%	50	46.3%	62	57.4%	34	31.5%	36	33.3%
कुल विद्यार्थी	200	118	59%	81	40.5%	57	28.5%	59	29.5%	64	32%	119	59.5%	101	50.5%	113	56.5%	67	33.5%	78	39%



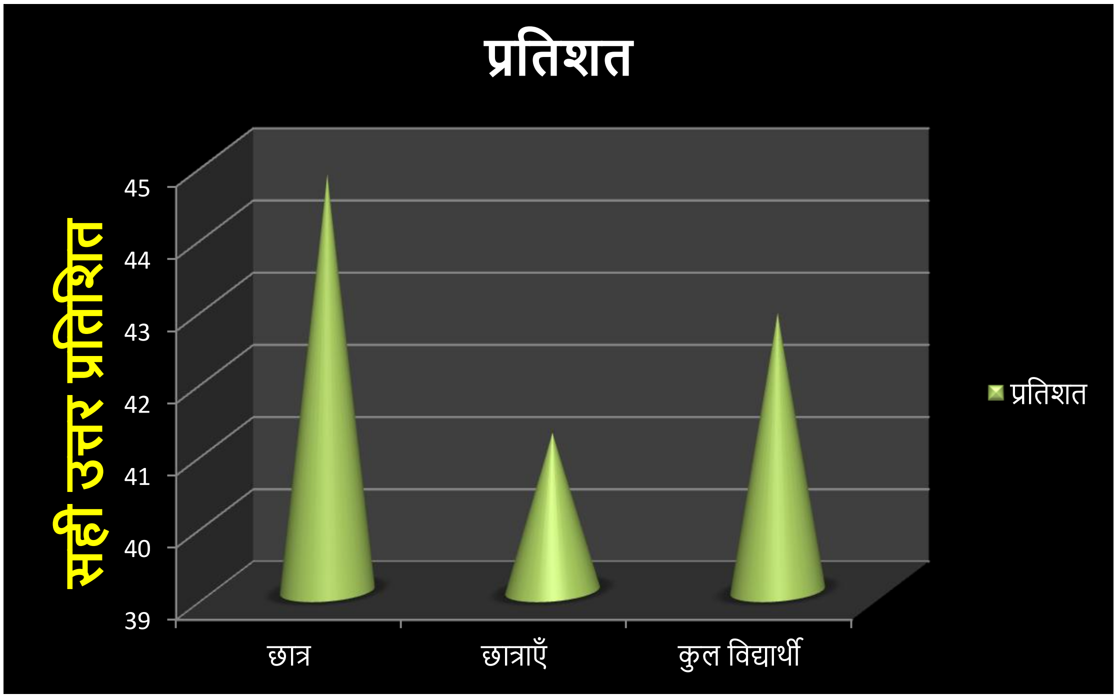
चित्र संख्या 5.3.2.1

शबरी जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र

तालिका संख्या 5.3.2.2

शबरी जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	N	सही उत्तर	
		M	प्रतिशत
छात्र	92	41.2	44.77%
छात्राएँ	108	44.5	41.19%
कुल विद्यार्थी	200	42.75	42.85%



चित्र संख्या 5.3.2.2

शबरी जलप्रपात के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.3.2.1 एवं चित्र संख्या 5.3.2.1 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि प्रश्न संख्या 2 "शबरी जलप्रपात किस जिले में स्थित है?" के प्रति 54.34% छात्र, 62.96% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 59% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 5 "शबरी जलप्रपात का स्रोत कौन सी नदी है?" के प्रति 41.30% छात्र, 39.81% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 40.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। **प्रश्न संख्या 8** "त्रिवेणी नदी का उद्गम कहाँ से होता है?" के प्रति 27.17% छात्र, 29.62% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से **28.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं।** प्रश्न संख्या 12 "शबरी जलप्रपात की ऊँचाई कितनी है?" के प्रति 31.52% छात्र, 27.77% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 29.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 13 "शबरी जलप्रपात में निचले कुण्ड की ऊँचाई कितनी है?" के प्रति 31.52% छात्र, 32.40% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 32% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 15 "निम्न जलप्रपात को पहचानिए—" के प्रति 69.56% छात्र, 50.92% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 59.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 18 "त्रिवेणी नदी

किसकी सहायक नदी है?" के प्रति 55.43% छात्र, 46.29% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 50.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 24 "चित्रकूट जनपद के मुख्यालय कर्वी से निकटतम जलप्रपात है—" के प्रति 55.43% छात्र, 57.40% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 56.5% विद्यार्थी ही जागरुक है। प्रश्न संख्या 27 "शबरी जलप्रपात से निकटतम रेलवे स्टेशन है—" के प्रति 35.86% छात्र, 31.48% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 33.5% विद्यार्थी भी जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 32 "शबरी जलप्रपात के निकटतम गाँव है—" के प्रति 45.65% छात्र, 33.33% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 39% विद्यार्थी ही जागरूक हैं।

तालिका संख्या 5.3.2.1 एवं चित्र संख्या 5.3.2.1 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि **शबरी जलप्रपात के प्रति औसत रूप से 44.77% छात्र, 41.19% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 42.85% विद्यार्थी जागरूक हैं।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.3.2.1 एवं चित्र संख्या 5.3.2.1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शबरी जलप्रपात की स्थिति, उसके चित्र, त्रिवेणी नदी किसकी सहायक नदी है? तथा चित्रकूट जनपद के मुख्यालय कर्वी से निकटतम जलप्रपात कौन सा है? इन तथ्यों के विषय में लगभग आधे से अधिक विद्यार्थी जागरूक हैं। इससे यह पता चलता है कि अधिकांश विद्यार्थी कभी ना कभी शबरी जलप्रपात में घूमने के लिए गये हैं अथवा यहाँ घूमकर आये हुए लोगों से इसके विषय में कुछ न कुछ सुना है। इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि पिछले कुछ वर्षों में शबरी जलप्रपात एक पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित हुआ है तथा बहुत अधिक संख्या में लोग यहाँ घूमने के लिए आते हैं। शबरी जलप्रपात का जल स्रोत कौन सी नदी है? तथा उसके निकटतम गाँव कौन सा है? इस बात की जानकारी आधे से भी कम विद्यार्थियों को है। इससे यह पता चलता है कि विद्यार्थी यहाँ मात्र घूमने तथा मनोरञ्जन के उद्देश्य से आते हैं, अपनी क्षेत्रीय भौगोलिकता के विषय में जानकारी एकत्रित करने तथा अपनी भौगोलिक विरासतों को जानने में उनकी बहुत अधिक रुचि नहीं है। अतः भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण प्रकरणों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए जिससे छात्र इनके विषय में अध्ययन करें और ज्ञान में वृद्धि करें। **त्रिवेणी नदी का उद्गम कहाँ से होता है?,** शबरी जलप्रपात की ऊँचाई कितनी है? तथा शबरी जलप्रपात में निचले कुण्ड की ऊँचाई कितनी है? इन बातों के **विषय में मात्र एक-तिहाई विद्यार्थी ही जागरूक हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अपनी क्षेत्रीय**

भौगोलिक विरासतों के प्रति विद्यार्थियों का तथ्यात्मक ज्ञान अति निम्न स्तर का है। इसका कारण यह हो सकता है कि शबरी जलप्रपात में प्रपात से सम्बन्धित जानकारी को दर्शाता हुआ कोई भी बोर्ड नहीं है तथा जोखिम के कारण लोगों को प्रपात के इतना नजदीक नहीं जाने दिया जाता है कि वे स्वयं इन प्रपातों की ऊँचाई ज्ञात कर सकें। शबरी जलप्रपात के निकटतम रेलवे स्टेशन कौन सा है? इस बात की जानकारी मात्र एक-तिहाई विद्यार्थियों को है। इससे यह पता चलता है यहाँ आने वाले अधिकांश लोग रेलमार्ग से यहाँ नहीं आते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि शबरी जलप्रपात के निकटतम रेलवे स्टेशन 'टिकरिया' एक छोटा स्टेशन है। यहाँ से होकर जाने वाली अधिकांश एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव यहाँ नहीं है। मात्र कुछ पैसेन्जर ट्रेनें ही इस स्टेशन में रुकती हैं। इस कारण शबरी जलप्रपात आने वाले अधिकांश लोग सड़क मार्ग से यहाँ पहुँचते हैं। अतः वे टिकरिया स्टेशन के विषय में परिचित नहीं हैं।

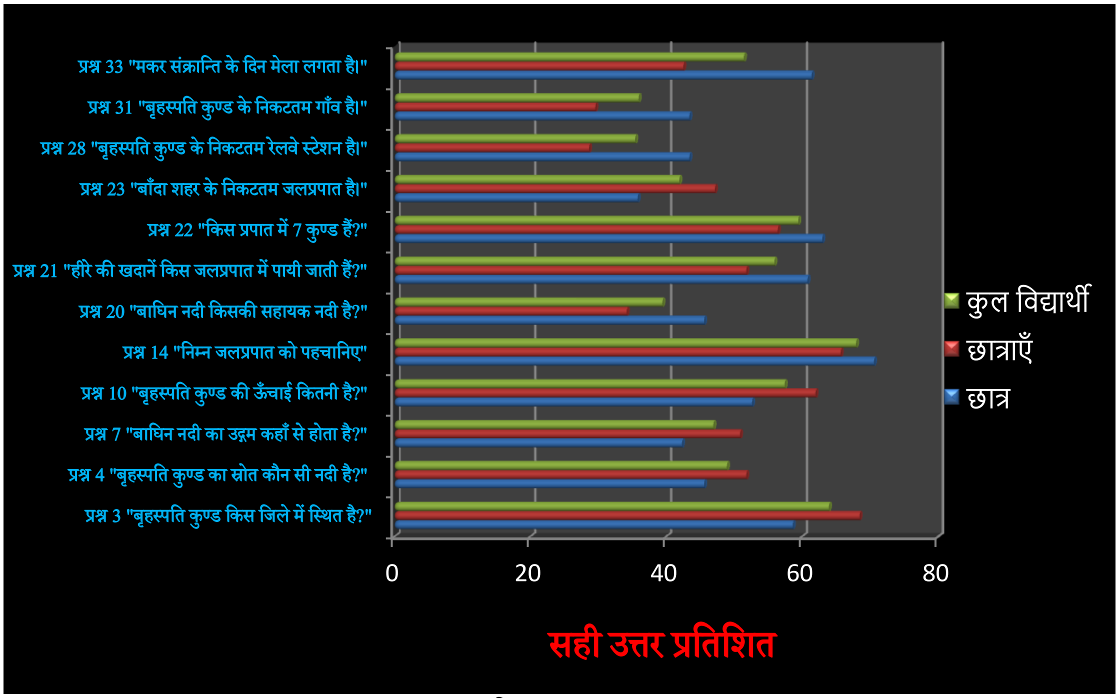
तालिका संख्या 5.3.2.2 एवं चित्र संख्या 5.3.2.2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि **शबरी जलप्रपात के विषय में अधिकांश विद्यार्थियों में जागरूकता का स्तर निम्न है। मात्र आधे से कुछ अधिक विद्यार्थी शबरी जलप्रपात के विषय में जागरूक हैं।**

5.3.3 बृहस्पति कुण्ड के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

तालिका संख्या 5.3.3.1

बृहस्पति कुण्ड के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता की प्रश्नवार विश्लेषण तालिका

	N	प्रश्न संख्या 3		प्रश्न संख्या 4		प्रश्न संख्या 7		प्रश्न संख्या 10		प्रश्न संख्या 14		प्रश्न संख्या 20		प्रश्न संख्या 21		प्रश्न संख्या 22		प्रश्न संख्या 23		प्रश्न संख्या 28		प्रश्नसंख्या 31		प्रश्न संख्या 33	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	92	54	58.7%	42	45.5%	39	42.4%	48	52.2%	65	70.7%	42	45.7%	56	60.9%	58	63%	33	35.9%	40	43.5%	40	43.5%	57	62%
छात्राएँ	108	74	68.5%	56	51.9%	55	50.9%	67	62%	71	65.7%	37	34.3%	56	51.9%	61	56.5%	51	47.2%	31	28.7%	32	29.6%	46	42.6%
कुल विद्यार्थी	200	128	64%	98	49%	94	47%	115	57.5%	136	68%	79	39.5%	112	56%	119	59.5%	84	42%	71	35.5%	72	36%	103	51.5%



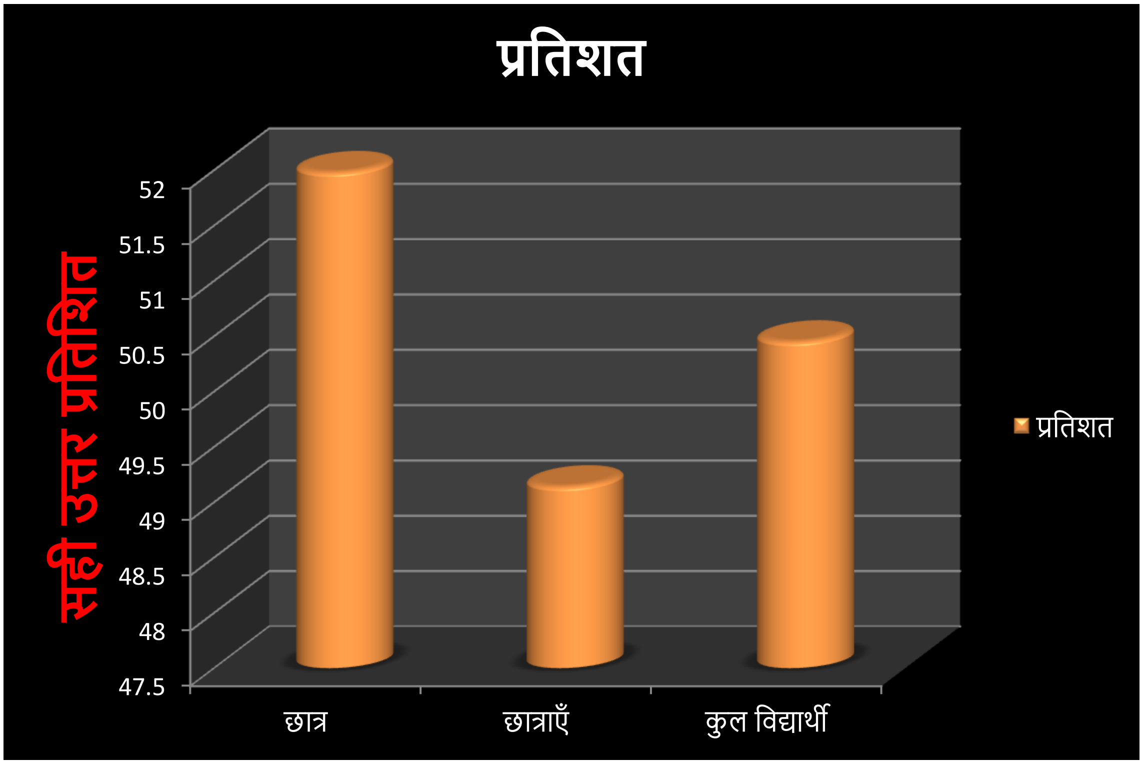
चित्र संख्या 5.3.3.1

बृहस्पति कुण्ड के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण रेखा-चित्र

तालिका संख्या 5.3.3.2

बृहस्पति कुण्ड के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की समग्र जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	N	सही उत्तर	
		M	प्रतिशत
छात्र	92	47.83	51.98%
छात्राएँ	108	53.08	49.14%
कुल विद्यार्थी	200	50.45	50.45%



चित्र संख्या 5.3.3.2

बृहस्पति कुण्ड के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का समग्र जागरूकता विश्लेषण रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.3.3.1 एवं चित्र संख्या 5.3.3.1 के विश्लेषण से पता चलता है कि प्रश्न संख्या 3 "बृहस्पति कुण्ड किस जिले में स्थित है?" के प्रति 58.69% छात्र, 68.51% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 64% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। **प्रश्न संख्या 4** "बृहस्पति कुण्ड का स्रोत कौन सी नदी है?" के प्रति 45.65% छात्र, 51.85% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 49% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 7 "बाघिन नदी का उद्गम कहाँ से होता है?" के प्रति 42.39% छात्र, 50.92% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 47% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 10 "बृहस्पति कुण्ड की ऊँचाई कितनी है?" के प्रति 52.17% छात्र, 62.03% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 57.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। **प्रश्न संख्या 14** "निम्न जलप्रपात को पहचानिए—" के प्रति 70.65% छात्र, 65.74% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से **68% विद्यार्थी ही जागरूक**

हैं। प्रश्न संख्या 20 "बाघिन नदी किसकी सहायक नदी है?" के प्रति 45.65% छात्र, 34.25% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 39.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 21 "हीरे की खदानें किस जलप्रपात में पायी जाती हैं?" के प्रति 60.86% छात्र, 51.85% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 56% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 22 "किस प्रपात में 7 कुण्ड हैं?" के प्रति 63.04% छात्र, 56.48% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 59.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 23 "बाँदा शहर के निकटतम जलप्रपात है।" के प्रति 35.86% छात्र, 47.22% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 42% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 28 "बृहस्पति कुण्ड के निकटतम रेलवे स्टेशन है।" के प्रति 43.47% छात्र, 28.70% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 35.5 विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 31 "बृहस्पति कुण्ड के निकटतम गाँव है।" के प्रति 43.47% छात्र, 29.62% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 36% विद्यार्थी ही जागरूक हैं। प्रश्न संख्या 33 "मकर संक्रान्ति के दिन मेला लगता है।" के प्रति 61.95% छात्र, 42.59% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 51.5% विद्यार्थी ही जागरूक हैं।

तालिका संख्या 5.3.3.2 एवं चित्र संख्या 5.3.3.2 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि **बृहस्पति कुण्ड के प्रति औसत रूप से 51.98% छात्र, 49.14% छात्राएँ तथा सामूहिक रूप से 50.45% विद्यार्थी जागरूक हैं।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.3.3.1 एवं चित्र संख्या 5.3.3.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि **बृहस्पति कुण्ड की स्थिति तथा चित्र को लगभग दो-तिहाई विद्यार्थी पहचानते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की जागरूकता का यह स्तर सन्तोषजनक है। इसका कारण यह हो सकता है कि अधिकांश विद्यार्थी कभी न कभी इस जलप्रपात को देखने के लिए गए हैं अथवा अन्य किसी माध्यम से उन्होंने बृहस्पति कुण्ड के विषय में सुना है।** बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात की ऊँचाई, यहाँ हीरे की खदानों का पाया जाना, इस प्रपात में कुण्डों की कुल संख्या तथा यहाँ पर मकर संक्रान्ति के दिन मेले का आयोजन होना, इन तथ्यों के विषय में आधे से अधिक विद्यार्थी जागरूक हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इस जलप्रपात के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का स्तर सामान्य है। इसका कारण यह हो सकता है कि यह जलप्रपात बुन्देलखण्ड

क्षेत्र का सबसे ऊँचा जलप्रपात है। वर्षा ऋतु में इस प्रपात की सुन्दरता सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है जिस कारण लोगों के मन में यहाँ आने तथा इसके विषय में जानने की उत्सुकता रहती है। बहुत सारे लोग अपने पूरे परिवार के साथ यहाँ घूमने के लिए आते हैं। बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात किस नदी पर बनता है? तथा इस नदी का उद्गम कहाँ से होता है? इसके विषय में लगभग आधे से कुछ कम विद्यार्थी जागरूक हैं। इससे यह पता चलता है कि विद्यार्थियों में उपर्युक्त तथ्यों के प्रति जागरूकता का स्तर निम्न है। इसका कारण यह हो सकता है कि लोगों का यहाँ आने का उद्देश्य मात्र मनोरञ्जन एवं घूमना होता है न कि इन स्थलों के विषय में जानकारी प्राप्त करना। बाघिन नदी किसकी सहायक है?, बाँदा शहर के निकटतम जलप्रपात कौन सा है?, बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात के निकटतम रेलवे स्टेशन तथा बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात के निकटतम गाँव, इन बातों से लगभग एक-तिहाई से कुछ अधिक विद्यार्थी ही परिचित हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों में जागरूकता का स्तर निम्न है। इन तथ्यों के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में भी काफी अन्तर देखने को मिलता है। लगभग आधे छात्रों को उपर्युक्त तथ्यों की जानकारी है जबकि एक-तिहाई से भी कुछ कम छात्राओं को ही इन तथ्यों का ज्ञान है।

तालिका संख्या 5.3.3.2 एवं चित्र संख्या 5.3.3.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि **बृहस्पति कुण्ड के विषय में विद्यार्थियों का जागरूकता स्तर सामान्य है। लगभग आधे विद्यार्थी बृहस्पति कुण्ड के विषय में जागरूक हैं।**

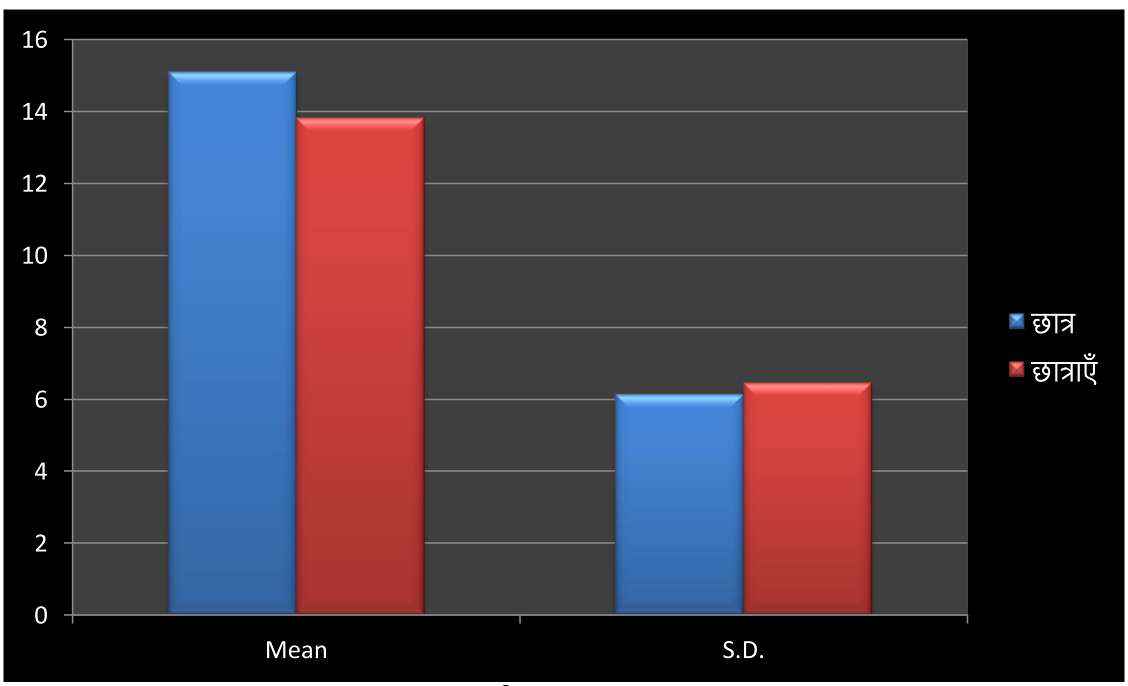
5.4 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.4

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	92	15.07	6.11	1.4414	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है।
छात्राएँ	108	13.79	6.43				

df=198



चित्र संख्या 5.4

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन छात्रों का मध्यमान 15.07 तथा महाविद्यालयीन छात्राओं का मध्यमान 13.79 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 1.414 है जो कि स्वतन्त्रांश 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.962 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की **जागरूकता का स्तर समान है।** छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं।

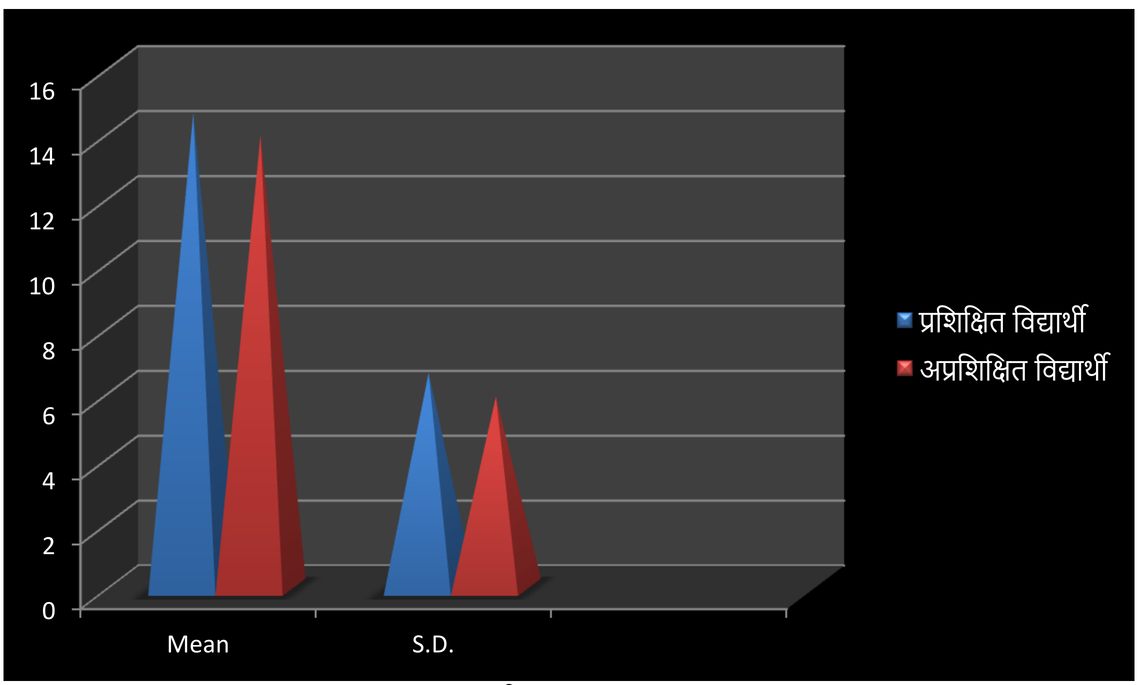
5.5 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.5

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
प्रशिक्षित विद्यार्थी	121	14.62	6.61	0.7721	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
अप्रशिक्षित विद्यार्थी	79	13.93	5.88				

df=198



चित्र संख्या 5.5

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन प्रशिक्षित विद्यार्थियों का मध्यमान 14.62 एवं मानक विचलन 6.61 है तथा महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित विद्यार्थियों का मध्यमान 13.93 एवं मानक विचलन 5.88 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 0.7721 है, जो कि स्वतन्त्रांश 198 के लिए, 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.962 से काफी कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की **जागरूकता का स्तर समान** है। अतः प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थी समान रूप से जागरूक हैं।

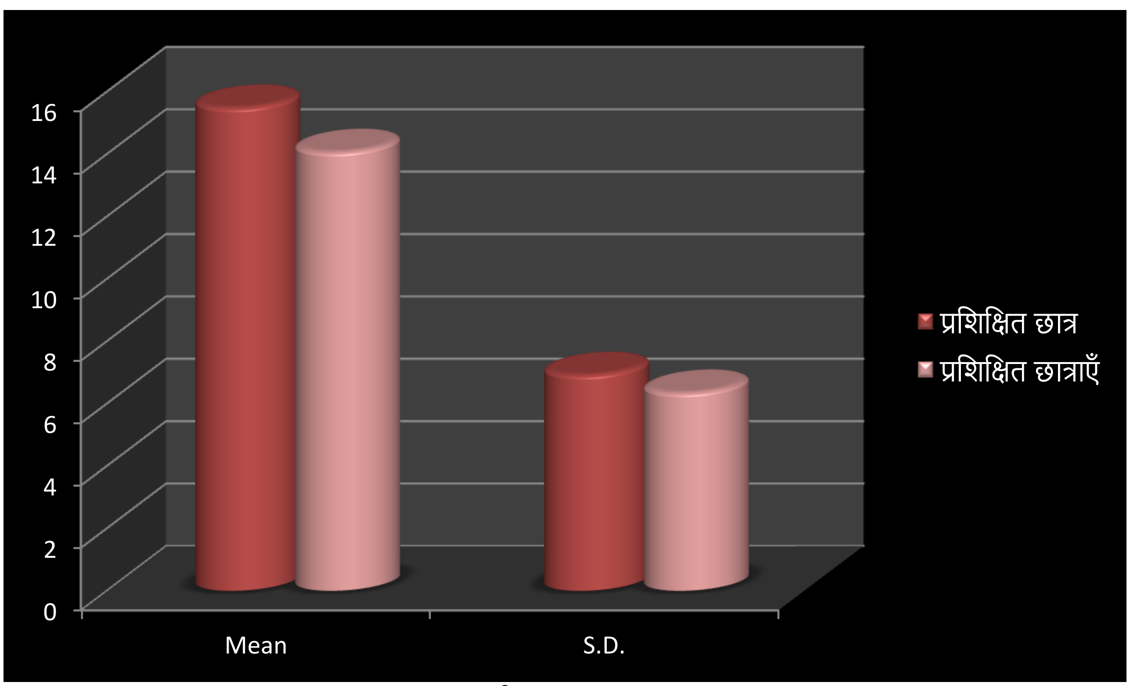
5.6 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.6

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान(M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
प्रशिक्षित छात्र	47	15.49	6.92	1.1355	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
प्रशिक्षित छात्राएँ	74	14.07	6.35				

df=119



चित्र संख्या 5.6

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन प्रशिक्षित छात्रों का मध्यमान 15.49 तथा मानक विचलन 6.92 है तथा महाविद्यालयीन प्रशिक्षित छात्राओं का मध्यमान 14.07 एवं मानक विचलन 6.35 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 1.1355 है, जो कि स्वतन्त्रांश 119 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.962 से काफी कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की **जागरूकता का स्तर समान है।**

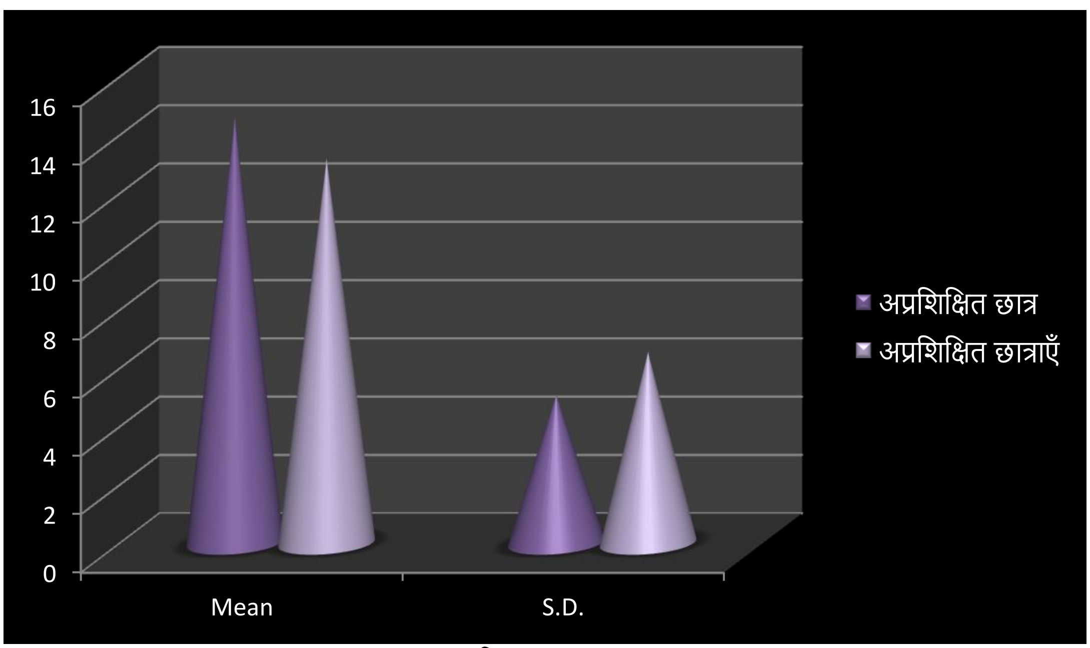
5.7 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.7

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
अप्रशिक्षित छात्र	45	14.62	5.10	1.0384	1.990	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
अप्रशिक्षित छात्राएँ	34	13.21	6.56				

df=77



चित्र संख्या 5.7

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित छात्रों का मध्यमान 14.62 तथा मानक विचलन 5.10 है तथा महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित छात्राओं का मध्यमान 13.21 तथा मानक विचलन 6.56 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 1.0384 है जो कि स्वतन्त्रांश 77 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.990 से काफी कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की **जागरूकता का स्तर समान** है।

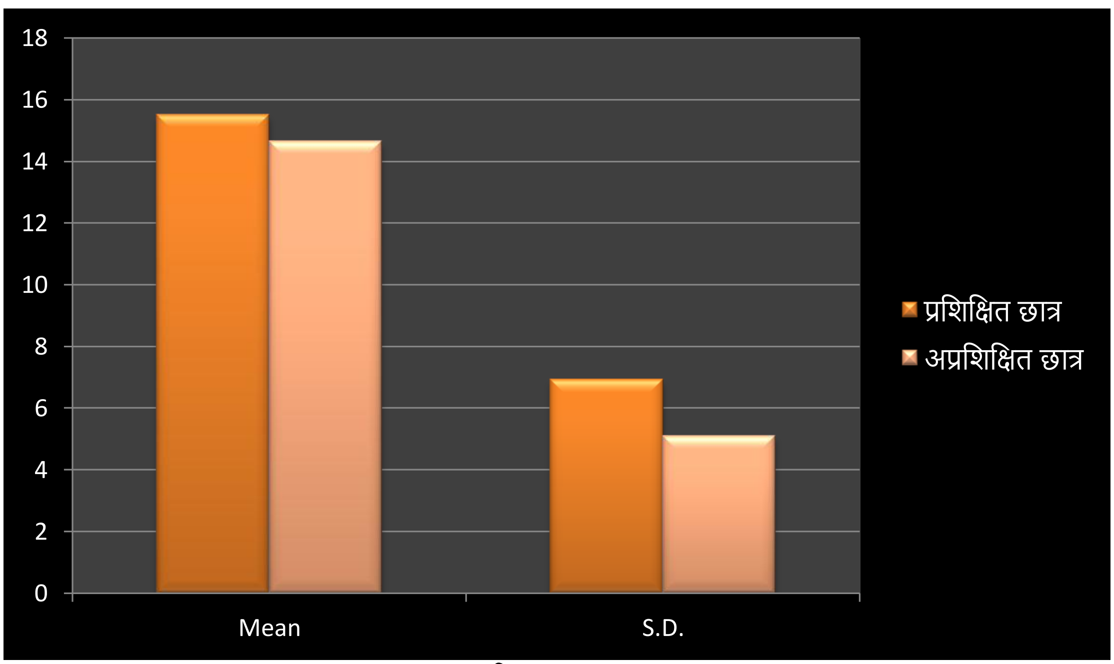
5.8 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.8

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
प्रशिक्षित छात्र	47	15.49	6.92	0.6885	1.990	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
अप्रशिक्षित छात्र	45	14.62	5.10				

df=90



चित्र संख्या 5.8

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन प्रशिक्षित छात्रों का मध्यमान 15.49 तथा मानक विचलन 6.92 है तथा महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित छात्रों का मध्यमान 14.62 तथा मानक विचलन 5.10 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 0.6885 है जो कि स्वतन्त्रांश 90 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.990 से काफी कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना "**बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की **जागरूकता का स्तर समान है।**

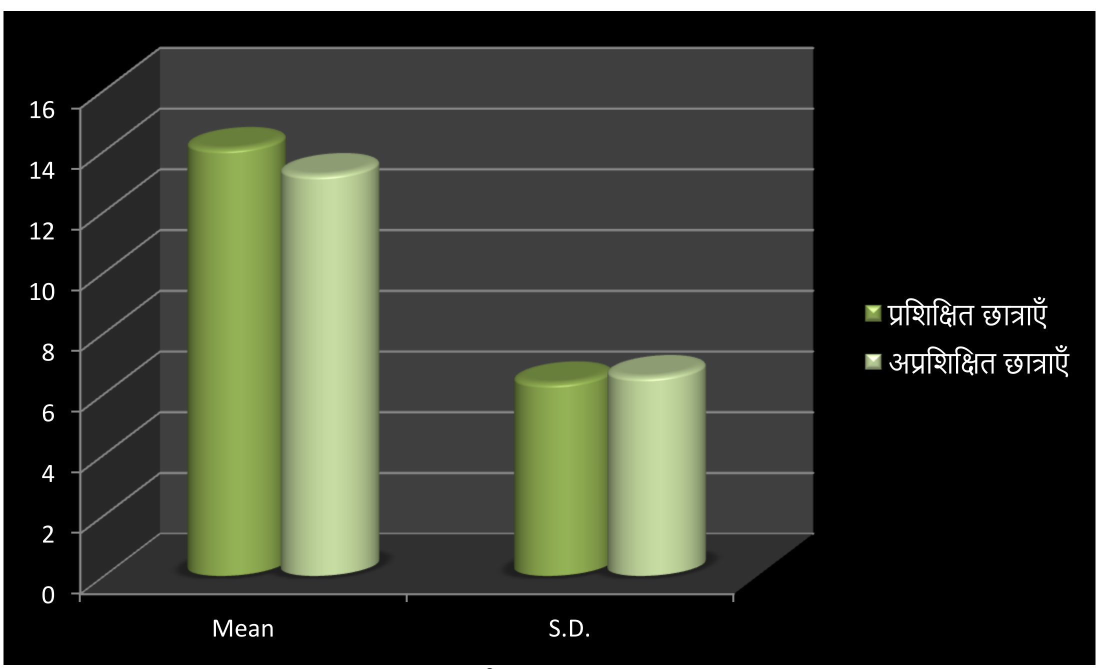
5.9 बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.9

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमानM)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	क्रान्तिक अनुपात तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
प्रशिक्षित छात्राएँ	74	14.07	6.35	0.6391	1.962	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
अप्रशिक्षित छात्राएँ	34	13.21	6.56				

df=106



चित्र संख्या 5.9

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 से स्पष्ट है कि महाविद्यालयीन प्रशिक्षित छात्राओं का मध्यमान 14.07 एवं मानक विचलन 6.35 है तथा महाविद्यालयीन अप्रशिक्षित छात्राओं का मध्यमान 13.21 एवं मानक विचलन 6.56 है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 0.6391 है, जो कि स्वतन्त्रांश 106 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के तालिका मान 1.962 से काफी कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 से निष्कर्ष निकलता है कि बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित छात्राओं की **जागरूकता का स्तर समान** है।

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

6.2 अध्ययन के सुझाव

6.3 शैक्षिक उपादेयता

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

कोई भी शोध अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जाता, जब तक उसके द्वारा किसी निष्कर्ष में न पहुँचा जाये। अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को व्यवस्थित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिये अनुमोदित करना, अनुसन्धान का अन्तिम चरण माना गया है। एक उत्तम शोध प्रबन्ध की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित प्रदत्तों पर आधारित हों, उन पर शोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किञ्चित मात्र भी प्रभाव न पड़े। इस अध्याय को निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है—

- अध्ययन के निष्कर्ष
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता
- अध्ययन के सुझाव
- अध्ययन की सीमाएँ
- भावी शोध हेतु सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है। प्रस्तुत शोध कार्य में छ: उद्देश्य लिये गये थे, जिनका विवरण प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है। लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

उद्देश्य 1: चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों का अध्ययन करना।

शोधकर्ता द्वारा राघव जलप्रपात, शबरी जलप्रपात तथा बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात का गहन अध्ययन किया गया। चयनित जलप्रपातों से सम्बन्धित वैषम्यता तथा कुकुदता के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि इनका स्तर असामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है। अतः **अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को यद्यपि जनसंख्या पर पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सकता, किन्तु इसके द्वारा जनसंख्या के विषय में अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है।**

उद्देश्य 2: चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।

शोधकर्ता द्वारा बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें 33 बहुविकल्पीय (4 विकल्प) प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इस जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म की सहायता से किया गया।

उद्देश्य 3: चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं प्रशिक्षण स्तरानुसार अध्ययन करना।

चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन निम्न परिकल्पनाओं के अन्तर्गत किया गया है, जिनके निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं—

I. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन **छात्र-छात्राओं में**

जागरूकता का स्तर समान है। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति 50% से कम छात्र-छात्राएँ जागरूक हैं, जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

II. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन **प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर समान है। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति 50% से कम प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित विद्यार्थी जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर भी सन्तोषप्रद नहीं है।**

III. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति **प्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति 50% से कम प्रशिक्षित छात्र-छात्राएँ जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

IV. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति **अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्र-**

छात्राओं की जागरूकता समान स्तर की है। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति 50% से कम अप्रशिक्षित छात्र-छात्राएँ जागरूक हैं, जागरूकता के **इस स्तर को सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता।**

v. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति **प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्रों की जागरूकता समान स्तर की है। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति 50% से कम प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित छात्र जागरूक हैं,** जागरूकता के इस स्तर को भी **सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता।**

vi. बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति **प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महाविद्यालयीन छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति 50% से कम प्रशिक्षित-अप्रशिक्षित छात्राएँ जागरूक हैं,** जागरूकता का **यह स्तर भी सन्तोषप्रद नहीं है।**

उद्देश्य 4: चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना।

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थी पर्याप्त जागरूक नहीं हैं। उनकी जागरूकता संवर्धन के लिए सुझावों को 'अध्ययन के सुझाव' शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है।

उद्देश्य 5: चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों से सम्बन्धित ई-ब्रोशुर (e brochure) तैयार करना।

चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों का ई ब्रोशुर (e brochure) परिशिष्ट—X में संलग्न है।

उद्देश्य 6: चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में व्यावहारिक कार्य करना।

चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में निम्नलिखित व्यावहारिक कार्य किये गए—

- चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के पेज तैयार कर इण्टरनेट पर प्रकाशित/Upload किये गये, जिनका लिंक परिशिष्ट—XI में संलग्न है।
- चयनित बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों से पत्राचार करना, जिसका लिंक परिशिष्ट—XII में संलग्न है।

6.2 अध्ययन के सुझाव

- ❖ महाविद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जायें।
- ❖ विद्यार्थियों की भौगोलिक जागरूकता के लिये संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाये।
- ❖ भौगोलिक विरासतों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये।
- ❖ चयनित जलप्रपातों को बुन्देलखण्ड की पर्यटन सूची में सम्मिलित किया जाये।
- ❖ महाविद्यालयों द्वारा शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाना चाहिए।
- ❖ बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों का विकीपीडिया पेज बनाया जाना चाहिए।
- ❖ बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों का सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यापक प्रचार-प्रसार जाना चाहिए।
- ❖ जलप्रपातों की भौगोलिक विशेषताओं को दर्शाते हुए प्रस्तर शिलालेख जलप्रपातों पर लगाये जाने चाहिए।

- ❖ चूँकि ये जलप्रपात निर्जन स्थानों पर हैं, अतः पर्यटकों की सुरक्षा की दृष्टि से इन स्थलों के पास पुलिस चौकी की स्थापना की जानी चाहिए।
- ❖ जलप्रपातों के आस-पास साफ़-सफाई का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए तथा जलप्रपात के पास के क्षेत्र को 'नो प्लास्टिक जोन' घोषित किया जाना चाहिए जिससे इन स्थलों की सुन्दरता बनी रहे।
- ❖ स्थलों पर आने वाले पर्यटकों के लिए स्वच्छ पेयजल तथा शौचालय की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- ❖ इन स्थलों को स्थानीय पर्यटन सर्किट से जोड़ा जाये। विशेषकर बरसात के दिनों में इन स्थलों तक सुगम आवागमन हेतु सार्वजनिक परिवहन के साधनों की व्यवस्था सुनिश्चित की जाये।

6.2.1 राघव जलप्रपात हेतु सुझाव

- चूंकि राघव जलप्रपात रीवा तथा चित्रकूट जिले की सीमा पर रीवा जिले में स्थित है, अतः रीवा तथा चित्रकूट दोनों ही जिलों की official website (https://rewa.nic.in) तथा (https://chitrakoot.nic.in) के Menu Bar में Download का option होना चाहिए जिसके अन्तर्गत जिले का पर्यटन मानचित्र तथा पर्यटन स्थलों के ई-ब्रोशुर डाउनलोड हेतु उपलब्ध होने चाहिए।
- चूंकि राघव जलप्रपात रीवा तथा चित्रकूट जिले की सीमा पर स्थित है, अतः रीवा तथा चित्रकूट दोनों ही जिलों के रेलवे स्टेशन तथा बस स्टैण्ड में राघव जलप्रपात से सम्बन्धित बोर्ड लगाये जाने चाहिए।
- पर्यटकों की सुरक्षा को ध्यान रखते हुए जलप्रपात के चारों ओर रेलिंग लगवायी जानी चाहिए।
- जलप्रपात तक जाने वाले मार्ग में संकेतक लगाये जाने चाहिए, ताकि पर्यटक सरलता से यहाँ पहुँच सकें।
- मानिकपुर से राघव जलप्रपात तक पहुँचने के मार्ग में अनेक रपटे हैं जो बरसात के दिनों में उफना जाते हैं जिसके कारण उन दिनों राघव जलप्रपात तक इस मार्ग से नहीं पहुँचा जा सकता जबकि

जलप्रपात को देखने का असली सौन्दर्य इसी काल में होता है। अतः रपटों के स्थान पर पुलिया का निर्माण किया जाना चाहिए ताकि बरसात के दिनों में सुगमता से राघव जलप्रपात तक पहुँचा जा सके।

- राघव जलप्रपात में मुख्य जलप्रपात की पश्चिम दिशा की ओर लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर एक अन्य जलप्रपात स्थित है, इसकी जानकारी एवं मार्ग से सम्बन्धित मानचित्र राघव जलप्रपात में लगाये जाने चाहिए।

6.2.2 बृहस्पति कुण्ड हेतु सुझाव

- पन्ना जिले की official website (https://panna.nic.in) के Menu Bar में Download का option होना चाहिए जिसके अन्तर्गत जिले का पर्यटन मानचित्र तथा पर्यटन स्थलों के ई-ब्रोशुर डाउनलोड हेतु उपलब्ध होने चाहिए।
- पन्ना जिले के रेलवे स्टेशन तथा बस स्टैण्ड में बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात से सम्बन्धित बोर्ड लगाये जाने चाहिए।
- बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात में एडवेंचरस स्पोर्ट्स की सम्भावनाओं की तलाश की जानी चाहिए।
- पर्यटकों की सुरक्षा को ध्यान रखते हुए जलप्रपात के चारों ओर रेलिंग लगवायी जानी चाहिए।
- जलप्रपात में नीचे उतरने के लिए दूसरी तरफ का रास्ता बनवाया जाना चाहिए।
- बृहस्पति कुण्ड परिसर में लोगों द्वारा अवैध खनन किया जा रहा है, जिसकी वजह से जलप्रपात की सुन्दरता नष्ट हो रही है। अतः इसे बन्द किया जाना चाहिए।
- बृहस्पति कुण्ड के पास, पर्यटकों के ठहरने हेतु पर्यटक आवास गृह का निर्माण किया जाना चाहिए।
- बृहस्पति कुण्ड के पास, पर्यटकों के जलपान हेतु कैफेटेरिया या जलपान गृह का निर्माण किया जाना चाहिए।

6.2.3 शबरी जलप्रपात हेतु सुझाव

- सतना जिले की official website (https://satna.nic.in) के Menu Bar में Download का option होना चाहिए जिसके अन्तर्गत जिले का पर्यटन मानचित्र तथा पर्यटन स्थलों के ई-ब्रोशुर डाउनलोड हेतु उपलब्ध होने चाहिए।
- सतना जिले के रेलवे स्टेशन तथा बस स्टैण्ड में शबरी जलप्रपात से सम्बन्धित बोर्ड लगाये जाने चाहिए।
- जलप्रपात से रामजानकी शिला तक पहुँचने का मार्ग इंगित किया जाना चाहिए, ताकि यहाँ आने वाले पर्यटक वहाँ तक पहुँच सकें।
- मुख्य मार्ग से प्रपात तक पहुँचने के लिये 1 किलोमीटर का रास्ता उखड़ा हुआ है, इस रास्ते का पुनर्निर्माण किया जाना चाहिए।
- शबरी जलप्रपात परिसर में बालकों के मनोरञ्जन हेतु पार्क एवं झूलों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- शबरी जलप्रपात में निचले कुण्ड तक पहुँचने के लिए सीढ़ियों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- जलप्रपात के समीप स्थित पौधशाला को और अधिक विकसित किया जाना चाहिए ताकि यहाँ आने वाले पर्यटक विभिन्न वनस्पतियों के विषय में जान सकें।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, भूगोलवेत्ताओं एवं समाज के लोगों के दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक होंगे। भौगोलिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में विभिन्न नये आयाम प्रस्तावित किये जा सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय भौगोलिक विरासत, धार्मिक स्थल, मन्दिर, प्राकृतिक स्थल, जलप्रपात जैसे—राघव जलप्रपात, शबरी जलप्रपात तथा बृहस्पति कुण्ड पर विस्तृत चर्चा की गयी है। साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित त्योहारों, महोत्सव एवं कलात्मक वस्तुओं आदि के बारे में विश्लेषणात्मक ढंग से चर्चा की गयी है।

महाविद्यालय स्तर पर भौगोलिक विरासतों के प्रति विद्यार्थियों की अल्प जानकारी को भी प्रकाश में लाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, भूगोलवेत्ताओं के लिये अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

6.3.1 विद्यार्थियों के लिये

- विद्यार्थी भौगोलिक विरासतों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय धरोहरों के महत्व को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी भौगोलिक विरासतों के प्रति रुचि विकसित कर सकेंगे।

6.3.2 शिक्षकों के लिये

- शिक्षक क्षेत्रीय धरोहरों के महत्व को समझकर विद्यार्थियों को बता सकते हैं।
- विद्यार्थियों के मन में क्षेत्रीय विरासतों के प्रति रुचि जागृत कर सकते हैं।
- विद्यार्थियों को भौगोलिक विरासतों के प्रति जागरुक कर सकते हैं।
- अभिभावकों को शैक्षिक भ्रमण के महत्व का ज्ञान करा सकते हैं।

6.3.3 नीति निर्देशकों के लिये

- भौगोलिक विरासतों को महाविद्यालयीन पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु नीति बनाने की आवश्यकता है।
- शैक्षिक भ्रमण को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।

6.3.4 भूगोलवेत्ताओं के लिये

- भूगोलवेत्ता राघव जलप्रपात, शबरी जलप्रपात तथा बृहस्पति कुण्ड के विषय में जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।

- बृहस्पति कुण्ड के ऐतिहासिक तथा पौराणिक महत्त्व का पता लगा सकते हैं।
- बृहस्पति कुण्ड परिसर में स्थित हीरे की खदानों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- शबरी जलप्रपात, राघव जलप्रपात तथा बृहस्पति कुण्ड के पास स्थित जंगलों में पायी जाने वाली विभिन्न वनस्पतियों तथा जीव-जन्तुओं का अध्ययन कर सकते हैं।

6.3.5 पुरातत्वविदों के लिये

- पुरातत्वविदों द्वारा शबरी जलप्रपात में स्थित रामायणकालीन अवशेषों की खोज की जा सकती है।
- इन जलप्रपातों के समीप स्थित गुफाओं में विभिन्न शैलचित्रों एवं प्राचीन अवशेषों की खोज की जा सकती है।

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

- शोध में प्रयुक्त स्वनिर्मित उपकरण का समय व धन के अभाव के कारण मानकीकरण सम्भव नहीं हो पाया है।
- प्रयुक्त शोध में आँकड़े एकत्रित करने के लिए विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया है।

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी शोधकार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रंखला है, जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है। कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किये जा सकते हैं ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके। शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिये एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययनों का

किया जाना आवश्यक होता है। शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि एक शोधार्थी के लिये सम्भव नहीं होता जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता। एक शोध समस्या पर किया गया शोधकार्य, दूसरे शोधार्थी द्वारा किये गये शोध अध्ययन के लिये मार्गदर्शन एवं सुझाव का कार्य करता है। इस शोधकार्य के आधार पर भावी अध्ययनों के लिये निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं—

- वर्तमान शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के मात्र बाँदा जिले तक ही सीमित है, भावी शोध अध्ययनों में अन्य जिलों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- वर्तमान शोध अध्ययन बाँदा शहर के मात्र पाँच उच्च शिक्षण संस्थानों तक ही सीमित है, भावी शोध अध्ययनों में अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन बुन्देलखण्ड के तीन जलप्रपातों—राघव जलप्रपात, शबरी जलप्रपात तथा बृहस्पति कुण्ड जलप्रपात तक ही सीमित है, भावी अध्ययनों में बुन्देलखण्ड के अन्य जलप्रपातों अथवा किसी अन्य क्षेत्र के जलप्रपातों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित है, भावी अध्ययनों में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन असम्भाव्य विधि से किया गया है, भावी अनुसन्धानों में सम्भाव्य विधियों द्वारा न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

अध्ययन। (2021, फरवरी 15)। शब्दकोश। <http://surl.li/cphcl>

आर्य, डॉ० मोहन लाल (2018)। *शिक्षा के ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य।* मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

कतरन। <https://yogaguru1.blogspot.com/2019/>

कुमार, जंगजीत (2008)। *कॉलेज के विद्यार्थियों में वातावरण के प्रति जागरुकता, निजत्व एवं वैयक्तिक स्थान का मनोवैज्ञानिक अध्ययन।* पी-एच० डी० थीसिस, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
<http://hdl.handle.net/10603/243596>

कुमार, पंकज (2019)। *बुन्देलखण्ड के बाँदा, चित्रकूट एवं महोबा जनपद की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का अध्ययन।* पी-एच० डी० थीसिस, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/356351>

गुप्ता, एस. पी. & गुप्ता, अलका (2019)। *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान: सिद्धान्त एवं व्यवहार* (Rev. Ed.)। प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन।

गुप्ता, सत्येन्द्र (2005)। *बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन।* पी-एच० डी० थीसिस, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/13596>

गौतम, अदिति (2015)। *भूमण्डलीकरण के प्रति जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में अध्यापक प्रशिक्षकों की जानकारी एवं शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन।* पी-एच० डी० थीसिस, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं-राजस्थान।
<http://hdl.handle.net/10603/226261>

चित्रकूट में सैलानियों को आकर्षित कर रही शबरी जलप्रपात की गर्जना, जानिए यहाँ के कुछ रोचक तथ्य। (2021, अगस्त 01)। जागरण। <http://surl.li/cphhd>

चौरसिया, पूजा (2019)। *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिन्जर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* एम० एड० लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
<https://archive.org/details/ilovepdf-merged-4-1/mode/2up?view=theater>

जलप्रपात। (2015, अक्टूबर 08)। bsarkari.com. <http://surl.li/cphan>

जागरूकता। (2018, दिसम्बर 04)। विकीपीडिया।
<https://enmwikipediaorg.translate.goog/wiki/Awareness?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc,sc>

धर, अभिलाषा (2019)। *उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में योग जागरूकता का अध्ययन: बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ मे।* लघु-शोध प्रबन्ध–शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। <https://archive.org/details/20200304_20200304_1435/mode/2up>

धार्मिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थल: बृहस्पति कुण्ड। (2021, अक्टूबर 25)। बुन्देली झलक। <https://www.bundeliijhalak.com/brihaspati-kund/>

पाठक, पी० डी० (2017)। *शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य।* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

प्रतिचयन विधियाँ और प्रतिदर्श आकार का आकलन। egyankosh. <https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/30591/1/Unit-15.pdf>

प्रसामान्य वितरण: प्रसम्भाव्यता का सम्प्रत्तय, प्रसामान्य सम्भाव्य वक्र की विशेषताएँ, विषमता एवं कुकुदता, प्रसामान्य सम्भाव्यता वक्र के अनुप्रयोग। उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय। <https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/BAPY-201.pdf>

प्राथमिक शिक्षा। (2020, अक्टूबर 21)। Scotbuzz. <https://www.scotbuzz.org/2020/10/prathamik-shiksha-ka-arth.html?m=1>

बुन्देलखण्ड। (2011, सितम्बर 09)। विकीपीडिया। <http://surl.li/cpgzs>

भारत में शिक्षा के प्रकार और स्तर। (2021, फरवरी 08)। Scotbuzz. <http://surl.li/cpgvf>

महाविद्यालयीन विद्यार्थी (2018, जून 09)। शब्दकोश। <http://surl.li/cphbh>

मातादीन (2018)। *उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में बाँदा जनपद की भौगोलिक जागरूकता का अध्ययन।* लघु-शोध प्रबन्ध–शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। <https://archive.org/details/ilovepdf_merged_202108/mode/1up?view=theater>

मिश्र, प्रत्यूष (2002)। *बुन्देलखण्ड में पर्यटन विकास नियोजन: कालिंजर के विशेष संदर्भ में।* पी-एच० डी० थीसिस, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/24980>

मिश्रा, बृजेश कुमार। *बुन्देलखण्ड की महिलाओं में शैक्षणिक पिछड़ापन का अध्ययन।* पी-एच० डी० थीसिस, डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/248572>

राघव जलप्रपात-बेधक को विकसित कर बनायें टूरिस्ट हब। (2020, सितम्बर 09)। अमर उजाला। <http://surl.li/cphjs>

राजकुमार (2016)। *तकनीकी शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का एक अध्ययन।* पी- एच० डी० थीसिस, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

रायजादा, बी० एस० (2008)। *शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व।* जयपुर: दी डाइमण्ड प्रिंटिंग प्रेस।

लघु शोध-प्रबन्ध प्रकाशित <https://yogaguru1.blogspot.com/2020/05/blog-post.html>

लाल, रमन बिहारी (2014)। *शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन।* मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

लाल, रमन बिहारी (2018)। *शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।* मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो।

लॉर्ड मैकाले का वह स्मरण पत्र जिसने बदल दी भारत की शिक्षा नीति। (2022, फरवरी 04)। नवभारत टाइम्स। <http://surl.li/cpgxy>

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता एवं स्रोत। (2019, जुलाई 20)। Scotbuzz.<https://www.scotbuzz.org/2019/07/sambandhit-sahity.html?m=1>

सर्वेक्षण विधि का अर्थ। (2020, मार्च 17)। टीचर दीदी, यू-ट्यूब। <https://youtu.be/J3Bazwt9pRs>

सांख्यिकी। Unionpedia. <http://surl.li/cphml>

सिंह, विजय बहादुर (1998)। *प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक जागरूकता।* पी-एच० डी० थीसिस, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/182670>

शबरी जलप्रपात: प्रकृति की गोद में स्वर्ग सा एहसास नजारे ऐसे कि ना हटें नजरें। (2018, अगस्त 10)। पत्रिका <https://www.patrika.com/chitrakoot-news/shabri-waterfall-feeling-like-a-heaven-in-nature-1-3235589/>

शिवहरे, प्रमोद कुमार (2002)। *बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं की राजनीतिक चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन।* पी-एच० डी० थीसिस, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/13683>

शोधगंगा। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/>

शोध उपकरण। (2020, नवम्बर 13)। Testbook. <https://testbook.com/question-answer/hn/in-choosing-a-research-tool-which-of-the-following--5ffbd7a2264e78f75c414c29>

श्रीवास्तव, डी० एन० (1993)। *अनुसन्धान विधियाँ।* आगरा: साहित्य प्रकाशन।

Best, John W. & Kahn, James V. (1995). *Research in Education* (7th edition). New Delhi: Prentice- Hall of India private limited. <https://niepid.nic.in/THE%20MEANING%20OF%20RESEARCH.दpdf>

Find population skewness, kurtosis for ungrouped data. AtoZmath.com <http://surl.li/cphpn>

Guidelines for Preparation of the Thesis/Dissertations (2018). Nainital: Kumaun University. <https://www.kunainital.ac.in/images/document/KUDScDLittPhDMScDissertationThesisPreparationandSubmissionGuidelines2018.pdf>

How to Add Page Numbers in APA स्टाइल. (2020, February 25). Editarians. <https://www.editarians.com/page-numbers-in-apa-style/>

How to Cite a website in APA Style: Format & Examples. (2022, May 10). Scribbr. <https://www.scribbr.com/apa-examples/website/>

How to Create a Bell Curve Chart in Excel. <https://www.extendoffice.com/documents/excel/2404-excel-template-bell-curve-chart.html>

Margins. (n.d.) APA Style. Retrieved (2022, June 10) from <https://apastyle.apa.org/style-grammar-guidelines/paper-format/margins>

t-test calculator. Graphpad. <https://www.graphpad.com/quickcalcs/ttest1.cfm>

Normal Skewness Range. <https://community.gooddata.com/metrics-and-maql-kb-articles-43/normality-testing-skewness-and-kurtosis-241>

Normal Kurtosis Range.

< https://www.sciencedirect.com/topics/neuroscience/kurtosis>

Paragraph Style. <https://libguides.usc.edu/APA7th/formatting>

परिशिष्ट

परिशिष्ट—I बुन्देलखण्ड एवं चयनित जिलों का मानचित्र



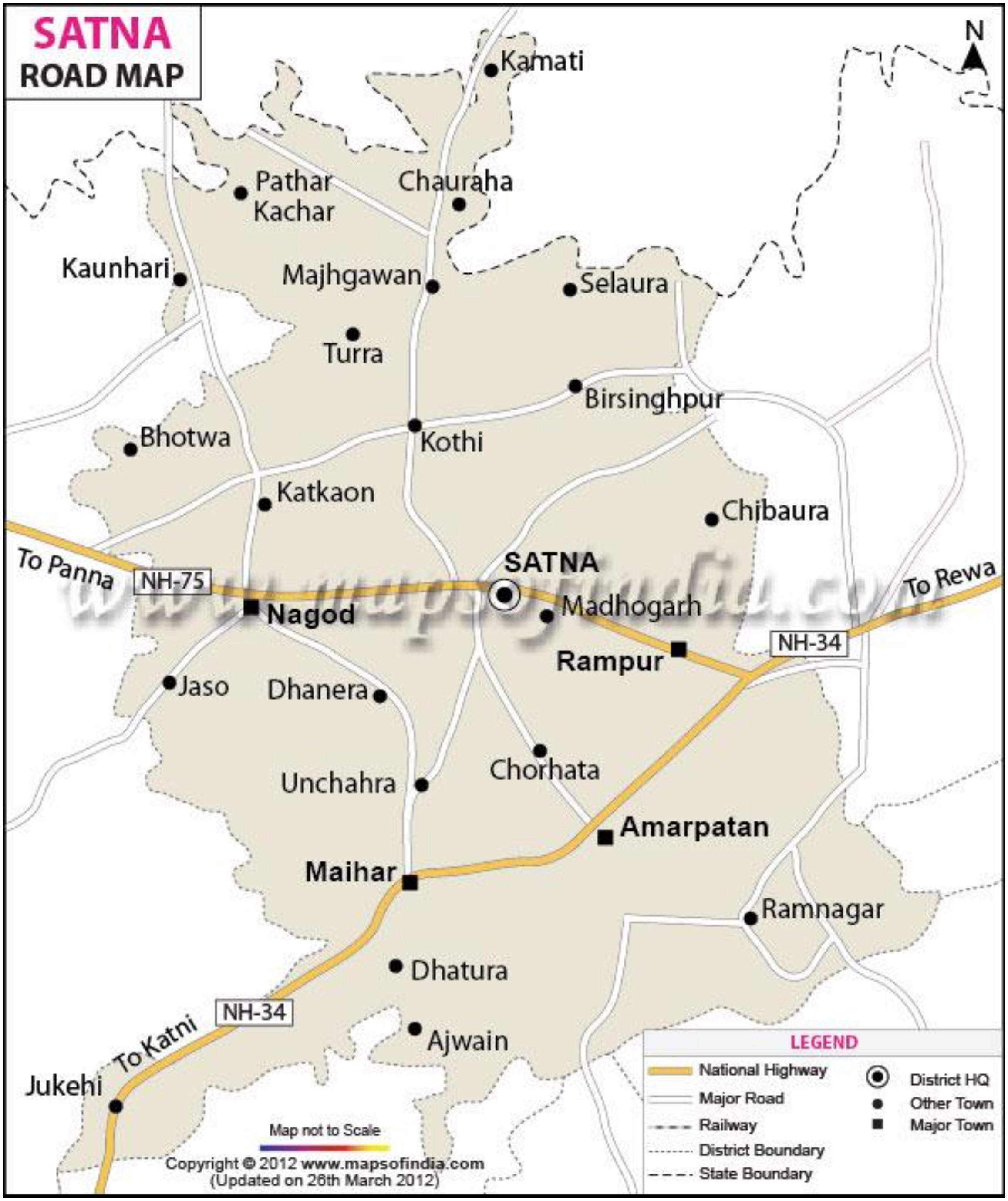
बुन्देलखण्ड का मानचित्र

परिशिष्ट—I (जारी)



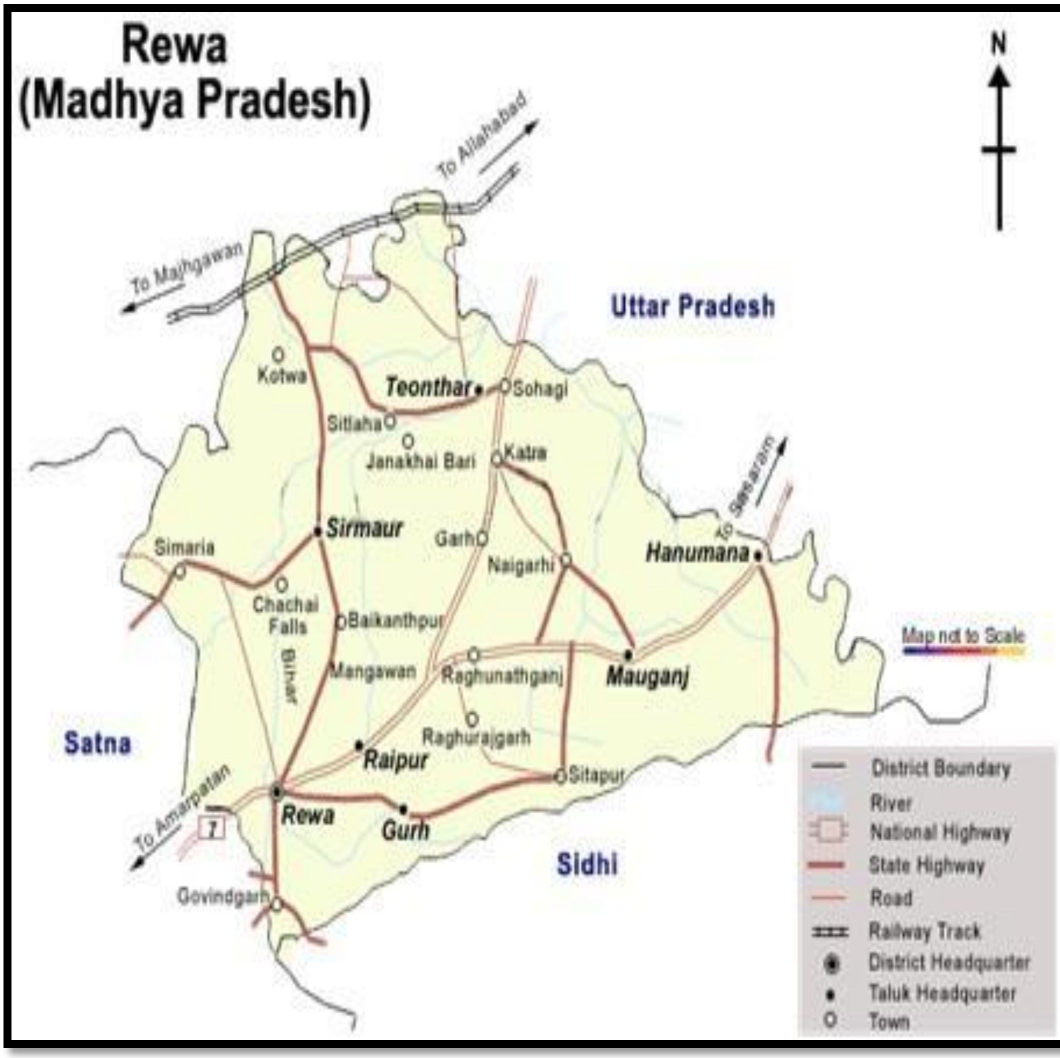
पन्ना जिले का मानचित्र

परिशिष्ट—I (जारी)



सतना जिले का मानचित्र

परिशिष्ट—I (जारी)



रीवा जिले का मानचित्र

परिशिष्ट—II अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, लेख चित्रावली

पत्रिका

चित्रकूट: भगवान राम की तपोस्थली चित्रकूट में वैसे तो न जाने वि
दृश्यावलोकन करने के बाद आंखों पर यकीन नहीं होगा कि कुदर
में भी बखूबी बरती है लेकिन सिस्टम की दुश्वारियों के चलते तपोभू
तक देश दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर अपनी जगह नहीं बना पा
जल प्रपात. प्रकृति की गोद में एक ऐसा स्थान जहां स्वर्ग सी अनुभू
दिलकश नजारों से नज़रें नहीं हटतीं.



परिशिष्ट—II (जारी)

हिंदी न्यूज़ / उत्तर प्रदेश / कानपुर

चित्रकूट में सैलानियों को आकर्षित कर रही 'शबरी जल प्रपात' की गर्जना,



चित्रकूट, जागरण स्पेशल। Chitrakoot Shabri Waterfall प्रभु श्रीराम की तपोभूमि में पयस्वनी नदी पर शबरी जल प्रपात साल भर आकर्षण की छटा बिखेरता है। आजकल त्रि-जलधारा के तेज रफ्तार से नीचे गिरने का मनोहारी दृश्य किसी को मंत्रमुग्ध करने के लिए पर्याप्त है। वहीं यह जलराशि जमीं पर बादलों के होने का अहसास भी करा रही है। मारकुंडी थाना अंतर्गत जमुनिहाई-बंबिया जंगल में शबरी जल प्रपात स्थित है। बारिश के मौसम में यहां की त्रि-धाराएं माहौल को और भी मनोरम बना देती हैं। पहाड़ों में कई दिनों से हो रही लगातार बारिश से तीन जल धाराएं इन दिनों पूरे वेग से नीचे गिर रही हैं।

परिशिष्ट—II (जारी)

अमर उजाला

होम > उत्तर प्रदेश > चित्रकूट लखनऊ



मानिकपुर क्षेत्र के शबरी जल प्रपात में सीढ़ी, रेलिंग और शेड बनाए गए हैं। इसी तरह मऊ गुर्दरी ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले राघव जल प्रपात में भी पर्यटकों को आकर्षित करने की असीम संभावना है, यदि इन स्थलों को भी पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जाय तो लोगों की यहां आवक बढ़ेगी। यहां भित्तिचित्र, रानीपुर वन्य जीव बिहार, शबरी प्रपात, राघव प्रपात, धारकुंडी, मार्कंडेय आश्रम, अमरावती, बरदहा नदी, खंभेसुर के भित्तिचित्र, शोभन सरकार आश्रम, चर के सोमनाथ मंदिर समेत प्राकृतिक सुंदरीकरण आकर्षित करती है।

बुंदेली सेना के जिलाध्यक्ष अजीत सिंह ने सीएम पोर्टल में पत्र भेजकर राघव जल प्रपात समेत विभिन्न स्थलों को विकसित किए जाने की मांग की है।

परिशिष्ट—II (जारी)



Bundelii Jhalak

The Cultural Archive Of Bundelkhand

HOME BUNDELI JHALAK PROJECT FOUNDER PRESIDENT

Brihaspati Kund बृहस्पति कुंड

October 25, 2021 / admin / 0

बुन्देलखण्ड का वो भूभाग जिसे डायमंड सिटी, मंदिर, झरनों की नगरी प
प्रदेश के पन्ना जिले के पहाड़ी खेड़ा गांव (कालिंजर किले के पास) में
देवस्थान... प्राकृतिक स्थल **Brihaspati Kund**। ऐसा मनोरम और
प्राकृतिक स्थल जो सैलानियों का मन मोह लेता है।

धार्मिक-पौराणिक और ऐतिहासिक स्थल बृहस्पति कुंड

कहते हैं इस स्थान पर देवताओं के धार्मिक शिक्षक – देवगुरु बृहस्पति ने ए
की स्थापना की थी और इसलिए इसका नाम **बृहस्पति कुण्ड** हो गया। इ
पौराणिक आस्था भी जुड़ी हुई है विद्वानों का मानना है कि देवगुरु बृहस्पि
यज्ञ किया था। बाद में भगवान प्रभु श्रीराम वनवास अवधि के दौरान अनेक
मुनियों से मिलने के लिए यहां आए थे। इस लिये यह स्थान पवित्र और पावन
देश और दुनिया के लोग अपना शीश नवाते हैं और आशीष पाते हैं।

Bundelii Jhalak

परिशिष्ट—III बुन्देलखण्डीय जलप्रपात भ्रमण चित्रावली

1. शबरी जलप्रपात













परिशिष्ट—III (जारी)

2. राघव जलप्रपात













परिशिष्ट—III (जारी)

3. बृहस्पति कुण्ड









परिशिष्ट—IV लघु शोध-प्रबन्ध प्रारूप

- **Website Citations as per APA 7th Edition**

Webpage
1 author
Full date

Reference entry

Slat, B. (2019, April 10). *Whales likely impacted by Great Pacific garbage patch*. The Ocean Cleanup. https://www.theoceancleanup.com/updates/whales-likely-impacted-by-great-pacific-garbage-patch/

In-text citation

Parenthetical: (Slat, 2019)
Narrative: Slat (2019)

Webpage
1 author
Full date

Reference entry

Author's Last Name, Initial(s). (Year, Month Day of publication). *Title of work*. Website. https://URL

In-text citation

Parenthetical: (Author's Last Name, Year of publication)
Narrative: Author's Last Name (Year of publication)

- **Margins**

Use 1-inch margins on every side of the page for an APA Style paper.

However, if you are writing a dissertation or thesis, your advisor or institution may specify different margins (e.g., a 1.5-inch left margin to accommodate binding).

- **Line Spacing**

2.1.3 Type -Setting, Text Processing and Printing

The text shall be printed employing laserjet or inkjet printer, the text having been processed using a standard text processor. The standard font shall be Times New Roman or Arial of 12 pts with 1.5 line spacing. हिंदी के लिए Arial Unicode MS फोंट का आकार 14 तथा शीर्षकों के लिए फोंट का आकार 16 स्वीकार्य होगा।

- **Page Numbering**

  - The first page is numbered page 1.
  - Each page is numbered sequentially thereafter.
  - Numbers are positioned in the header at the top right of each page.

परिशिष्ट—V बाँदा नगर स्थित उच्च शिक्षण संस्थान

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम
1.	**पण्डित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा**
2.	**राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा**
3.	राजीव गाँधी डी० ए० वी० महाविद्यालय, बाँदा
4.	**राजा देवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा**
5.	एकलव्य महाविद्यालय, दुरेड़ी, बाँदा
6.	**KCNIT, बाँदा**
7.	**R. N. Institute of Advanced Studies, Banda**
8.	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा
9.	राजकीय मेडिकल कॉलेज, बाँदा
10.	कृषि संस्थान,जिला परिषद, बाँदा
11.	राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान,बाँदा
12.	राजकीय पॉलिटेक्निक, बाँदा
13.	नटराज म्यूजिक कॉलेज, बाँदा
14.	नालन्दा कम्प्यूटर कॉलेज,बाँदा

परिशिष्ट—V (जारी)

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम
15.	डॉ० भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, बाँदा
16.	बामदेव संस्कृत महाविद्यालय, बाँदा
17.	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बाँदा

परिशिष्ट—VI

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का प्रथम प्रारूप

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक **शोधार्थी**

डॉ राजीव अग्रवाल **जैनेन्द्र सिंह**

निम्न सूचनायें भरिये—

नाम…………………………………………………………………………...……………………

पिता का नाम……………………………………………………………………………………

लिंग……………………………………………………...……………………………………

कक्षा…………………………………………………………………………...……………………

महाविद्यालय का नाम…………………………………………………………………………………

दिनांक……………………………………………………………………...…………………………

E mail/What's App……………………………………..………………………………...

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

परिशिष्ट—VI (जारी)

प्रश्नावली

1. राघव जल प्रपात को वहाँ के क्षेत्रीय लोग किस नाम से जानते हैं?

a. शबरी जल प्रपात

b. पन्ना जल प्रपात

c. बृहस्पति कुण्ड जल प्रपात

d. धुआँधार

2. राघव जल प्रपात किस जिले में स्थित है?

a. पन्ना

b. सतना

c. रीवा

d. चित्रकूट

3. राघव जल प्रपात किस नदी पर बनता है?

a. बाघिन

b. त्रिवेणी

c. उखमय

d. मन्दाकिनी

4. राघव जल प्रपात जाने का सबसे अच्छा समय कौन सा है?

a. जुलाई-जनवरी

b. जून-दिसम्बर

c. अगस्त-फरवरी

d. सितम्बर-मार्च

परिशिष्ट—VI (जारी)

5. उखमय नदी का उद्गम कहाँ होता है?

a. मानिकपुर

b. चित्रकूट

c. मारकुण्डी

d. रीवा

6. उखमय नदी किस नदी की सहायक नदी है?

a. सोन

b. टमस

c. मन्दाकिनी

d. त्रिवेणी

7. राघव जल प्रपात में कुल कितनी धारायें गिरती हैं?

a. 1

b. 2

c. 3

d. 4

8. राघव जल प्रपात के उत्तर दिशा में किस देवता का मन्दिर है?

a. राम जी

b. हनुमान जी

c. शंकर जी

d. गणेश जी

परिशिष्ट—VI (जारी)

9. राघव जल प्रपात के आस-पास एक परजीवी पौधा अमरबौरिया पाया जाता है, यह कौन से रोग के लिए फायदेमन्द होता है?

a. पीलिया

b. हृदय रोग

c. शुगर

d. चेचक

10. राघव जल प्रपात से मानिकपुर की दूरी कितनी है?

a. 20 किलोमीटर

b. 24 किलोमीटर

c. 26 किलोमीटर

d. 28 किलोमीटर

11. शबरी जल प्रपात किस जिले में स्थित है?

a. पन्ना

b. सतना

c. रीवा

d. चित्रकूट

12. शबरी जल प्रपात कौन सी नदी पर बना है?

a. मन्दाकिनी

b. बाघिन

c. उखमय

d. त्रिवेणी

परिशिष्ट—VI (जारी)

13. शबरी जल प्रपात से निकटतम रेलवे स्टेशन कौन सा है?

a. चित्रकूट

b. मानिकपुर

c. टिकरिया

d. मझगवां

14. शबरी जल प्रपात के ऊपरी कुण्ड का क्या नाम है?

a. झरना कुण्ड

b. पातालिया कुण्ड

c. सूरज कुण्ड

d. शबरी कुण्ड

15. शबरी जल प्रपात में कुण्ड का पानी किस रंग का दिखाई देता है?

a. नीला

b. काला

c. हरा

d. पीला

16. त्रिवेणी नदी का उद्गम कहाँ से होता है?

a. सूरज कुण्ड

b. शबरी कुण्ड

c. झरना कुण्ड

d. बरम कुण्ड

परिशिष्ट—VI (जारी)

17. त्रिवेणी नदी किस नदी की सहायक नदी है?

a. गंगा

b. यमुना

c. मन्दाकिनी

d. केन

18. त्रिवेणी नदी किस स्थान पर समाप्त होती है?

a. गुप्त गोदावरी

b. सती अनुसुइया

c. हनुमान धारा

d. रामघाट

19. शबरी जल प्रपात में कितने झरने हैं?

a. 1

b. 2

c. 3

d. 4

20. झरना कुण्ड की ऊँचाई लगभग कितनी है?

a. 70 फुट

b. 80 फुट

c. 60 फुट

d. 90 फुट

परिशिष्ट—VI (जारी)

21. झरना कुण्ड की गहराई कितनी है?

a. 30 फुट

b. 10 फुट

c. 40 फुट

d. 20 फुट

22. शबरी जल प्रपात में निचले कुण्ड की ऊँचाई कितनी है?

a. 70 मीटर

b. 72 मीटर

c. 74 मीटर

d. 76 मीटर

23. शबरी जल प्रपात में निचले कुण्ड की गहराई कितनी है?

a. 8 मीटर

b. 10 मीटर

c. 12 मीटर

d. 14 मीटर

24. शबरी जल प्रपात के आस पास जंगल में 'खिन्नी' नाम का पढ़ा पाया जाता है, इसका स्वाद कैसा होता है?

a. खट्टा

b. कसैला

c. मीठा

d. कड़वा

परिशिष्ट—VI (जारी)

25. चित्रकूट से शबरी जल प्रपात की दूरी कितनी है?

a. 50 किलोमीटर

b. 40 किलोमीटर

c. 38 किलोमीटर

d. 48 किलोमीटर

26. शबरी जल प्रपात की धारा कब से कब तक चलती है?

a. अप्रैल-जुलाई

b. जून-सितम्बर

c. मई-अगस्त

d. जुलाई-अक्टूबर

27. बृहस्पति कुण्ड जल प्रपात किस जिले में स्थित है?

a. रीवा

b. सतना

c. पन्ना

d. चित्रकूट

28. बृहस्पति कुण्ड जल प्रपात की ऊँचाई कितनी है?

a. 100 फुट

b. 200 फुट

c. 300 फुट

d. 400 फुट

परिशिष्ट—VI (जारी)

29. बृहस्पति कुण्ड जल प्रपात के आस-पास का क्षेत्र किस पर्वत श्रेणी का हिस्सा है?

a. सतपुड़ा

b. हिमालय

c. अरावली

d. विंध्य

30. बृहस्पति कुण्ड जल प्रपात का जल स्रोत कौन सी नदी है?

a. बाघिन

b. त्रिवेणी

c. उखमय

d. मन्दाकिनी

31. बृहस्पति देव के पिता का क्या नाम था?

a. महर्षि मरीचि

b. महर्षि अङ्गिरा

c. महर्षि पुलस्त्य

d. अत्रि

32. बृहस्पति कुण्ड के आस-पास किस चीज की खदान है?

a. हीरा

b. सोना

c. चाँदी

d. कोयला

परिशिष्ट—VI (जारी)

33. बृहस्पति कुण्ड में मेला किस दिन लगता है?

a. दशहरा

b. दीपावली

c. मकर संक्रान्ति

d. होली

34. बृहस्पति कुण्ड घूमने जाने का सबसे अच्छा समय कब होता है?

a. जून-अगस्त

b. जुलाई-सितम्बर

c. अगस्त-अक्टूबर

d. सितम्बर-नवम्बर

35. बृहस्पति कुण्ड से निकटतम हवाई अड्डा कौन सा है?

a. रीवा

b. सतना

c. पन्ना

d. चित्रकूट

36. बृहस्पति कुण्ड स्थल में कुल कितने प्रमुख कुण्ड हैं?

a. 5

b. 6

c. 7

d. 8

परिशिष्ट—VI (जारी)

37. बृहस्पति कुण्ड की चौड़ाई कितनी है?

a. 200-300 फुट

b. 100-200 फुट

c. 300-400 फुट

d. 400-500 फुट

38. पन्ना जिला मुख्यालय से बृहस्पति कुण्ड की दूरी कितनी है?

a. 60 किलोमीटर

b. 81.2 किलोमीटर

c. 70 किलोमीटर

d. 37.4 किलोमीटर

39. निम्न में से देवता बृहस्पति नाम से प्रसिद्ध हुए?

a. वायु देव

b. वरूण देव

c. अग्नि देव

d. शनि देव

परिशिष्ट—VII जागरूकता प्रश्नावली का अन्तिम प्रारूप

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में बुन्देलखण्ड के जलप्रपातों के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें बुन्देलखण्ड के जलप्रपातों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न या कथन दिए गए हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगाएं। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी। अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

* Required

1. NAME- *

   ____

2. FATHER NAME- *

   ____

3. AGE- *

   ____

4. CLASS- *

   ____

5. COLLEGE NAME- *

   ____

6. WHATS APP NUMBER/E-MAIL ID *

   ____

परिशिष्ट—VII (जारी)

7. राघव जलप्रपात किस जिले में स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ पन्ना
- ⬭ सतना
- ⬭ रीवा
- ⬭ चित्रकूट

8. शबरी जलप्रपात किस जिले में स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ पन्ना
- ⬭ सतना
- ⬭ रीवा
- ⬭ चित्रकूट

9. बृहस्पति कुण्ड किस जिले में स्थित है? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ पन्ना
- ⬭ सतना
- ⬭ रीवा
- ⬭ चित्रकूट

10. बृहस्पति कुण्ड का जल स्रोत कौन सी नदी है? * 1 point

Mark only one oval.

- ⬭ बाघिन
- ⬭ त्रिवेणी
- ⬭ उरामय
- ⬭ मन्दाकिनी

परिशिष्ट—VII (जारी)

11. शबरी जलप्रपात का जल स्रोत कौन सी नदी है? * 1 point

Mark only one oval.

- बाघिन
- त्रिवेणी
- उखमय
- मन्दाकिनी

12. राघव जलप्रपात का जल स्रोत कौन सी नदी है? * 1 point

Mark only one oval.

- बाघिन
- त्रिवेणी
- उखमय
- मन्दाकिनी

13. बाघिन नदी का उद्गम कहाँ से होता है? * 1 point

Mark only one oval.

- पन्ना की पहाड़ियों से
- मारकुन्डी से
- बरम कुण्ड से
- शबरी कुण्ड से

14. त्रिवेणी नदी का उद्गम कहाँ से होता है? * 1 point

Mark only one oval.

- पन्ना की पहाड़ियों से
- मारकुन्डी से
- बरम कुण्ड से
- शबरी कुण्ड से

परिशिष्ट—VII (जारी)

15. उखमय नदी का उद्गम कहाँ से होता है? * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ पन्ना की पहाड़ियों से
- ◯ मारकुन्डी से
- ◯ बरम कुण्ड से
- ◯ शबरी कुण्ड से

16. बृहस्पति कुण्ड की ऊँचाई कितनी है? * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ 400 feet
- ◯ 80 feet
- ◯ 240 feet
- ◯ 84 feet

17. राघव जलप्रपात की ऊँचाई कितनी है? * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ 400 feet
- ◯ 80 feet
- ◯ 240 feet
- ◯ 84 feet

18. शबरी जलप्रपात में झरना कुण्ड की ऊँचाई कितनी है? * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ 400 feet
- ◯ 80 feet
- ◯ 240 feet
- ◯ 84 feet

परिशिष्ट—VII (जारी)

19. शबरी जलप्रपात में निचले कुण्ड की ऊँचाई कितनी है? * 1 point

Mark only one oval.

- 400 feet
- 80 feet
- 240 feet
- 84 feet

20. निम्न जलप्रपात को पहचानिए। * 1 point



Mark only one oval.

- राघव जलप्रपात
- शबरी जलप्रपात
- बृहस्पति कुण्ड
- उपर्युक्त में कोई नहीं

परिशिष्ट—VII (जारी)

21. 16 निम्न जलप्रपात को पहचानिए। * 1 point



Mark only one oval.

- ( ) राघव जलप्रपात
- ( ) शबरी जलप्रपात
- ( ) बृहस्पति कुण्ड
- ( ) उपर्युक्त में कोई नहीं

परिशिष्ट—VII (जारी)

22. निम्न जलप्रपात को पहचानिए। * 1 point



Mark only one oval.

- ◯ राघव जलप्रपात
- ◯ शबरी जलप्रपात
- ◯ बृहस्पति कुण्ड
- ◯ उपर्युक्त में कोई नहीं

परिशिष्ट—VII (जारी)

23. बुन्देलखण्ड के जलप्रपातों को देखने का सबसे अच्छा समय है– * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ ग्रीष्म ऋतु
- ◯ शीत ऋतु
- ◯ वर्षा ऋतु
- ◯ वसन्त ऋतु

24. त्रिवेणी नदी किसकी सहायक नदी है? * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ टमस
- ◯ मन्दाकिनी
- ◯ केन
- ◯ यमुना

25. उखमय नदी किसकी सहायक नदी है? * 1 point

Mark only one oval.

- ◯ टमस
- ◯ मन्दाकिनी
- ◯ केन
- ◯ यमुना

परिशिष्ट—VII (जारी)

30. चित्रकूट जनपद के मुख्यालय कर्वी से निकटतम जलप्रपात है– * 1 point

Mark only one oval.

- बृहस्पति कुण्ड
- शबरी जलप्रपात
- राघव जलप्रपात
- उपर्युक्त में कोई नहीं

31. मानिकपुर से निकटतम जलप्रपात है– * 1 point

Mark only one oval.

- बृहस्पति कुण्ड
- शबरी जलप्रपात
- राघव जलप्रपात
- उपर्युक्त में कोई नहीं

32. राघव जलप्रपात के निकटतम रेलवे स्टेशन है– * 1 point

Mark only one oval.

- मानिकपुर
- पनहाई
- टिकरिया
- मझगवां

33. शबरी जलप्रपात के निकटतम रेलवे स्टेशन है– * 1 point

Mark only one oval.

- मानिकपुर
- पनहाई
- टिकरिया
- मझगवां

परिशिष्ट—VII (जारी)

34. बृहस्पति कुण्ड के निकटतम रेलवे स्टेशन है– * 1 point

Mark only one oval.

- मानिकपुर
- पनहाई
- टिकरिया
- मझगवां

35. किस जलप्रपात को पन्ना जलप्रपात के नाम से जाना जाता है? * 1 point

Mark only one oval.

- बृहस्पति कुण्ड
- शबरी जलप्रपात
- राघव जलप्रपात
- उपर्युक्त में कोई नहीं

36. राघव जलप्रपात के निकटतम गाँव है– * 1 point

Mark only one oval.

- मऊ-गुरदरी
- बंभिया
- कुदकपुर
- उपर्युक्त में कोई नहीं

37. बृहस्पति कुण्ड के निकटतम गाँव है– * 1 point

Mark only one oval.

- मऊ-गुरदरी
- बंभिया
- कुदकपुर
- उपर्युक्त में कोई नहीं

परिशिष्ट—VII (जारी)

38. शबरी जलप्रपात के निकटतम गाँव है– * 1 point

Mark only one oval.

- मऊ-गुरदरी
- बंभिया
- कुदकपुर
- उपर्युक्त में कोई नहीं

39. मकर संक्रान्ति के दिन मेला लगता है– * 1 point

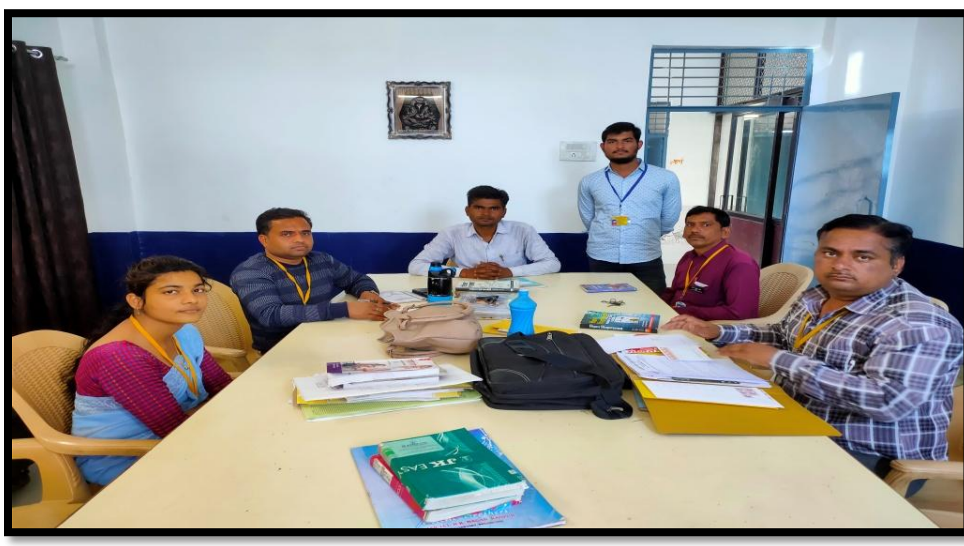
Mark only one oval.

- शबरी जलप्रपात में
- राघव जलप्रपात में
- बृहस्पति कुण्ड में
- उपर्युक्त में कोई नहीं

परिशिष्ट—VIII परीक्षण प्रशासन चित्रावली



विभागाध्यक्ष, शिक्षक-शिक्षा विभाग, राजा देवी डिग्री कॉलेज (बाँदा)



शिक्षकगण, राजा देवी डिग्री कॉलेज (बाँदा)

परिशिष्ट—VIII (जारी)



गूगल फॉर्म द्वारा प्रश्नावली भरना समझाते हुए शोधार्थी



प्रश्नावली भरते हुए विद्यार्थी

परिशिष्ट—IX जागरूकता प्रश्नावली उत्तरमाला

प्रश्न संख्या	प्रश्न	उत्तर
1.	राघव जलप्रपात किस जिले में स्थित है?	रीवा
2.	शबरी जलप्रपात किस जिले में स्थित है?	सतना
3.	बृहस्पति कुण्ड किस जिले में स्थित है?	पन्ना
4.	बृहस्पति कुण्ड का जलस्रोत कौन सी नदी है?	बाघिन
5.	शबरी जलप्रपात का जलस्रोत कौन सी नदी है?	त्रिवेणी
6.	राघव जलप्रपात का जलस्रोत कौन सी नदी है?	उखमय
7.	बाघिन नदी का उद्गम कहाँ से होता है?	पन्ना की पहाड़ियों से
8.	त्रिवेणी नदी का उद्गम कहाँ से होता है?	बरम कुण्ड से
9.	उखमय नदी का उद्गम कहाँ से होता है?	मारकुण्डी से
10.	बृहस्पति कुण्ड की ऊँचाई कितनी है?	400 फीट
11.	राघव जलप्रपात की ऊँचाई कितनी है?	84 फीट
12.	शबरी जलप्रपात में झरना कुण्ड की ऊँचाई कितनी है?	80 फीट
13.	शबरी जलप्रपात में निचले कुण्ड की ऊँचाई कितनी है?	240 फीट

परिशिष्ट—IX (जारी)

प्रश्न संख्या	प्रश्न	उत्तर
14.	निम्न जलप्रपात को पहचानिए—	बृहस्पति कुण्ड
15.	निम्न जलप्रपात को पहचानिए—	शबरी जलप्रपात
16.	निम्न जलप्रपात को पहचानिए—	राघव जलप्रपात
17.	बुन्देलखण्ड के जलप्रपातों को देखने का सबसे अच्छा समय है—	वर्षा ऋतु
18.	त्रिवेणी नदी किसकी सहायक नदी है?	मन्दाकिनी
19.	उखमय नदी किसकी सहायक नदी है?	टमस
20.	बाघिन नदी किसकी सहायक नदी है?	यमुना
21.	हीरे की खदानें किस प्रपात में पायी जाती हैं?	बृहस्पति कुण्ड में
22.	किस प्रपात में सात कुण्ड हैं?	बृहस्पति कुण्ड में
23.	बाँदा शहर के निकटतम जलप्रपात है—	बृहस्पति कुण्ड
24.	चित्रकूट जनपद के मुख्यालय कर्वी से निकटतम जलप्रपात है—	शबरी जलप्रपात
25.	मानिकपुर से निकटतम जलप्रपात है—	राघव जलप्रपात
26.	राघव जलप्रपात के निकटतम रेलवे स्टेशन है—	पनहाई
27.	शबरी जलप्रपात के निकटतम रेलवे स्टेशन है—	टिकरिया
28.	बृहस्पति कुण्ड के निकटतम रेलवे स्टेशन है—	मझगवां
29.	किस जलप्रपात को पन्ना जलप्रपात के नाम से जाना जाता है?	राघव जलप्रपात
30.	राघव जलप्रपात के निकटतम गाँव है—	मऊ-गुरदरी

परिशिष्ट—IX (जारी)

प्रश्न संख्या	प्रश्न	उत्तर
31.	बृहस्पति कुण्ड के निकटतम गाँव है—	कुदकपुर
32.	शबरी जलप्रपात के निकटतम गाँव है—	बंभिया
33.	मकर संक्रान्ति के दिन मेला लगता है—	बृहस्पति कुण्ड में

परिशिष्ट—X E-brochure

शबरी जलप्रपात

चित्रकूट, सतना



बुन्देलखण्ड के सतना जिले में बंभिया गाँव के पास ‘शबरी जलप्रपात’ नाम का एक शानदार जलप्रपात है। यह जलप्रपात लगभग 240 फीट ऊँचा है। यह जलप्रपात इतना खूबसूरत है कि वर्षा ऋतु में हजारों पर्यटक इसकी खूबसूरती को देखने के लिए आते हैं। शबरी जलप्रपात के आस-पास का क्षेत्र विन्ध्य पर्वत श्रेणी का हिस्सा है। यह स्थल पौराणिक तथा भौगोलिक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डॉ० जगन्नाथ सिंह, तत्कालीन जिलाधिकारी चित्रकूट, ने शोध करने के बाद 31 जुलाई 1998 को इस जगह का नाम रखा था।

ऐतिहासिक कथानक—



हिन्दू धर्म ग्रन्थ रामायण के अनुसार अयोध्या के राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं— कौशल्या, कैकेई तथा सुमित्रा। राजा दशरथ अपने और कौशल्या के ज्येष्ठ पुत्र राम



को अपने बाद सिंहासन पर बैठाना चाहते थे किन्तु रानी कैकेई ने मन्थरा के बहकावे में आकर राजा दशरथ से राम के लिए 14 वर्ष का वनवास तथा अपने पुत्र भरत के लिए राज-सिंहासन माँगा। राजा



दशरथ वचनबद्ध थे, अत: उन्हें रानी कैकेई की यह बात माननी पड़ी। राम ने भी पिता के वचन का मान रखते हुए 14 वर्ष का वनवास स्वीकार किया और वनवास के लिए चले गये। अपने वनवास के दिनों में भ्रमण करते हुए भगवान राम ने चित्रकूट आकर शबरी मैया से भेंट की। पौराणिक कथाओं के अनुसार यह कहा जाता है कि भगवान राम ने शबरी मैया से फल खाने के बाद इस स्थान पर स्नान किया था और इस स्थान का नाम शबरी मैया के नाम पर शबरी जलप्रपात पड़ा।



प्रवेश द्वार—

इस जलप्रपात का प्रवेश द्वार उत्तर दिशा की ओर है जिस पर गेट लगा हुआ है। इसी द्वार से ही पर्यटक परिसर में प्रवेश करते हैं।

बाउन्ड्री वॉल—

प्रपात के उत्तर दिशा की ओर काफी लम्बी बाउन्ड्री वॉल बनायी गयी है, जिससे प्रपात का गेट बन्द होने पर कोई अन्दर न जा सके तथा कोई जंगली जानवर भी इस ओर न आ सके।

शबरी कुण्ड—



शबरी जलप्रपात स्थल में दो प्रपात बनते हैं। यहाँ ऊपरी प्रपात को शबरी कुण्ड के नाम से जाना जाता है। इस प्रपात के चारों ओर पर्यटकों की सुरक्षा हेतु रेलिंग लगायी गयी है। इस प्रपात की ऊँचाई 80 फीट है। वर्षा ऋतु में यहाँ की सुन्दरता पर्यटकों को मन्त्रमुग्ध कर देती है।



निचला कुण्ड—

शबरी जलप्रपात के मुख्य द्वार से दायीं ओर थोड़ी दूर चलने पर नीचे की ओर एक रास्ता जाता है। यह रास्ता निचले कुण्ड तक जाता है। निचले कुण्ड की ऊँचाई 240 फीट है। यहाँ पहुँचने का मार्ग अत्यन्त ही दुर्गम है तथा बरसात के दिनों में तो नदी में पानी अधिक होने के कारण यह मार्ग पूरी तरह से बन्द हो जाता है जिससे निचले कुण्ड तक पहुँचना सम्भव नहीं हो पाता।



राम-सीता शयन शिला—

लोगों की मान्यता के अनुसार निचले कुण्ड के आस-पास पहाड़ों में ही एक गुफा है। इस गुफा में भगवान राम तथा देवी सीता ने अपने वनवास के दिनों में रात्रि विश्राम किया था। उन्होंने जिस शिला पर विश्राम किया था, उस पर उनके विश्राम के साक्ष्य मौजूद हैं किन्तु इस शिला तक पहुँचने के मार्ग के विषय में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है। मात्र कुछ क्षेत्रीय लोग ही इस शिला तक पहुँचने का मार्ग भली-भांति जानते हैं।



शिव मूर्ति—

शबरी जलप्रपात में शबरी कुण्ड के प्रवेश द्वार के बगल में रेलिंग के अन्दर भगवान शिव की मूर्ति रखी हुई है। यहाँ आने वाले पर्यटक जलप्रपात में भ्रमण करने के साथ भगवान शिव की पूजा अर्चना करते हैं।

वट वृक्ष—



यहाँ भगवान शिव की मूर्ति के बगल में ही एक प्राचीन वट वृक्ष है। इस वट वृक्ष की छाँव में ही भगवान शिव की मूर्ति स्थापित की गयी है। श्रद्धालुगढ़ भगवान शिव की पूजा अर्चना करने के पश्चात वट वृक्ष की शीतल छाँव में विश्राम करते हैं तथा अपने मन को शान्त करते हैं।



पौधशाला—

शबरी जलप्रपात परिसर से लगभग 50 मीटर पहले राजकीय पौधशाला है। इस पौधशाला में विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे तथा पुष्पों की विभिन्न प्रजातियों को संग्रहित किया गया है। यहाँ आने वाले पर्यटक पौधशाला में जाकर विभिन्न औषधियों एवं पुष्पों के विषय में जानकारी इकट्ठा कर सकते हैं तथा अपनी इच्छानुसार पौधे ले जाकर अपने घरों पर भी लगा सकते हैं।

विशाल शिला समूह—



जलप्रपात में चारों ओर विशाल शिलाएँ हैं। यहाँ आने वाले पर्यटक इन शिलाओं पर चढ़कर सेल्फी लेना पसन्द करते हैं परन्तु यह एक जोखिम-पूर्ण कार्य है।

प्राचीन राम-सीता-लक्ष्मण मूर्तियाँ—

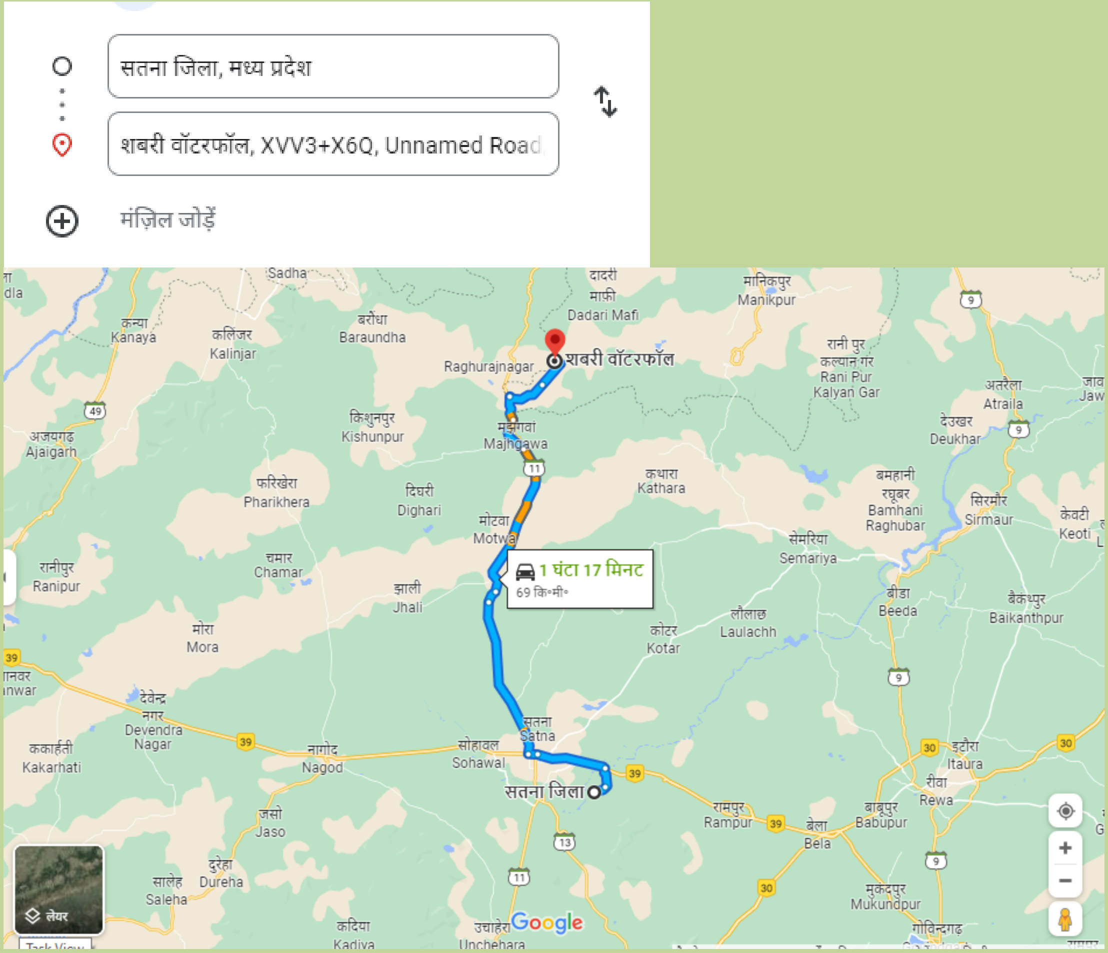


मुख्य सड़क से शबरी जलप्रपात के लिए जाने वाले मार्ग में एक चबूतरा बना हुआ है। इस चबूतरे में भगवान राम, देवी सीता तथा लक्ष्मण जी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। ये प्रतिमायें अत्यन्त सुन्दर एवं प्राचीन हैं। यहाँ आने वाले पर्यटक इन प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना करते हैं।

शबरी जलप्रपात

अक्षांश: 24°59'48" N **देशान्तर:** 80°51'15"E

शबरी जलप्रपात मध्य प्रदेश के सतना जिला मुख्यालय से 69 किलोमीटर की दूरी पर बंभिया गाँव के समीप स्थित है। यह चित्रकूट रेलवे स्टेशन से लगभग 47.6 किलोमीटर, सतना स्टेशन से 70 किलोमीटर तथा टिकरिया स्टेशन से 1 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है।



राघव जलप्रपात

मऊ-गुरदरी



बुन्देलखण्ड क्षेत्र में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश की सीमा पर राघव जलप्रपात नाम का एक शानदार जलप्रपात स्थित है। यह जलप्रपात चित्रकूट एवं रीवा जिलों की सीमा पर मऊ-गुरदरी गाँव के पास स्थित है। इस जलप्रपात को यहाँ के स्थानीय लोग पन्ना जलप्रपात के नाम से जानते हैं। इस जलप्रपात की ऊँचाई लगभग 84 फीट है। इस स्थल का प्राकृतिक एवं भौगोलिक रूप से अत्यन्त महत्व है।



हनुमान मन्दिर

राघव जलप्रपात के सामने सड़क के दूसरी तरफ हनुमान जी का मन्दिर है। यहाँ आने वाले पर्यटक मन्दिर में पूजा-अर्चना करते हैं तथा भगवान के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हैं।

पतली जलधारा



राघव जलप्रपात में सिर्फ बरसात (जुलाई-जनवरी) में ही पानी रहता है। बरसात के मौसम में यहाँ दो जलधाराएँ बनती हैं। मुख्य जलधारा के अतिरिक्त यहाँ एक और जलधारा गिरती है जिसका दृश्य बहुत ही आकर्षक लगता है। इस जलधारा में पानी कम होने पर इसके नीचे खड़े होकर लोग स्नान भी करते हैं।



मुख्य चौड़ी जलधारा

यह इस प्रपात का मुख्य आकर्षण है। बरसात के दिनों में पानी पूरे वेग से गहरी खाई में गिरता है। पानी के गिरने से उत्पन्न आवाज तथा फुहारें यहाँ आने वाले पर्यटकों को आनन्द की अनुभूति कराती हैं।

विशाल काईयुक्त चट्टानें



इस प्रपात के आस-पास तथा नीचे उतरने के मार्ग में अनेक चट्टानें पड़ती हैं। इन चट्टानों पर अत्यधिक फिसलन होती है। अतः यहाँ नीचे उतरते समय बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है ताकि कोई अप्रिय घटना न हो।



प्राकृतिक जलस्रोत

हनुमान जी के मन्दिर के बगल में ही पुजारी जी का आवास है। उनके आवास के समीप ही एक प्राकृतिक जलस्रोत है। लोगों का कहना है कि इस स्रोत से पूरे वर्ष पानी निकलता रहता है। यह प्राकृतिक जलस्रोत अपने आप में बहुत ही अद्भुत है।

उपवन



पुजारी जी के आवास के बगल में ही एक उपवन है। इस उपवन में विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे तथा पुष्प लगे हुए हैं जो देखने में बहुत ही आकर्षक एवं सुन्दर लगते हैं।

शिला समूह



जलप्रपात के आसपास शिलाओं का विशाल समूह है। इन शिलाओं के ऊपर चढ़कर यहाँ आने वाले पर्यटक सेल्फी लेते हैं किन्तु चट्टानों पर सेल्फी लेना अत्यन्त जोखिम भरा कार्य है। क्योंकि यहाँ पर रेलिंग नहीं लगायी गयी हैं जिस कारण से पैर फिसलने पर खाई में गिरने का खतरा रहता है।

प्राकृतिक गुफा



राघव जलप्रपात में मुख्य जलधारा के ठीक पीछे एक प्राकृतिक गुफा है। यह गुफा इतनी बड़ी है कि यहाँ 10-15 लोग आराम से बैठ सकते हैं किन्तु बरसात के दिनों में यह गुफा दिखायी नहीं देती है तथा यहाँ पहुँचना अत्यन्त दुर्गम हो जाता है।

रपटा

मानिकपुर से राघव जलप्रपात तक जाने वाले मार्ग में छोटे-बड़े कई रपटे पड़ते हैं जो बरसात के दिनों में उफना जाते हैं। इस कारण उनका पानी ऊपर सड़क से होकर गुजरता है। इन रपटों से होकर राघव जलप्रपात तक पहुँचना पर्यटकों को बहुत ही रोमांचित करता है।



प्राकृतिक औषधियाँ एवं जीव-जन्तु

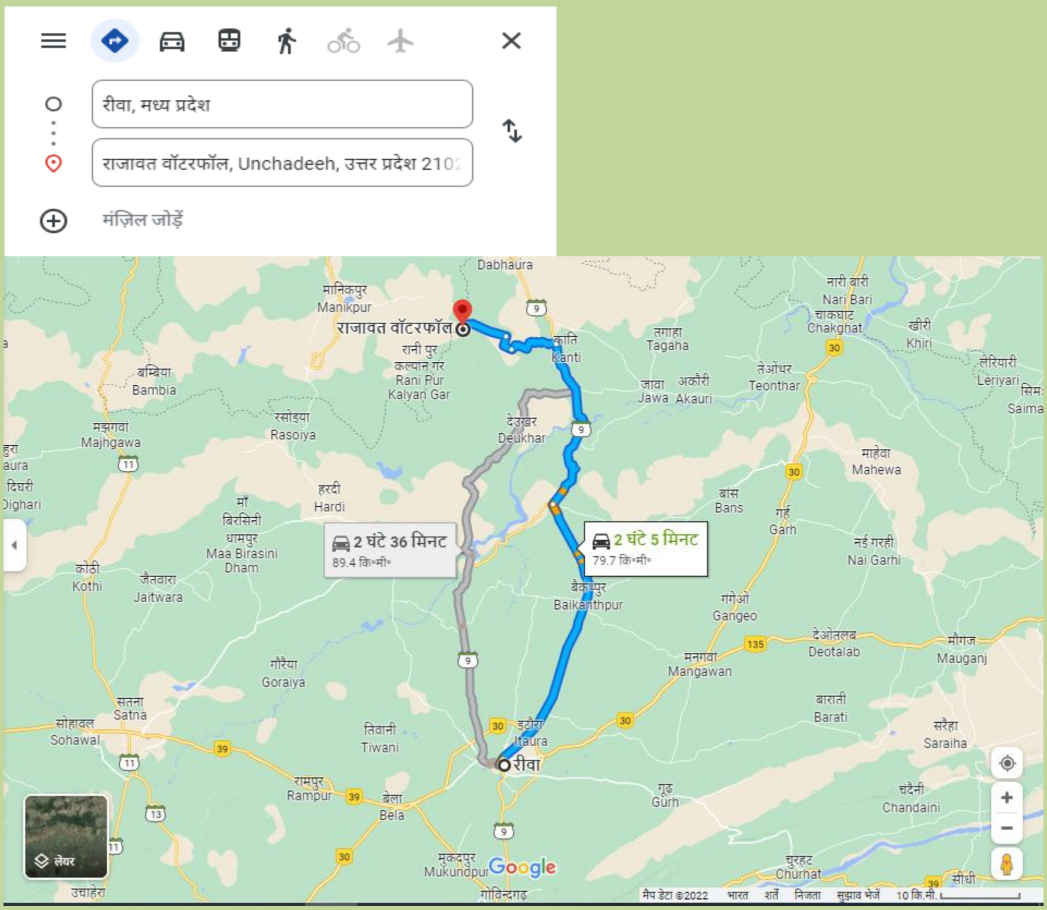


राघव जलप्रपात बिल्कुल जंगल से सटा हुआ है। यह एक निर्जन स्थान है। इस कारण यहाँ पर अक्सर जंगली जीव जन्तु जैसे—शेर, भालू, चीता आदि को विचरण करते क्षेत्रीय लोगों द्वारा देखा गया है। जलप्रपात के आस-पास के जंगल में विभिन्न प्रकार के औषधीय वृक्ष भी हैं। यह औषधियाँ विभिन्न प्रकार के रोगों को दूर करने में सहायता करती हैं।

राघव जलप्रपात

अक्षांश: 25°02'14"N **देशान्तर:** 81°15'07"E

राघव जलप्रपात उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिला मुख्यालय से लगभग 57.4 किलोमीटर तथा मध्यप्रदेश के रीवा जिला मुख्यालय से लगभग 79.7 किलोमीटर की दूरी पर मऊ-गुरदरी गाँव के समीप स्थित है। यह जलप्रपात मानिकपुर से प्रयागराज रेल रूट पर पनहाई स्टेशन से 13 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है।



बृहस्पति कुण्ड
पन्ना



बुन्देलखण्ड के पन्ना जिले में पहाड़ी खेड़ा गाँव के पास बृहस्पति कुण्ड नाम का एक शानदार जलप्रपात है, जो लगभग 400 फीट ऊँचा और 200-300 फीट चौड़ा है। यह इतना खूबसूरत है कि इसे बुन्देलखण्ड का नियाग्रा जलप्रपात कहा जाता है। बृहस्पति कुण्ड के आस-पास का क्षेत्र विन्ध्य पर्वत श्रेणी का हिस्सा है। इस स्थल का पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्व है।

ऐतिहासिक कथानक

प्राचीन परम्परा में सबसे पुराणतम महर्षि भृगु, अङ्गिरा, मरीचि, पुलस्त्य, कृत, अत्रि, वशिष्ठ माने गए





हैं और ये ही ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। इस क्षेत्र के सृष्टिकालीन वैदिक ऋषियों में महर्षि अङ्गिरा प्रमुख हैं। शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि महर्षि अङ्गिरा की तपस्या और उपासना इतनी तीव्र थी कि इनका तेज और प्रभाव अग्नि की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गया। उस समय अग्निदेव भी जल में रहकर तपस्या कर रहे थे। जब उन्होंने देखा कि अङ्गिरा के तपोबल के सामने मेरी तपस्या और प्रतिष्ठा तुच्छ हो रही है, तो वह दु:खी होकर अङ्गिरा के पास गए और कहने लगे- "आप प्रथम अग्नि हैं, मैं आपके तेज की तुलना में अपेक्षाकृत न्यून होने से द्वितीय अग्नि हूँ। मेरा तेज आपके सामने फीका पड़ गया है। अब मुझे कोई अग्नि नहीं कहेगा। तब महर्षि अङ्गिरा ने सम्मानपूर्वक पुत्र रूप में अग्नि का वरण किया। तत्पश्चात वह अग्निदेव ही बृहस्पति के नाम से प्रसिद्ध हुए।



महर्षि अङ्गिरा का आश्रम मड़फा क्षेत्र में गुप्त गोदावरी के ऊपर तुङ्गाचल पर्वत के दक्षिणी भाग में सामसूत्र नामक अरण्य में था। इस आश्रम में वेदों का अध्यापन होता था, जिसके मुख्य अधिष्ठाता एवं शिक्षाचार्य महर्षि अङ्गिरा थे। वेदों के विद्वान होने के कारण उनके पुत्र बृहस्पति भी अपने पिता का सहयोग करते थे। वेदों के अध्यापन काल में एक बार सभी वेदाध्यायी,



अंत:वासियों एवं आचार्यों को इस विद्यापीठ में वेदों की ऋचाएँ विस्मृत हो गयीं। वेदों के लुप्त होने की स्थिति से हाहाकार मच गया। तब आचार्य बृहस्पति ने ओमकार मन्त्र का जाप कर स्मृति देवी को जागृत किया। इससे, जिसने जिस वेद का अध्ययन एवं अभ्यास किया था, वे सब उसे स्मरण हो आये।



महर्षि अङ्गिरा के ज्येष्ठ पुत्र बृहस्पति अपने वैदुष्य के कारण 'वाचस्पति' की उपाधि से विभूषित होकर देवताओं के आचार्य एवं गुरु पद पर प्रतिष्ठित हुए थे। वे अपनी सारस्वत साधना के बल पर सात दिनों में एक दिन गुरुवार के स्वामी बने और नवग्रहों के मध्य प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया। यह सम्पूर्ण ग्रहों में सर्वश्रेष्ठ शुभप्रद माने जाते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिस जातक के जन्मांक के केन्द्र में बृहस्पति हो, उसका अन्य कोई भी ग्रह कुछ नहीं बिगाड़ सकता। बृहस्पति ने भी अपने पिता के आश्रम के समीप बालुवाहिनी के किनारे नैसर्गिक सुषमा सम्पन्न गहवर में तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न किया था। आचार्य बृहस्पति की यह तपस्थली वर्तमान में 'बृहस्पति कुण्ड' के नाम से विख्यात है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान राम ने भी अपने 14 वर्ष के वनवास के दौरान इस स्थान का भ्रमण किया था।



प्राचीन बृहस्पति आश्रम



बृहस्पति कुण्ड आश्रम परिसर को छोटी चहारदीवारी द्वारा घेरा गया है तथा मध्य में प्रवेश हेतु लोहे का द्वार है। प्रवेश द्वार से अन्दर जाने पर बायीं ओर एक पुराना खपरैल की छत का बना हुआ भवन स्थित है, जिसे प्राचीन बृहस्पति आश्रम के रूप में मान्यता है और आश्रम के बगल में नीम का वृक्ष है जिसके चारों और पक्का चबूतरा बना हुआ है।



छोटा मन्दिर

नीम के वृक्ष के बायीं ओर बाबाजी की कुटिया है। कुटिया से लगा हुआ एक छोटा मन्दिर है। इसमें गणेश जी और हनुमान जी की प्रतिमा विराजमान है। मन्दिर के सामने नन्दी की मूर्ति स्थापित है तथा मन्दिर के बगल में तुलसी चौरा है।

राम और सीता मन्दिर



छोटे मन्दिर के पीछे भगवान राम और सीता का मन्दिर है जो इस स्थान का मुख्य मन्दिर है।



हनुमान जी मन्दिर

मुख्य मन्दिर के सामने ही थोड़ी दूर पर बजरंगबली का एक और मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर के पास ही एक पीपल का वृक्ष है जिसके चारों तरफ पक्का चबूतरा बना हुआ है।

भगवान राम पद चिह्न



बजरंगबली मन्दिर के ठीक सामने भगवान राम के चरण चिह्न एक चबूतरे पर उत्कीर्ण हैं। भगवान राम का वनवास काल के समय विभिन्न ऋषियों से मिलने के लिए इस आश्रम में आगमन हुआ था। भ्रमण के समय उन्होंने जिस स्थान पर अपनी चरण पादुका उतारी थी, उसी स्थान पर यह चबूतरा बना है।

बृहस्पति कुण्ड प्रवेश द्वार



चरण चिन्ह चबूतरे के बगल से ही कुण्ड में नीचे जाने के लिए प्रवेश द्वार है। इस द्वार से प्रवेश करने पर कुण्ड में नीचे उतरने के लिए पत्थरों को तराशकर सीढियाँ बनायी गयी हैं। इस प्रवेश द्वार से प्रवेश कर दो या तीन कदम आगे बढ़ने पर सीढियाँ दायीं ओर घूम जाती हैं। इन सीढ़ियों से थोड़ा सा नीचे उतरने पर एक कठिन संकरा रास्ता मिलता है।

गुफा



संकरे रास्ते पर थोड़ा आगे बढ़ने पर एक गुफा मिलती है। यह संत जी का निवास स्थान है। गुफा का द्वार आकर्षक एवं अलंकृत है। इसमें अनेक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। यह मूर्तियाँ अजन्ता के समकालीन मानी जाती हैं। इस गुफा के अन्दर एक बड़ा तथा एक छोटा शिवलिंग है जिसकी पूजा अर्चना की जाती है। इसके अतिरिक्त गुफा में नन्दी, बृहस्पति, धनुर्धारी राम, सीता व हनुमान जी की खण्डित मूर्तियाँ हैं।



हनुमान कुण्ड

गुफा के अन्दर ही हनुमान कुण्ड है। यह पानी का प्राकृतिक स्रोत है। यहाँ पानी हमेशा उपलब्ध रहता है। यहाँ से जितना पानी निकाला जाता है, उतना पानी भरता जाता है।

पार्वती कुण्ड



संकरे रास्ते से आगे बढ़ने पर पार्वती कुण्ड मिलता है। यह कुण्ड पानी का प्राकृतिक स्रोत माना जाता है। बताया जाता है कि प्राचीन समय में इस कुण्ड का पानी सूखता नहीं था। इसमें से जितना पानी निकाला जाता था, उतना पानी उसमें अपने आप ही भर जाता था लेकिन अब यह सूख चुका है।



राम कुण्ड

पार्वती कुण्ड से जैसे ही थोड़ा सा आगे बढ़ते हैं तो राम कुण्ड पड़ता है। राम कुण्ड से थोड़ा सा आगे बढ़ने पर बायीं ओर नीचे जाने के लिए सीढियाँ हैं।

सूखा कुण्ड



नीचे उतरने पर बायीं तरफ सूखा कुण्ड पड़ता है। कुण्ड में कभी भी पानी दिखता नहीं है। चाहे वह बरसात का मौसम हो या अन्य कोई भी मौसम। पहले यहाँ राक्षस निवास करते थे। देवगुरु बृहस्पति ने यहाँ यज्ञ किया तथा आश्रम की स्थापना की। भगवान राम ने वनवास के समय यहाँ आकर इस स्थल को राक्षसों से मुक्ति प्रदान की। ऐसी जनश्रुति है कि यहाँ से चित्रकूट, बद्रीनाथ तथा श्रीलंका जाने के लिए गुप्त मार्ग भी है।

बृहस्पति कुण्ड



नीचे उतरने पर सीढ़ी के दाहिनी ओर उबड़-खाबड़ रास्ते पर थोड़ा चलने पर बृहस्पति कुण्ड मिलता है। इसके पानी का रंग हमेशा हरा होता है।



सूरज कुण्ड



इस क्षेत्र का सबसे अनोखा एवं आकर्षक कुण्ड सूरज कुण्ड है। सूरज कुण्ड अपने आप में एक अलग प्रकार की अद्भुत सुन्दरता समेटे हुए है। इस कुण्ड का आकर्षण इतना अधिक है कि व्यक्ति यदि एक बार भी इसे देख ले तो उसका हृदय प्रसन्नता व आनन्द से आच्छादित हो उठेगा। इस कुण्ड की सुन्दरता बरसात के मौसम में देखते बनती है। बरसात के मौसम में ऊँचाई से गिरते हुए पानी की गर्जना तथा उड़ती धुआँमयी एवं पानी की बौछारें इसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा देती हैं। इस कुण्ड की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका पानी कभी सूखता नहीं है।



पत्तालिया कुण्ड



सूरज कुण्ड से पानी के प्रवाह की दिशा में लगभग एक किलोमीटर चलने पर पत्तालिया कुण्ड मिलता है। इसकी गहराई देखकर अत्यन्त विस्मय होता है। क्योंकि धरातल पर जितना नीचे सूरज कुण्ड है उतना और नीचे सूरज कुण्ड के धरातल से पत्तालिया कुण्ड स्थित है। अधिक गहराई में होने के कारण ही इसका नाम पत्तालिया कुण्ड है। यहाँ तक पहुँचना अत्यन्त रोमाञ्चकारी कार्य है।

हीरा खदान



सूरज कुण्ड तथा पत्तालिया कुण्ड के आस-पास के क्षेत्र में तलहटी पर स्थानीय व्यक्तियों द्वारा हीरा उत्खनन का कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता है। इसके लिए सर्वप्रथम एक स्थान से काफी गहराई तक मिट्टी खोदकर निकाली जाती है फिर इसे जालीनुमा बर्तन में रखकर पहले से बने किसी गड्ढे में, जिसमें पानी भरा होता है, खूब हिलाया जाता है ताकि उसमें से मिट्टी गीली होकर जाली के माध्यम से बाहर निकल जाए और हीरे एवं कंकड़ अलग हो जाएँ। इस हीरे और कंकड़ के ढेर को जमीन पर फैलाकर सुखाया जाता है तथा इसके सूख जाने पर एक-एक कंकड़ को हटाकर हीरा ढूँढने का कार्य किया जाता है। यह स्थानीय लोगों की आजीविका का मुख्य साधन है।

प्राचीन शैल चित्रकला

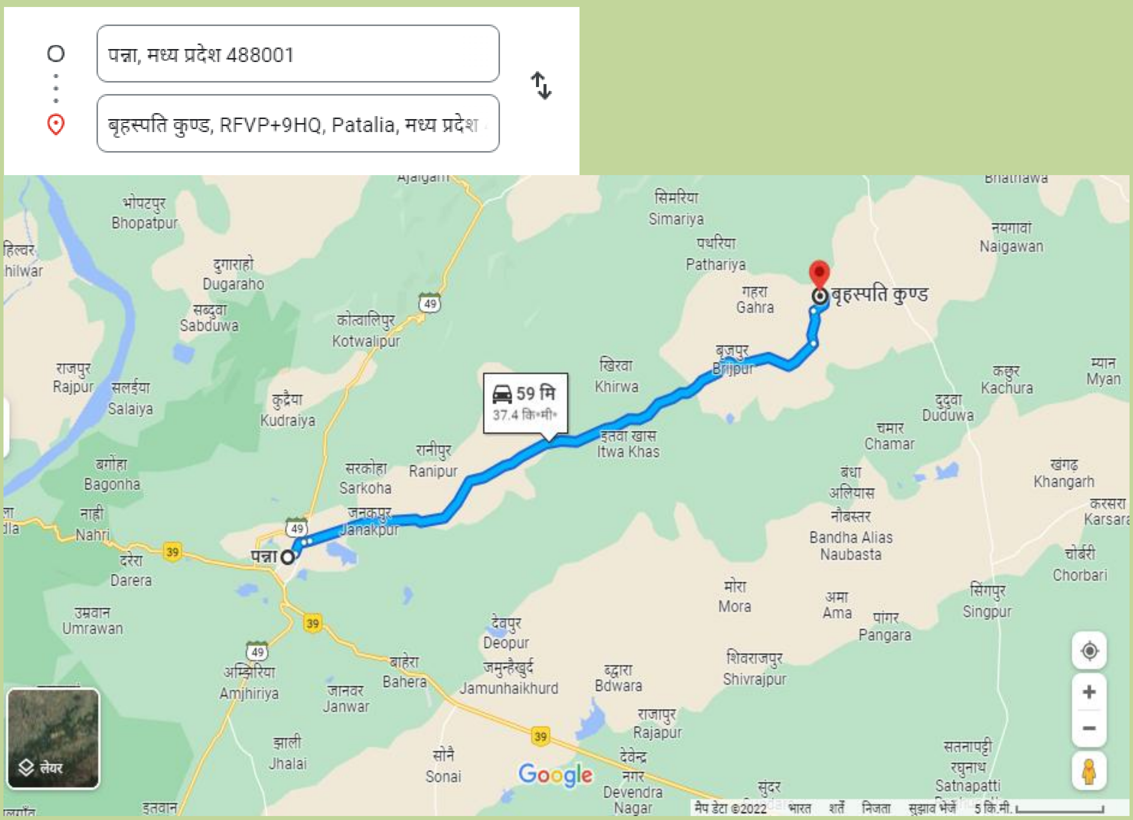


यहाँ आस-पास प्राचीन शैल चित्रकला के साक्ष्य मिले हैं जो शिकार और जनजातीय सभा जैसी मानवीय गतिविधियों को दर्शाते हैं। यह पूर्व ऐतिहासिक काल के दौरान जनजातियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले शिकार उपकरण के रूप में धनुष और तीर के उपयोग को भी दर्शाता है। प्राचीन मानव सभ्यता के पर्याप्त प्रमाण हैं, जो इस खूबसूरत घाटी के आसपास विकसित थीं।

बृहस्पति कुण्ड

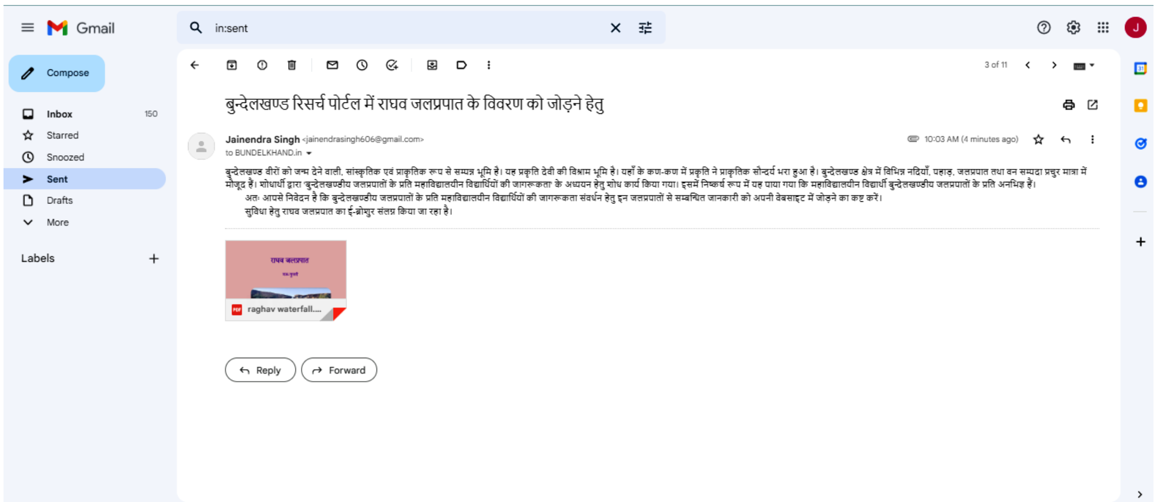
अक्षांश: 24°84'38"N **देशान्तर:** 80°48'63"E

बृहस्पति कुण्ड आश्रम मध्य प्रदेश के पन्ना जिला मुख्यालय से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी खेड़ा गाँव के समीप स्थित है। यह सतना रेलवे स्टेशन से लगभग 70 किलोमीटर कालिंजर से 30 किलोमीटर तथा अजयगढ़ से 43 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है।

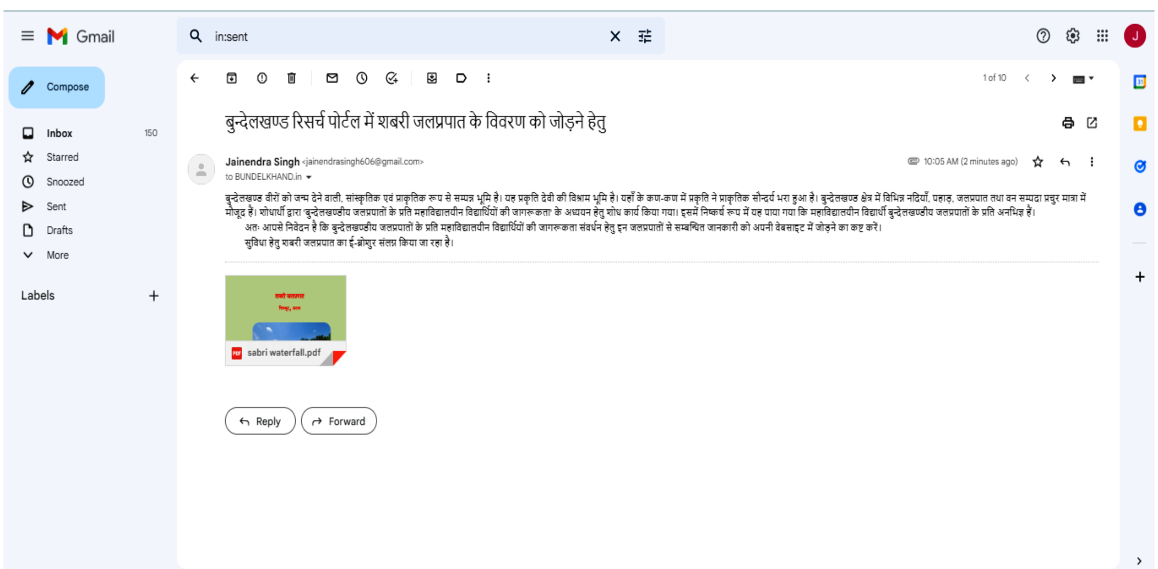


परिशिष्ट—XI

शोधार्थी द्वारा इण्टरनेट पर बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों से सम्बन्धित प्रकाशित/अपलोड किये गये वेबपृष्ठ

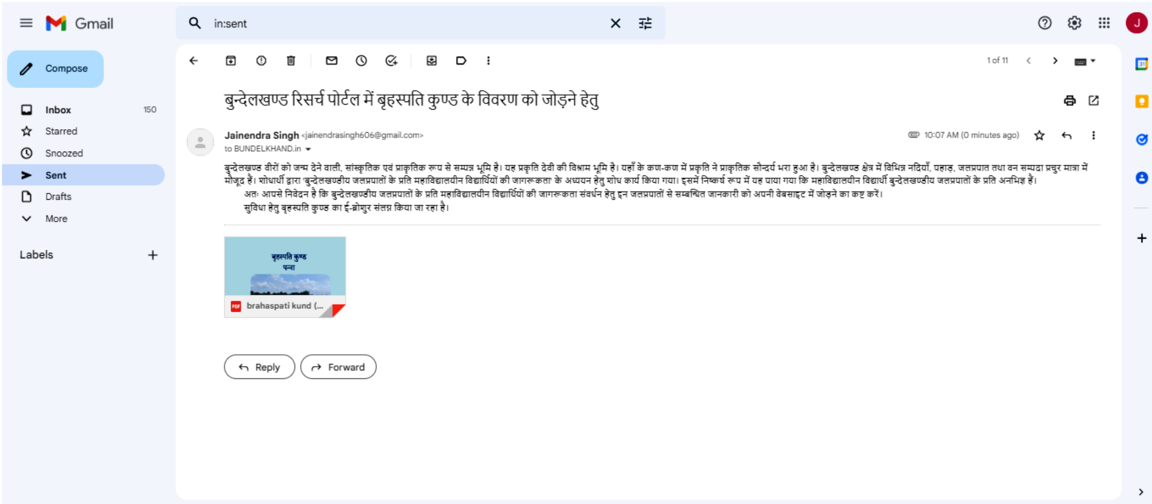


बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में राघव जलप्रपात के विवरण को जोड़ने हेतु



बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में शबरी जलप्रपात के विवरण को जोड़ने हेतु

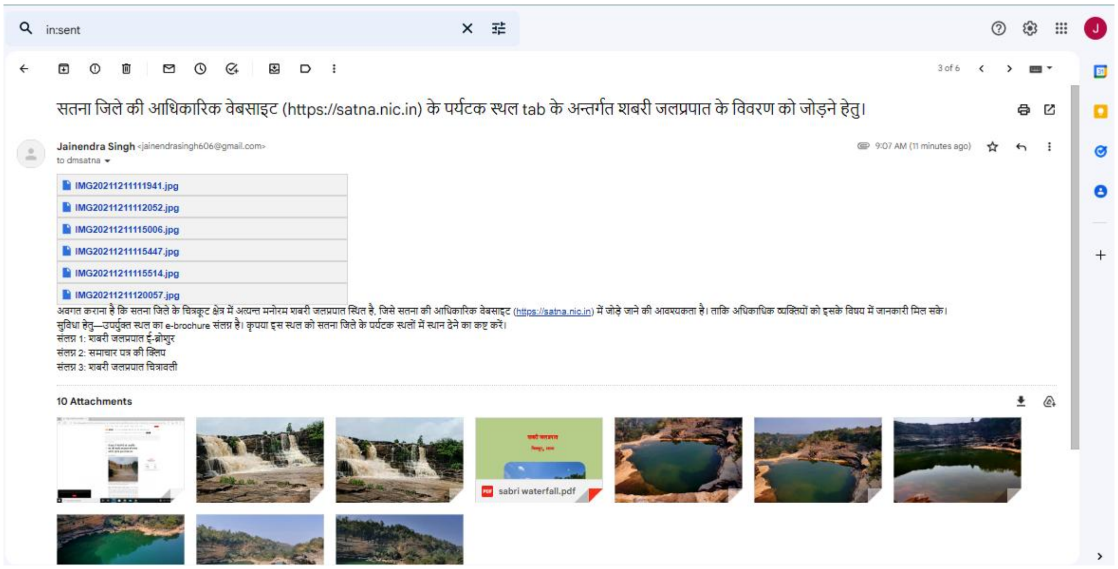
परिशिष्ट—XI (जारी)



बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल में बृहस्पति कुण्ड के विवरण को जोड़ने हेतु

परिशिष्ट—XII

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति जागरूकता संवर्धन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रेषित ई-मेल

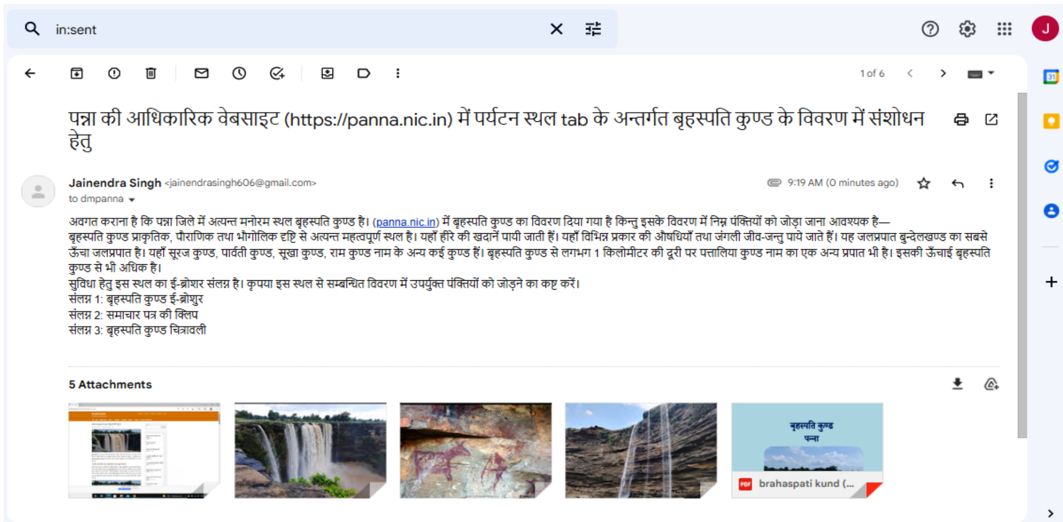


DM, Satna



DM, Rewa

परिशिष्ट—XII (जारी)



in:sent

1 of 6

पन्ना की आधिकारिक वेबसाइट (https://panna.nic.in) में पर्यटन स्थल tab के अन्तर्गत बृहस्पति कुण्ड के विवरण में संशोधन हेतु

Jainendra Singh <jainendrasingh606@gmail.com>
to dmpanna

9:19 AM (0 minutes ago)

अवगत कराना है कि पन्ना जिले में अत्यन्त मनोरम स्थल बृहस्पति कुण्ड है। (panna.nic.in) में बृहस्पति कुण्ड का विवरण दिया गया है किन्तु इसके विवरण में निम्न पंक्तियों को जोड़ा जाना आवश्यक है—
बृहस्पति कुण्ड प्राकृतिक, पौराणिक तथा भौगोलिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ हीरे की खदानें पायी जाती हैं। यहाँ विभिन्न प्रकार की औषधियाँ तथा जंगली जीव-जन्तु पाये जाते हैं। यह जलप्रपात बुन्देलखण्ड का सबसे ऊँचा जलप्रपात है। यहाँ सूरज कुण्ड, पार्वती कुण्ड, सूखा कुण्ड, राम कुण्ड नाम के अन्य कई कुण्ड हैं। बृहस्पति कुण्ड से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर पत्तालिया कुण्ड नाम का एक अन्य प्रपात भी है। इसकी ऊँचाई बृहस्पति कुण्ड से भी अधिक है।
सुविधा हेतु इस स्थल का ई-ब्रोशर संलग्न है। कृपया इस स्थल से सम्बन्धित विवरण में उपर्युक्त पंक्तियों को जोड़ने का कष्ट करें।
संलग्न 1: बृहस्पति कुण्ड ई-ब्रोशुर
संलग्न 2: समाचार पत्र की क्लिप
संलग्न 3: बृहस्पति कुण्ड चित्रावली

5 Attachments

बृहस्पति कुण्ड पन्ना

brahaspati kund (...

DM, Panna



in:sent

1 of 7

पाठ्यक्रम में भौगोलिक विरासतों को सम्मिलित कराने हेतु

Jainendra Singh <jainendrasingh606@gmail.com>
to desecedu

9:32 AM (0 minutes ago)

हमारे देश की अत्यन्त समृद्ध भौगोलिक विरासत है, जिसके साक्ष्य यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं, जिन्हें संजोने की आवश्यकता है। लगभग हर जिले में अनेक भौगोलिक विरासते हैं जो किसी भी पाठ्यक्रम का अंग नहीं हैं तथा जिन्हें मैकाले शिक्षा पद्धति/गुलामी की मानसिकता/पाश्चात्य प्रभाव के कारण विस्मृत कर दिया गया है। भावी पीढ़ी/विद्यार्थियों को उनसे परिचित कराना आवश्यक है। इस हेतु जिले या क्षेत्र विशेष की महत्वपूर्ण भौगोलिक महत्व की धरोहरों को लिपिबद्ध कर पूरक-पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर लागू किये जाने की आवश्यकता है। जैसे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में राघव जलप्रपात, शबरी जलप्रपात, बृहस्पति कुण्ड, कनकद्दर जलप्रपात तथा सागर जलप्रपात इत्यादि अनेक स्थल हैं। इसमें अधिकांश, जागरूकता या देखरेख के अभाव में विलुप्ति के कगार पर हैं। अतः इनके विषय में सचित्र विस्तृत जानकारी 'बुन्देलखण्डीय जलप्रपात' शीर्षक से संकलित कर बुन्देलखण्ड क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर पर भूगोल विषय की पूरक-पाठ्यपुस्तक के रूप में लागू किये जाने की आवश्यकता है। क्योंकि भूगोल विषय के अन्तर्गत यदि विद्यार्थी अपने क्षेत्र की ही भौगोलिक विरासतों से अनभिज्ञ रहें तो ऐसे भूगोल के अध्ययन का क्या लाभ?
सुविधा हेतु कुछ स्थलों के ई-ब्रोशुर संलग्न किये गये हैं।
संलग्न 1: राघव जलप्रपात ई-ब्रोशुर
संलग्न 2: शबरी जलप्रपात ई-ब्रोशुर
संलग्न 3: बृहस्पति कुण्ड ई-ब्रोशुर

3 Attachments

राघव जलप्रपात

raghav waterfall....

शबरी जलप्रपात

sabri waterfall.pdf

बृहस्पति कुण्ड पन्ना

brahaspati kund (...

Reply Forward

Director of Education, Uttar Pradesh board of Secondary Education

परिशिष्ट—XII (जारी)


in:sent

1 of 8

पाठ्यक्रम में भौगोलिक विरासतों को सम्मिलित कराने हेतु

Jainendra Singh <jainendrasingh606@gmail.com>
to chmn-cbse

9:36 AM (0 minutes ago)

हमारे देश की अत्यन्त समृद्ध भौगोलिक विरासत है, जिसके साक्ष्य यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं, जिन्हें संजोने की आवश्यकता है। लगभग हर जिले में अनेक भौगोलिक विरासते हैं जो किसी भी पाठ्यक्रम का अंग नहीं हैं तथा जिन्हें मैकाले शिक्षा पद्धति/गुलामी की मानसिकता/पाश्चात्य प्रभाव के कारण विस्मृत कर दिया गया है। भावी पीढ़ी/विद्यार्थियों को उनसे परिचित कराना आवश्यक है। इस हेतु जिले या क्षेत्र विशेष की महत्वपूर्ण भौगोलिक महत्व की धरोहरों को लिपिबद्ध कर पूरक-पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर लागू किये जाने की आवश्यकता है। जैसे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में राघव जलप्रपात, शबरी जलप्रपात, बृहस्पति कुण्ड, कनकद्दर जलप्रपात तथा सागर जलप्रपात इत्यादि अनेक स्थल हैं। इसमें अधिकांश, जागरूकता या देखरेख के अभाव में विलुप्ति के कगार पर हैं। अतः इनके विषय में सचित्र विस्तृत जानकारी 'बुन्देलखण्डीय जलप्रपात' शीर्षक से संकलित कर बुन्देलखण्ड क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर पर भूगोल विषय की पूरक-पाठ्यपुस्तक के रूप में लागू किये जाने की आवश्यकता है। क्योंकि भूगोल विषय के अन्तर्गत यदि विद्यार्थी अपने क्षेत्र की ही भौगोलिक विरासतों से अनभिज्ञ रहें तो ऐसे भूगोल के अध्ययन का क्या लाभ?

सुविधा हेतु कुछ स्थलों के ई-ब्रोशुर संलग्न किये गये हैं।
संलग्न 1: राघव जलप्रपात ई-ब्रोशुर
संलग्न 2: शबरी जलप्रपात ई-ब्रोशुर
संलग्न 3: बृहस्पति कुण्ड ई-ब्रोशुर

3 Attachments

brahaspati kund (...
raghav waterfall....
sabri waterfall.pdf

Reply
Forward

Chairman, CBSE


in:sent

1 of 13

विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भौगोलिक महत्व वाले स्थानों को सम्मिलित कराने हेतु

Jainendra Singh <jainendrasingh606@gmail.com>
to vc

11:25 AM (0 minutes ago)

हमारे देश की अत्यन्त समृद्ध भौगोलिक विरासत है, जिसके साक्ष्य यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं, जिन्हें संजोने की आवश्यकता है। लगभग हर जिले में अनेक भौगोलिक विरासते हैं जो किसी भी पाठ्यक्रम का अंग नहीं हैं तथा जिन्हें मैकाले शिक्षा पद्धति/गुलामी की मानसिकता/पाश्चात्य प्रभाव के कारण विस्मृत कर दिया गया है। भावी पीढ़ी/विद्यार्थियों को उनसे परिचित कराना आवश्यक है। इस हेतु जिले या क्षेत्र विशेष की महत्वपूर्ण भौगोलिक महत्व की धरोहरों को लिपिबद्ध कर पूरक-पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर लागू किये जाने की आवश्यकता है। जैसे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में राघव जलप्रपात, शबरी जलप्रपात, बृहस्पति कुण्ड, कनकद्दर जलप्रपात तथा सागर जलप्रपात इत्यादि अनेक स्थल हैं। इसमें अधिकांश, जागरूकता या देखरेख के अभाव में विलुप्ति के कगार पर हैं।
प्रार्थी द्वारा बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों के प्रति महाविद्यालय विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित लघु-शोध कार्य किया गया। इस अध्ययन में शोधार्थी द्वारा निष्कर्ष रूप में यह पाया गया की अधिकांश विद्यार्थी बुन्देलखण्डीय जलप्रपात के प्रति अनभिज्ञ हैं।
अतः इनके विषय में सचित्र विस्तृत जानकारी 'बुन्देलखण्डीय जलप्रपात' शीर्षक से संकलित कर बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्नातक स्तर पर भूगोल विषय की पूरक-पाठ्यपुस्तक के रूप में लागू किये जाने की आवश्यकता है। क्योंकि भूगोल विषय के अन्तर्गत यदि विद्यार्थी अपने क्षेत्र की ही भौगोलिक विरासतों से अनभिज्ञ रहें तो ऐसे भूगोल के अध्ययन का क्या लाभ?

सुविधा हेतु कुछ स्थलों के ई-ब्रोशुर संलग्न किये गये हैं।
संलग्न 1: राघव जलप्रपात ई-ब्रोशुर
संलग्न 2: शबरी जलप्रपात ई-ब्रोशुर
संलग्न 3: बृहस्पति कुण्ड ई-ब्रोशुर

3 Attachments

brahaspati kund (...
raghav waterfall....
sabri waterfall.pdf

Reply
Forward

VC, Bundelkhand University

परिशिष्ट—XIII जीवन वृत्त



नाम : जैनेन्द्र सिंह

पिता का नाम : श्री जितेन्द्र सिंह भदौरिया

माता का नाम : श्रीमती कल्पना सिंह

जन्म तिथि : 29/11/1996

लिंग : पुरुष

धर्म : हिन्दू

भाषा : हिन्दी, अंग्रेजी

रुचि : क्रिकेट खेलना एवं घूमना

मोबाइल नम्बर : 7570870570

ई-मेल : jainendrasingh606@gmail.com

स्थायी पता : कैलाशपुरी, जिला—बाँदा, उ०प्र०— 210001

शैक्षिक विवरण :

क्र० सं०	कक्षा	बोर्ड/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	वर्ष
1.	हाईस्कूल	उत्तर प्रदेश	हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कम्प्यूटर	प्रथम	2011
2.	इण्टरमीडिएट	उत्तर प्रदेश	भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, हिन्दी, अंग्रेजी	प्रथम	2013
3.	विज्ञान स्नातक	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय	भौतिक विज्ञान, गणित, रसायन विज्ञान	द्वितीय	2016
4.	शिक्षा स्नातक	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय	शिक्षा-शास्त्र	प्रथम	2019

परिशिष्ट—XIII

प्रकाशित पुस्तकें:

क्र०	शीर्षक	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठ सं०	ISBN No.	वेबसाइट
1.	हिन्दी शिक्षण की आधुनिक तकनीकी एवं चुनौतियाँ	2021	100	978-93-5473-080-1	https://archive.org/details/ilovepdf_merged_organized_202107/mode/2up

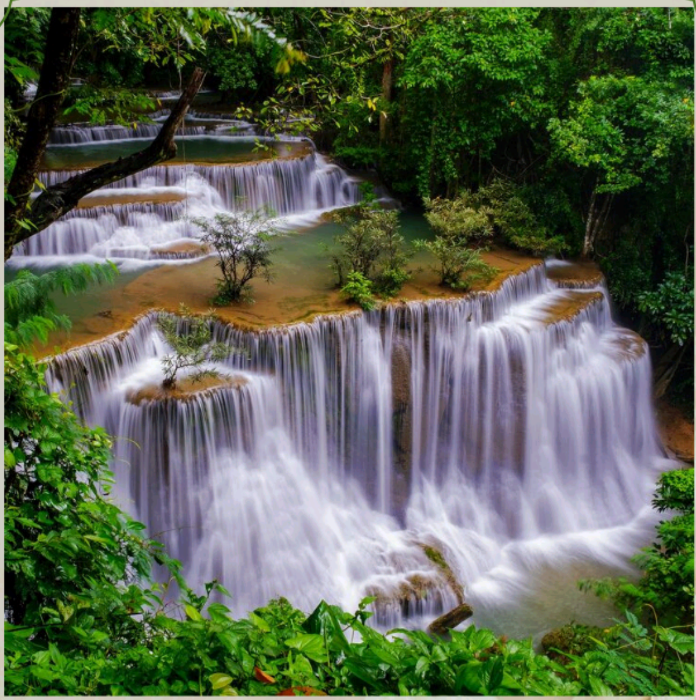
दिनांक—16/08/2022

स्थान—अतर्रा (बाँदा)



हस्ताक्षर

बुन्देलखण्डीय जलप्रपातों प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन



ISBN: 978-93-5717-037-6

9 789357 170376